



# मर्यादित

हरदर्शन सहगल

अनुराग प्रकाशन  
नई दिल्ली-110030

१) रघुव

मूल्य 50 00

प्रथम संस्करण 1990

प्रकाशक ज्ञाना प्रकाशन

1/107, ११ मन्गोरी, नए दिल्ली 110030

मुद्रक शांति प्रिंटर्स सिन्हा 32

प्रिय बेट मुकेश को

आई जब बेटो, (बिता)

तब एक दिन बेटा भी,

तेरे लिए, मेरे घर, मीर घर आयेगा

सिद्धराज—मथिलीशरण गुप्त



## आमुख

मेरे करीब इस वकन, जो कुछ है सीमित है कि-तु यही सीमित', विस्तृत विसंगतियाँ और विडम्बनाओं का अतिक्रमण करता हुआ असीमित होता चला जाता है और विस्फोटक स्थितियों का साक्षी बनता है। मिसाल के तौर पर, मेरे दफ्तर की क्या—मामूली रद्दोबदल के साथ—हिन्दुस्तान के हर दफ्तर की क्या लगेंगी। यह बात अपने देश की प्रत्येक घटना के परिप्रेक्ष्य में देखी जा सकती है।

अतः चारों ओर अत्यन्त भयावह नितान्त असंगत स्थितियाँ हैं, जिनका आज कोई भी स्पष्ट समाधान नज़र नहीं आता। सामाजिक, राजनैतिक तमाम मूल्य चरमरा रहे हैं।

परम मृत्यु को नम कर, इस तरह में हम तराशते चले जा रहे हैं कि वह हम अपनी-अपनी सुविधानुसार तक मगत दीखने लगे।

सुहावने सपने घुंध में खो रहे हैं, उन पर बेशुमार धूल की परतें जम गयी हैं। तब हर तरह के ऊलजलूल सपने, आज के जीवन-सत्यो से, किसी भी सूरत में दोषम नहीं रह गये।

नियति की विडम्बनाएँ, त्रासदियाँ, हर मोड़ पर हमारा पीछा कर रही हैं। हमारा मजाक उड़ा रही हैं। इनके स्वर में स्वर मिलाकर हँसने के सिवा हमारे हाथ कोई विकल्प नहीं है।

इन्हीं विद्रूप स्थितियों में से हमें रास्ता तलाश ८०

संभवतः आज व कुछ लेखकों की कहानियाँ, इस दिशा में हमारी सहायक सिद्ध हैं ।

लगातार खुरदरी जमीन पर चल चले कर फट, गडखड़ात पैरा की हरी दूब का कोई छोटा-सा टुकड़ा जरूर नज़र आना चाहिए । आयगा ।

प्रकाशन व अवसर भाई श्री यादवेन्द्र शर्मा चंद्र एवं श्रीकृष्ण (प्रवीण प्रकाशन) को धन्यवाद है जिन्होंने इसमें शीघ्र प्रकाशित करने में सहयोग दिया ।

—हरदशन सहगल

## क्रम

मर्यादित	11
शादी की मालगिरह	18
बिखराव	29
तपती किरणों का फदा	37
अपना अपना पक्ष	45
कब्जा	52
वही मोड़	66
टूटते हुए पख	72
भविष्याकात	80
प्रहार	88
लाल तरंगें	96
अंधेरा	105
जड़ें	112
चलता हुआ पुल	122
बीच तूफान	129
मम	137
नये मोड़	142





## मर्यादित

“खट-खट”

‘कौन ?’

“हैं हैं ”

“अच्छा-अच्छा आइए।”

“अकेले आय है आप ?” दरवाजा खोलत ही, सुनना ने पूछा। साडी का पल्ला नीचे की ओर झूल रहा था। उमरे हाथ से थोडा ऊपर किया ता वह पुन नीचे सरक गया।

“हां,” विनोद न सुनना की ओर देखा। फिर बड़े इत्मीनान स साइबिल को दीवार के सहारे अटकाया। ताला लगा कर, गली के दूसरे सिरे की आर देखने लगा।

“हैं हैं” सुनना न हँसने का यत्न किया, ‘मजाक बरत हैं भाई साहब। वहन जी पीछे रह गयी है। उही को देख रहे हैं ना ?” सुनना भी गली के दूसरे मोड़ तक नजर दौडाने लगी। आध एक मिनट तक जब कोई नजर नही आया, ता निराशा प्रकट करते हुए रहा, “आह, सचमुच ही नही जाइ। ताय क्या नही आप ?अकेले क्या आये ?”

‘तो नौट जाता हूँ।” विनाद हँसत हुए एक बरदम पीछे हट गया। इसके साथ ही उसकी अँगुनी मे साइबिल की धावी का छल्ला नूँ लगा।

‘अरे नही। आप तो बस छेडन से बाज नही आयेगे। ३”



उसकी साड़ी में सगराहट हुई है। वह साड़ी ममेदन लगी। जब विनोद कह रहा था सहल साहब बाहर गये हुए हैं तो उसके कदमों में हरकत होने लगी। बैठिए ना के उत्तर में अनायास बोल उठी "विटटू, नीचे उतर। देख अकल आये ह। पानी ला।"

विटटू छत पर पतंग उड़ा रहा था। ऊपर में कोई उत्तर नहीं आया। हा मक्ता है सुनना की आवाज छत तक भी न उड़ सकी हो।

"आप तो स्वामुद्राह तकल्लुफ में पड़ती ह। प्यास होगी तो अपना आप भरकर पी लूंगा। कौन से पराय घर में बठा हूँ।"

'ऐसा कान कहता ह' सुनना विनाद का एकटक देखती हुई उसकी ओर बढ़ गयी। उसके काले रंग जमा हुआ कोढ़ पदाथ अपनी अँगुलिया से खुरचने लगी, 'बहन जी आपका ध्यान नहीं रखती।'

'मामूती है। इतने से क्या परसनेलिटी में फक आ जाता है। विनोद ने सुनना का रोकने का प्रयास किया तो क्षणाश का दाना की अँगुलिया टकराड उलभी और शायद एक झनपनाहट-सी पैदा हुई।

हठात सुनना चिल्ला पड़ी, 'विटटू क्या बहर हो गये हो। सुनते नहीं। देखा अकल आये है।'

अब की, "आमा मम्मी" विटटू की आवाज गूज उठी।

सुनना थोड़ा पीछे हटती हुई सामने साफे पर जाकर बठ गयी।

क्या परेशान हाती ह। बच्च है। खलन दीजिए,' कहते-कहते विनाद ने मेज के नीचे पड़ी गेंद का हिट किया। गेंद दीवाना से टकराती हुई इधर-उधर फुदकने लगी।

सुनना हँसन लगी, 'आप भी बस भाई साहब बच्च हो है।'

बच्च तो सबको अच्छे लगत ह। है ना। जब हमारे बच्चे बड़े हो जायेंगे तब हम बच्चा नहीं रहने देंगे। क्या?"

अब की सुनना आर जार से धिनखिला पड़ी। इस प्रक्रिया में उसका पूरा घरहरा बदन लोच खा गया। गाल में गड्डा बन गया।

बहुत अच्छी लगती हूँ ऐंसे। आपकी बहन जी को बतलाऊंगा कि आप भी छोटी गुडिया बन जाती ह।' विनोद ने उसे भरपूर दृष्टि से दे सुनना सकुचा कर उठ पड़ी हुई।

बठी रहिए। मैं आपका मजा देने तो नहीं आया।'

सुनना एक कदम दायें बढ़कर रुक गई। इधर उधर देखा। अपना ही ड्राइंग रूम जैसे अजनबी बन गया। वहाँ के पेंटिञ्ज, फर्नीचर, पखा, सब मौन हाकर जम उसे घूरने लगे जहाँ वह अकेली पड गई थी बिना के सामने। उस विनोद के सामने, जिसे वह अपना सबसे अधिक हितपी मानती थी। देवर भाभी के प्तर पर, उसकी पत्नी के सामने उससे मजाक, छेड़छाड करती। उससे सटकर अपना कद नापती।

तभी सरसराता हुआ हवा का एक तेज झाका आया। जोर से खिडकी खुल गयी और फिर वैसे ही बन्द हो गयी। सुनना ने अपनी थोडी लम्बी ठुडडी कंधे से रगडी। उस लगा हवा के झोके के साथ ही कमरे का सारा सामान एक एक कर गायब हो गया है। वहाँ रह गयी है वह। और उसके सामने विनोद। वहाँ सिफ वह है सुनना या सिफ विनोद है।

इस गृहस्थमय वातावरण के प्रभाव से उबरने के लिए वह फिर स बिट्टू पर चलाने को थी कि तभी दरवाजा बज उठा।

'कौन?' वह किंचित घबराहट के आवेग से दरवाजे की ओर लपकी।

हम है मम्मी "

ओह प्रीति " दरवाजा खोलन के साथ उसके मुह से निकला।

प्रीति अपनी किसी सहेली के घर पढने गयी हुई थी। उसके हाथ म दो किताबें पेंसिल और एक कापी थी। उसने ड्राइंग रूम म झाका।

आ जाओ प्रीति, देखो अक्ल आय है।" सुनना ने कहा।

ओह अक्ल।" प्रीति न हाथ लहराते हुए कहा 'नमस्ते! अक्ले ही ? छोट चिकू का नहीं लाय ?"

उसकी आँखें दुख गही ह। इसीलिए तुम्हारी आटी भी नहीं आयी। इसी वान मे तुम्हारी मम्मी भी बुरा मान रही हैं। उसन प्रीति के सिर पर हाथ फेंग पनाद कमी चल रही है ?'

ठीक ही है अक्ल। जब तो दम राज म परीभाएँ शुरू हो जायेंगी।' उान दाहिबयुवन न्वर निकाला, किन्तु उस त्वर म प्रन्फुटित कामलता-दोना को ही मोहित कर गयी।

“बड़ी सयानी हो चली है हमारी विट्टिया। विनोद ने जमक गोला  
को थपथपाते हुए कहा।

“कुछ भी कहो, भाई साहब,” सुनना न प्रीति को अपनी ओर खींचने  
जोडा, ‘लडकियाँ फिर भी रिस्पासिविल होती हैं। कुछ-कुछ खरानी  
भी काम देख लेती हैं। एक वह हजरत विट्टू हैं कि कुछ मुनते ही नहीं।  
या मुनते हैं तो बस आया मम्मी’ कहकर अपनी ड्यूटी पूरी कर देते हैं।”  
आखिरी लफ्जा तक आते-आते उमकी जबान में तल्खी टपकने लगी।

“यह तो है ही,” विनोद न समथन में गदन हिनायो। फिर हँसने लगा,  
“इतना गुस्मा आपको शोभा नहीं देता। बात दरअसल यह है कि जब हम  
विट्टू जितने थे, बिलकुल ऐसे ही करते थे।”

प्रीति बड़ी उत्सुकता से उनके सवाद सुनती, अभी तक वही खड़ी  
थी और सुनना जाने कौसी नजरा से उसे घूरे जा रही थी।

प्रीति पूछ बैठी, “क्या बात है मम्मी, आज फिर विट्टू ने क्या  
किया?”

“तू यहाँ क्या खड़ी है! जाकर चाय बना। बड़ा की बातों में नहीं  
पडते।” अनजाने ही सुनना उसे डाँट बैठी।

प्रीति सक्पका कर बहा में खिसक गयी। कुछ-कुछ अपमानित-भी,  
कुछ-कुछ आशक्ति-सी भी वही कार्र गम्भीर बात तो नहीं?

‘क्या हा गया आपको,’ विनोद ने मुस्कराने की कोशिश की “अब  
घाय रहन दीजिए। चलूंगा। आपके कामा में बाघा बन के बैठ गया हूँ।”

‘घर के काम तो होते ही रहन है। आप कौन-सा रोज-रोज आते  
हैं।”

‘अकेला तो हर रोज आ सकता हूँ।” विनोद थोड़ा जार लगा कर  
हँस पडा।

‘तो कौन रोजता है, आपको।” सुनना ने इधर उधर देखा। फिर  
विनोद पर दृष्टि पडन ही साडी का पल्ला बनाउज में खाम लिया।

‘पहले-पहन तो लगा था आज मुझे बाहर से ही भगा देंगी, श्रीमती  
सुनना दबी जी।”

सुनना को लगा जैसे विनोद ने बहुत ही कोमल अक्षर लिख दिये हैं

अपनी जवान म, श्रीमती मुनैना नेवी जी। वह उठ कर चिच-बौड तक पहुँची। रगुलटर को घुमा कर पम था एक नम्बर तज कर लिया। फिर धीरे म काई फिल्मी घुन गुनगुनाती गुनगुनाती महमा जोर स बोन पडी प्रीति, क्या कर रही हा ? चाय जनी कि नही ?”

वाह ! इतनी जल्दी ! इतनी जल्दी तो कच्ची चाय बननी है। मैं तो बिना चाय ही भागन का तयार हूँ।

आप तो वास्तव म, हमारी दूमरी तरह की घर लन जाय हैं। हम नही बोलत। जाइए।’

ऐस ! आपको नाराज छाड कर ! यह कस हा सक्ता है !’ विनोद ने मटर टेबल पर पडी मुनैना की अँगुलिया के करीब अपना हाय रख दिया और मुस्कराने लगा।

हैं आप पूर शरारती ! सुनना भी मुस्करायी, “वस मैं नाट कर रही हूँ जापकी जावाज और हँसी की गूज आधी दबो पडी है। अब की वहन जी को जम्न साथ लकर आइएगा।

‘अगर तैयार न हो ता उसे उठा कर ले आऊँगा।’

ही ही ५५’ करती हुई सुनना जोर मे हँस पडी मजा आ जाता है, आपकी बातचीत न। तो ठीक है अकले ही आन रहिए।’ फिर दरवाज की जोर देखकर प्रीति पर झल्ला पडी, कहा मर गयी !

तभी प्रीति चाय की ट्रे लिये हुए दाखिल हुई। ट्रे का सेटर टवल पर रखकर जान लगी तो सुनना न उस राबा, बठ जा। थाडा नात्ता तू भी कर ले।”

प्रीति मम्मी के साथ सट कर आहिस्ता-आहिस्ता चाय पीन लगी। चपचाप।

हाँ क्या कह रह थ भाइ माहब ?” सुनना ने मीन ताडना चाहा। कुछ नही। मैं ता कुछ नही कह रहा था। विनोद छत की आर घूमत पन्ने पर नट्टि ठहरान का प्रयत्न करन लगा।

मुनैना अच्छा कहकर रह गयी।

प्रीति बने जाराम स भुजिया चबा रही थी। मुनैना न उसे निर्देश दिया ‘जात्रा बिटटू को बुला लाओ। वह भी थोडा खा पी ले।’

“मुचसे लिखा तो मम्मी, वह पतलें छोड़कर नह जायेगा।”

“अच्छा जाओ। तू भी थोडा खेल जा।” आवाज की धीरे धीरे खोज उभर आयी।

प्रीति चली गयी जैसे सारे शब्दों को विघेरती हुई मुकी खोज के विनाद फीकी मुस्कराहट स शब्दों का पकडन का यत्न करने के लिये विफल होने रह। अन्त में विनोद न दो शब्द दूट निकाल “अब चलूंगा” और उठ खग हुआ।

‘बठिए ना।’ सहज प्रतिक्रिया हुई।

“बहुत देर हो गयी है। आपकी गली में कार्डे विशिष्ट साहब रहत है ?”

‘हां। एकदम मिर पर मकान है। अब समझी आप आत तभी ही उधर देख रहे थे।’

‘जी हां। उनमें एक निहायत जरूरी काम आ फंसा है।’

‘मिल लीजिए। पर यह मत बनाइएगा कि हमारे यहाँ से होकर आ रहे है। भाई साहब आप नहीं जानत यहाँ के लोग खास तार से औरतें कितनी टुच्ची है।’

‘बेफिक्र रहिए। इस किस्म का टापिक न ही चले तो बहतर, वरना मुझे वात का धुमाना नही आता—हां। जो कोई काम हो नि सकाच बता दीजिए या जब भी जरूरत हो संदेशा भिजवा दीजिएगा। हा, आप कब आ रही ह हमारी तरफ ?’

‘सहल साहब आर्येग, मैं ता तभी निकल पाऊँगी। बहन जी का हमारा ध्यान है। आप खरियत जानने आ गय। हमारे लिए यही बहुत है।’ बाला की लट का ठीक करते हुए सुनना न दरवाजा खोल दिया ‘अच्छा तो ठीक।’

‘टाटा। विनोद न चारा आर देखते हुए साइकिल चला दी।

गनी का मोड आने से पहले उमने माइकिल का बहुत धीर कर दिया। चलती साइकिल से नम प्लेट पढी, राजाराम विशिष्ट’, फिर साइकिल का त्ज रफतर से आगे बढ़ा ले गया।



## शादी की मालगिरह

वे दाना घर से बहुत दूर आ निकल थे जैसे किमा खास चीज की तराश  
महा ।

यहा जाकर ब रुक गय ।

आमपान कही काई नही था । दूर दूर तक वीगनगी की छाया  
फनी पडी थी । कुछ आक, कर कीक की झाडिया या गिन चुन मूस सूसे  
मेजडे क पड थे । थोडे पानले पर जीप खटी थी ।

अचानक मदन न मुनक्षणा को अपनी जोर खीचा । मुलक्षणा बुरी  
तरह से अचक्का गयी । उनके हाठ हिने—शायद कुछ कहा जा किसी  
को मुनायी नही दिया । न मदन का और न ही शायदन्वय मुलक्षणा का ।

दिन सर्दी के थे । दोना न गम कपडे पहन रमे थे । राजस्थान की  
सर्दी की धूप मे जितना दम हो सकता है पूरा था । इसके बावजूद मन्न  
ने देखा मुनक्षणा के हाठा के छाट छाटे कपाट वज रह ह ।

पड पर कोई पक्षी आ बठा । पता न खरखराहट हुई । मुलक्षणा न  
चौक कर गदन ऊपर घूमा दी

वम,' मदन जोर से हँस पडा 'घबरा गयी मरी हसनी ! कौन है  
यहाँ जिमसे सहमती मिमटती जा रही हो ?'

क्या इसीलिए यहाँ नाय थे ? ' मुलक्षणा न पूरी शक्ति बटोर कर  
यह गन्तु निकाले ।

'ता फिर और किमलिए मरी जान !' आखिरी शब्द तक आते आते

मदन की आवाज बहुत ही नीची पड़ी गयी। उस खुद अंगारग हुआ कि वह कोई जनावटी वाक्य बोल रहा है जो वह नहीं सोचता कि उस बचपना चाहिए। वह पूरी शगरत पर उतर आया। घूमा और टा मुनक्षणा के सामने आ खड़ा हुआ। मुनक्षणा ने उसके भारी हाठा की प्रभावित न हाठा पर अनुभव किया।

क्या मैं घर में नहीं मिलती थी। पतन स्तर के साथ छगहर बदल में लाने पना हुई। मुलक्षणा ने इधर उधर नखा और कगेव पडे एक पत्थर पर जाकर बैठ गयी। हवा में उमकी पीने फूला बानी माडी फरर फरर' करा लगी।

अब मदन फिर उसके पास झुक कर इस अदाज में पडा हा गया कि उमकी हरी धागीदार टाई मुनक्षणा के गाल सहाने लगी।

"यह सब क्या करत हो जी। अगर बाद इधर में आ निकला ना क्या कहेगा।"

'कहगा क्या? हा सोच सकता है मदन ने स्वर को नम्रा करत हुए उत्तर दिया 'कि इसकी लुगाई घर में भाग गयी होगी।'

यदि उमन आपसे पूछ ही लिया तो?"

तो हम कह देंगे—हा। लेकिन अब जाखिर हमन इसे खोन निराना है।' बहत-बहत मदन एक झटके में पीछे हट गया। दो हिरन कूल-पादते पास में निकल गये।

मुनक्षणा हँसी दगाती हुई बोली—'कौई डग की बात करो।'

'बौन मी बात? तुम्हीं कुछ कहो।' मदन इधर उधर देखन लगा। कुछ देर तक चुप्पी बनी रही। फिर मदन ने कहा—'मुनक्षणा, तुम बहुत अच्छी हो। मुनक्षणा तुम बहुत मुदर हो।'

क्या यही कहने के लिए यहा आय थ? मुलक्षणा व्यग्य में हँस पडी।

वह कोई ऐसी हँसी नहीं थी जिम पर मुग्ध हुआ जा सकता। फिर भी मदन थोडा जागे मरका। मुलक्षणा के दोनो हाथा को अपन हाथा में ले लिया।

'थोडा शम लाज भी होनी चाहिए" मुलक्षणा ने हाथ खीचते ए

वहा, वहाँ ला पटवा। मरी हो कमर दद करन लगी है।' वह अपनी हथेली पीछे न गयी और पूर शरीर को अकडाने के साथ मुह मे 'उई' की आवाज निकाली।

'बडी मुश्किल से साह्य को पटा कर जीप लाया था अपनी महागनी जी का घुमान, वहनान, भगर यहाँ मव वअमर टुआ जा रहा है। मदन न जम मामन याडिया के पास विचरत हुए कपोत युग्म से कहा।

फिजूल की बातें न बनाओ स्तनो साह्य। चलो सीधी तरह से वापस।

मदन चुप रहा। जान क्या सुलक्षणा क्षण प्रतिक्षण अधिक् आकुल हो लगी थी— चलत हो कि नही।" स्वर म उत्र थी।

'रम एक दफा 'मदन न दोना बाँहें फँला दी फिरमी हीरा की तरह जोर जाडा, तब फिर चल देंगे।' कहन ही चारा ओर देखने लगा।

व श र म "सुलक्षणा एक झटके स उठी और जाकर जीप म बठ गयी।

यदि रशम शर सुलक्षणा की चुलबुलाहट को अभिव्यजित करता ता निश्चित रूप से मदन का रोआँ रोआ आनदित हो उठता। वह कुछ अव्यक्त अतनिहित की प्राप्ति से घूम उठता किंतु वेशम'क अशरा को उसन रम तरह वेरहमी स तोड-तोड कर नुकीला बना दिया था कि उसके दश स मदन गहरे तक तिलमिला गया। उसे आगे सुनायी पडा— चला जा जीप। जो मिलता है न्योता देते चलते हो। डेर सारे काम ता भुझे ही निपटाने हैं।

अव की बिना कुछ बोले मदन जीप चलान लगा। उसका चेहरा एकाएक विकृत-मा हो गया जैस मुह म एक साथ कई एक कडव घूट भर गये हा जो न अत्र जात हा और न ही बाहर उगले जा सकत हा।

मद हवा के झाँके लगातार अंदर भरत चल गय।

गली क मोड पर मदन न जीप को ला छडा किया। सुलक्षणा को रम का सकेत कर स्वय अपनी सीट पर जमा रहा।

‘आप ?’ अपनी साड़ी समेटत हुए मुनक्षणा नीचे उतरी।

‘मैं मैं आफिस।’

‘आज की छुट्टी ली है ना।’

‘जीप कौन-ने मेरे बाप की है। इसे तो पहुँचा आऊँ।’

मुलक्षणा न दावें बायें देखा। वही कोई ऐसा सवाद नहीं मिला जिसे पकड़े रख सकनी।

घरर घरर की आवाज हुई और जीप जमे भारी भारी बदमास सरकने लगी।

मुनक्षणा कुछ देर तक वहीं खड़ी रही। जीप दीखनी बंद हो गयी तो उमन घर की तरफ रुख किया। अँगुलिया में बूलता चाबियों का गुच्छा घर के खान्नीपन का संकेत कर रहा था।

बच्चा के स्कूल में लौटने में अभी बहुत देरी थी। मुलक्षणा न मोचा पहने सत्रे के पड़े कुछ बतन साफ कर डाले। विम निवालन के लिए कमरे का दरवाजा खोला तो एक बबूतर दरवाजे पर नें धूल उड़ता निकल गया। उनके नथुनों में एक साय धून के कण और जजीर सी बासी गंध घुम गयी। तब उमन मोचा, पहले मारे घर की गद झाँ दे। पूर मामान को नये सलीके से मजा सँवार दे। फल को रगड़-रगड़ कर पोछे। मारे दाग माफ कर दे। सब कुछ तरोताजा नजर आने लगे। नहीं इससे पहले पदें धो डाले। प्रेस के बाद उनकी चमक देखने वाला बस देखता ही रह जाय। यह सब तो करना ही है। पहले नई चाकरी के पैकिट खोल कर देखे। उमी में एक ताजा कप चाय बनाकर पिये ताकि मारी सुस्ती और थकावट दूर हो।

परन्तु कुछ नहीं हों पाया मुनक्षणा से। अपन अदर लवे असें स जमी परत-दर-परत, क्लान्ति की समाप्त करने हेतु उही कपडों से पलग पर पड गयी। और अब प्रत्यक्ष रूप से पति की नाराजगी के वारे में साबने लगी।

ज़रा-ज़रा-भी बात पर जय-जय नाराज हो उठने की आदत है मदन की। मनाओ तो मान जाता है, पर काफी समय रगतर है इस काम में। इतना बक्त उसके पास नहीं होता। फिर भी निवालती है। मदन की

अप्रसन्नता उदासी उमम किसी भी कीमत पर वर्दाश्त नहीं होती। वह पिछल दम साला के इतिहास के टुकड़ा में स गुजरती उलझती हुई अनम आठ राज पहले की घटना में अटक कर रह गयी।

फिर 21 दिसम्बर आन वाला है। पता नहीं किसन कहा था। मन्त्र ने या मुनक्षणा! जैस गलती स यह बाय आपस जाप उनके मुह स निकल गया हो।

हर बप कुछ ऐसा ही हाता है इन दिना। दिना के अन्तर कुछ बनने और टूटने का अहसास, एक साथ होन लगता है। खुशी के साथ उसक भग हान का डर। मददाश उमगा के साथ तनाव मुद्रापन या पैंग चढात हुए गम्भी टूटन का खतरा। ऐसे ही कुछ भाव लकर जान लगता है 21 दिसम्बर।

मदन तो बहता है तू इस तारीख का मिलकुल भूज जाया कर। जैस बाकी तारीखें निकल जाती है यह दिन भी चुपचाप निकल गया करगा। कोई बाहर वाला याद दिलाव तो आयेगा नहीं। यह काई हाली दीवानी की तरह का उत्सव थाडे ही है।

किंतु नहीं। दाना को ही इसकी आहट अपने अतम स सुनाई पन्न लगती ह।

या 21 दिसम्बर जा गया। स्वागत का तैयार हा जाओ। 'चेहरा खिल आया है, मुलक्षणा का। आवाज में घनक आ गयी है।

इसमे मदन तरंगित हो उठा है किंतु लापरबाही जतलाता है— 'रहन दे। तर से कुछ हाना-हवाना तो है नहीं।'

मुवस सब कुछ होता है। तुम ही ढील पडे रहत हो। मुनक्षणा उमे छेडती है।

कुछ क्षणा के लिए मदन झेंप सा जाता है। फिर बाल पडता है— वाता में तजी दिखाना तो कोई श्रीमती मुलक्षणा जी से सीने।

जिन जिन वाता की आपको चाह है उस वार वह सब सही। बना डालिए वसी बक्त सलीबेवार कायक्रम। जाप स्वय आगा-पीछा सोचते रह जाते हो और दाप मरे मत्थे जड देत हा मिस्टर।' मिस्टर

देती है।

मदन में हरकत होती है। फुर्ती से सुलक्षणा का अपमान आन्वेषित करना चाहता है तो वह खिलाखिनाती तइ दर ओ छिटकती है।

“अब घबराती क्यों हो।” मदन उसका पीछा करता है ता वह भूमि-कक्ष में जाकर रजाई में दुबक जाती है। मदन भी वही पहुँच जाता है।

‘बया करत हो जी।’ सुलक्षणा की आवाज़ में थरथराहट तर गयी है, बच्चे स्कूल से आत हाग। उनके लिए नाश्त का प्रबन्ध करना है। मैले बपड़ा का ढेर लगा पडा है। छोडा न प्लीज। आपके लिए चाय बना लाती हूँ।”

“बस हो गयी सिटटी पिटटी गुम।” मदन उस रिहा करत हुए कहता है।

‘वक्त भी तो देख लिया करा’ सुलक्षणा पलंग के नीचे पर लटकाते हुए एवाएक चचलता स रसोई की ओर भाग खडी होती है—‘जभी 21 दिसम्बर की प्रताशा करा।’

मदन उनके पीछे-पीछे रसोई की दहलीज पर जा बैठता है—‘तुमम कभी हिम्मत नही आयेगी।’

‘देखिए इस बार आपके भाता पिता-बहन सब 21 दिसम्बर स पहल लौटेंगे नही। आप हा का पूरा सिक्का चलेगा।’ सुलक्षणा हैमती है।

मदन जान क्या गहरी खामाशी में खा गया है।

शाबाश, अच्छे बच्चे किन्ती बात की जिद्द नही करन,” सुलक्षणा उसे तिरछी नज़र स देखती है ‘वाला चाय बना दू या दूध पिआग?’

“मुनो। 21 दिसम्बर हमारा निजी त्यौहार है। तुम इसम और नोगा का क्या शामिल करना चाहत हा?”

‘जब मैं कभी दूसरा की पार्टिया में जाता हूँ ता हसगत हाती है और शम भी महसूस हाती है कि हमन अपन इष्ट मित्रा का कभी ढग न बुना कर खिनाया पिनाया नही। हर साल बस सोचन ही “ह जाते है। कई महीना में सब जन कह रह ह स्टनो बना है कुछ हो जाये।’

बनो हो जाय इनी बहान। मुझे भी ठा तीन सौ की टीचरी मिली बहन के साथ ही वह मदन की ठुडकी छीच देनी है और गाल महला

है।'

मिलाओ हाथ।"

मिलाओ हाथ।" थप थप।

'पक्की।'

पक्की।"

फिर इस पक्की के बाद मदन न अपना खास-खाम दोस्ता से कहना शुरू कर दिया था। 21 दिसम्बर को हमारा मैरिज डे है। रात का खाना हमारा यहाँ जाना। हैड क्लक का भी। अधीक्षक महोदय का भी। अभियंता को कहने में सक्कुचाना रहा। उह अधीक्षक से मालूम हुआ तो उहने खुद ही बटकर कहा—'क्या भई मिस्टर मदनलाल हम क्या घटिया आदमी समझ रखा है? हम भी जायेंगे तुम्हारी मन्नि डे एक्सरी पर।'

जरूर साहब इससे बटकर हम दोना के लिए क्या खुशी हो सकती है। कहते कहते मदन मचमुच पुनक्ति हा उठा था, किंतु बाद में उसे लगा था कि काम और पचा कुछ बढ़ जायगा। स्पण्डड कुछ और ऊँचा करना पड़ेगा।

शादी की बपगाँठ पर मदन और सुलक्षणा न छुट्टी ली थी। 21 दिसम्बर को उनका बाहर घूमने का भी कार्यक्रम था।

मदन न जीप आफिस लान में खड़ी कर दी। फिर साहब का कैबिन में बतान चला गया।

आह ना अर्नी! इसीलिए तो हमने आज बाहर का कोई प्रोग्राम ही नहीं रखा था।' सुनकर मदन का मन कुछ अधिक उखड़ने लगा। उसने जवाब में मा वाइट आफ यू कहा और रात का आन की याद तिनका हुआ बाहर निकल आया।

कुछ दर नउनीक के एक रस्तर्ग में बठा चाय पीता रहा जीर मिगरेट फूकता रहा। त्तिमाग की नमें जैसे रम्मी फाँस लगी। 21 दिसम्बर। 21 दिसम्बर। 21 दिसम्बर। पत्ना दूसरा, तीसरा और दसवाँ।

डिलिवरी। बीमारी। मुफलिसी। जाने क्या क्या। हर 21 दिसम्बर कुछ खराचे छोड़ता हुआ निकल जाता है। एक बार सास ननद के ताना से जख्मी, और रान का भेरे नाराज होने पर मुलक्षणा भिन्नकती हुई कह रही थी—‘हमारे मन छोटे से घर के कोना और परम्परागत विचारों के बटघरों से बँद हैं वरना माचो तो क्या सिफ नौ दम वर्षों में जन्म वामी हो जाते हैं, इनकी महक छत्म हा जाती है।’

मदन ने बिल चुकाया और बहद तब कदमा से घर की तरफ बढ़ गया।

मुलक्षणा ने उसे देखन ही कहा— बहुत देरी कर दी। बाजार से बहुत सामान लाना है।’

हा मुझे याद है। लिम्ट बना लो।’

‘पहले आधा आधा क्या चाय पियें?’ मुलक्षणा ने पूछा।

नहीं।’ वह मोफे पर बस गयी। थोड़ी देर बाद मुलक्षणा एक भीठा सुगन्धित पान तैयार कर लायी। मदन ने बिना प्रतिवाद किये पान ले लिया। पान लेते वकन मुन्वराया भी। मुलक्षणा भी मुन्वरायी किन्तु पान ही आर की मुन्वराहट चिबनी मछली की तरह फिमनती हुई जम गँदने पानी में जा गिरी।

मुलक्षणा तुरन्त कमरे में चली गयी। खिडकी में खोलकर टेपन तैम्प जलाया। एक लम्बी फेंहरिस्त तैयार कर डाली। फिर जनावश्यक लम्बे डग भरती हुई मदन के पास पहुँची— तो।’

मदन ने क्या नही बर्दले थे। शायद वह आज के दिन इसी तरह बना ठना रहना चाहता था। उमम माइबिल पर धने टाँगन शुरु कर दिये।

‘अब मूड बन गया हा तो चाय पीने जाओ। खाना तो आकर ही खाना। तैयार रखूंगी।’

‘सबेरे मगर ही तुमन इतना कुछ खिला दिया कि पेट फूल रहा है।

मदन ने टाई को कोट के बीचबीच बठाते हुए कहा।

‘मचमुच बहुत जँच रहे हो आज।’ मुलक्षणा ने एक गहरी दृष्टि फेंकी और मुस्करा दी।

चापलूसी कर रही हो। ममम गया। तुम्हें तो आज साडी दिलानी



धी। चलो माथ।

एक ता बहुत लगी हा जायतो। वितन वान पने है अभी। तीन बर ता फिर भी जाना है। शान्ति फिर कभी नहीं।

वाह भरिज डे आज है ता फिर कभी क्या ?" मन् न कहकर उनकी राह छोड़ी चलो सीधी तरफ म।

नगभग उन्ही कपडा म पुनभणा घर पड़ी। नजदीक की एक दुकान स एक हरी प्रिन्टिड साडी पगन की। वही म मुनधणा वापन हा ली और मन् जाग बाजार की तरफ चला गया।

घर वापन पहुँचा तो ने बजरर चालास मिनट हा गय थ। मुनभणा क बाल बिपुन रह थ। हाथो म कुछ राखी लगी थी। देखकर भ्रम बौखना गया— मैंन सीधा था नयी साडी पहन हुए तयार मिलोगी।'

बच्चा की-नी बातें करत हा। साडी म फान लगान बँठनी या रात का पार्टी म बाइ कभी छोडकर आपन डाँट खान की तयारी।'

मन् वकन ता तुम्ही टाँट रहो हो। जय मिनमा नहीं चलता।'

तुम्ही हा जाओ। एक बार आपन बताया था न सिनमा हाल के साथ एक दुकानदार है जा बहुत मन्त जडे प्रचता है। कुछ नाग मीट नहीं खात। जडे माँग लत ह। तब तक मैं चन माफ कर उमलन क लिए रखती हूँ। बजिटरियन नान बेजिटेरियन सभी का ध्यान रखना है। इतन लोगो को बुलाया ह। नाक ता नहीं कटवानी।'

मदन अण्डे लेकर आया तो ऐस ही दोना न कछ खा पी लिया। फिर मुनभणा ने मदन का स्वीट टिण के लिए पिंसी हुई गरी लान को भेज दिया।

आठ घू हो बज गय। मन् बाजार के चक्कर लगाना रहा और मुलधणा मतकतापूवक पार्टी की व्यवस्था करती रही। वच्चे ज्यादा चचन हो जाते तो अपनी खिजलाहन उन्ही पर निकाल दती एक-दो चपतें जमाकर।

हैना मिस्टर मदनलान, हैपी भरिज डे भागे जूता की आवाज के साथ अभिधता महादय का जाशीला स्वर भी पूरे आँगन तक पूँज गया।

उनके हाथ में फूला का गुलदस्ता था। गुलदस्ता मदन के हाथ में दान से पहन उमी जाश में कमकर हाथ मिलाया। उनके पीछे, चार-पाँच आर लोग थे—काप्रेच्युलशस स्वर उभरत चल गये।

फारन समूच घर में भागा-दौड़ी मच गयी। मदन उन्हें बैठा रहा था। मुनक्षणा और उसकी एक सहकर्मी अध्यापिका नीति, बच्चा द्वारा अन्दर पानी, सिगरेट, माचिस आदि भिजवा रही थीं। और लोग आत रहे। यही मिलमिना जाग बढ़ता रहा।

चाय पानी सिगरेट से शुरू होकर खाना खान, पान चवाने, म्यूजिक की धुन पर पैर वजान और अत में कुछ लागा द्वारा पग खनखनान तक सारा कायक्रम प्रहृत बढ़िया गया।

मनको बिदाई दी तो मारह वज चुके थे। कोट को खूटी पर टांग कर मदन ने अगडाई ली। फिर एक गहरी मास लत हुए सुलक्षणा की तरफ बढ़ गया—“बधाई बहुत बहुत बधाई डालिग।”

किस बात की बधाई दे रहे हो? सुलक्षणा न हाथ धाटन हुए कुछ मोचा।

तुम्हारी मेहरबानी से सब कुछ बहुत बढ़िया रहा। तुम्हारे खाने की ता एक स दूमरा बढ चढकर प्रशसा कर रहा था।

अच्छा। मैं ममयी शादी की बपगाठ को बधाई। चलो शुरू है तुम्हारे मित्राण सनुष्ट होकर गये।”

मदन का थोड़ी ऊब हुई। यका हुआ ता वह भी बहुत था। लेकिन इस कद्र उत्साहहीनता तो नहीं हानी चाहिए। तभी शायद पहली बार उसकी दृष्टि सुलक्षणा के आट सगी स सन हाया कपडा, वाला पर ठहर गयी।

‘ओह तुमने खाना खाया कि नहीं?’

‘कैसे खाती? अब तो भूख भी मारी गयी।’

‘और बच्चा ने?’

उह नींद जा रही थी। थोडा थोडा खिनाकर मुना दिया। कही मेहमाना का कम पड जाता तो कितनी फजीहत होती। उसी वक्त नीति को कोई बुलान आ गया तो जल्दी से उसे भी खिनाकर भेज दिया था।”

कहते कहते उमने लम्बी मांस खीची 'खैर अब मेरा मानसिक वाज तो कम हुआ। आप कपड बदलकर आराम करो। मैं बतन माँज कर आती हूँ। रमोड भी माफ करनी है।"

'वाकी काम मुवह देख लेना।"

कल की छुट्टी थोडे ही है। इस तरह मुवह पर छोडकर सायी तो सारी रात वचनी बनी रहगी। अब तो अँगोठी पर गम पानी रखा हुआ है।'

ठहरो पहले खाना खा लो। जबदम्ती मदन से उसे डेड रोटी खिलायी।

फिर जल्दी से मदन लुगी कुत्ता-न्वेटर पहन कर आ गया।

बहुत देर तक पति पत्नी मिलकर बतन माँगते रहे। रसाई साफ करत रहे। दूमरा सामान अपनी जगह पर जँचाते रहे।

एक से ऊपर का समय हो गया था।

मन्न ने इधर उधर देखा और कुछ सोचते हुए बोला—'एक बार नयी मात्री तो बाँध कर दिखा देती।'

मुनक्षणा तजी से अलमारी की तरफ चली गयी जस एक और काम अभी बाकी रह गया हो।

माडी निकान कर मुलक्षणा न उस एमे ही अपन बदन पर ओर लिया। माथ ही वेहरे पर मुस्कान तान की चेष्टा की जिस देखकर मदन अन्दर तक थरथरा गया। एकाघ मिनट म साडी मुलक्षणा क हाया से फिमनती हुइ फन पर फन गयी। उन बिना उठाये ही वह अपनी चारपाई पर निटान हो जा गिरी।

इधर मदन भी पलंग पर जा लेटा। बीच म एक बार नींद खुली ता पनी को बुताना चाहा पर माहम नहीं हुआ। उसकी आँखा क मामने मुनक्षणा की माडी गानाकार रूप म घूमने लगी। ऊपर एक मुस्कान नाच रही थी।

मुबह बहुत देर तक दोना पडे मान रह।

## विखराव

हम दोना धीरे धीरे कभी छाँव म तो कभी धूप म गुजरते पहाड़ी ढलान की तरफ बढे चन जा रह थे । जिल्कुल अनजान रास्ता, पगडंडी के सहारे-सहारे आमान लगने लगा था । जगह जगह फूना न रास्ते को बहुत खूबसूरत बना दिया था ।

अपन-अपने कामा म जुट नपानी बच्चा और स्त्रिया के चेहरा पर भी फूला जसी खूबसूरती बिखरी हुई थी । उहाने हम बताया था कि चौड़ी सडक पर बायें तरफ मुडत ही रापती हाटल दिखन लगेगा ।

मामूली सी थकावट हम हान लगी थी । लेकिन बस न मिलन की प्रजह से जितना ज्यादा सफर हमन तय किया था, उस हिसाब स यह बहुत कम थी । जगह जगह कही झरना ब पास तो कही पील या गुलाबी फूला न दरखता ब नीचे हम मुस्ता लेत । रोपबज' दखने के लिए थोड़ी देर रुक जात और फिर आगे बढन लगत ।

आखिर हम रापती हाटल या शोख लाल रंग का बड़ा साइनबोर्ड दूर से दिखायी दिया और हमारी चाल आप स आप तज हा गयी ।

रापती हाटल के मुख्य द्वार के सामन आबर हम लोग दो-तीन मिनट के लिए खडे हा गये । शायद अपन कपडा की सलघटा और बाना के उलझाव का ध्यान आ जाने से बढे हाटल म एकाएक घुसने म होने लगा ।

काई भी आदमी हाटल मे आता जाता दिखायी नही दिया तो न

बन्द कर शीशे के बड़े दरवाने का अन्दर धकेल दिया। अन्दर मूनापन और अँधेरा था। मद्य जगह खालीपन व्याप्त था। गौर से दृष्टा ता बन एक विदेशी जोड़ा बाने के टबल पर त्रिलकुत खामोश झुका बठा नजर आया।

बग हमार निबट आकर हम किमी टयन के बरीब से जान ब लिए अगवानी करन लगा। हमन उससे सरदार गुरमुख सिंह के विषय म पूछा ता बाना नाम तो नही जानता शायद आप नेपाली सरदार का पूछन ह। ठहरिए।” उमन उँगनी म माथे का छुआ और मनजर के कबिन म चला गया।

मनजर ने तुरन्त हम अपन पाम बुला लिया।

‘क्या सरदार गुरमुख सिंह यही रहन ह ?” मैंने पूछा।

यहा ता नही रहन। काश यहा रहन। उनस बात करत हुए मद्य अपन गमा को भूल जात हूँ। बडरफुन मन— मैंनेजर जरा रुका, उत्तर का मही दिशा की ओर मोडा, हाँ जकर यहाँ आन है। कुछ रोज स दिखायी नही दिय। जरूर बाहर गय हाय।

मनजर न बात खत्म की ता सुमन सिंह का स्वर निराशा से ऊ ऊ म अटक गया कि अब क्या पूछे।

थोड़ी देर की चुप्पी के बाद मैंनेजर फिर बोला ‘आप मि० माहन थापा से पता लगा लें ना।’

हम दोनों मनेजर की ओर देखन लग— कौन मोहन थापा ?

अब की मनजर ने हम अधिक ध्यान से देखा— मोहन थापा का नही जानते। ओह आप इडिया स बाथ ह।’ फिर एकाएक मुमन सिंह को जस पहचान लिया हो, तो आप उनक भाइ है। शकल मिलती ह गुरमुख सिंह से। उमन आपका लिखा नही माहन थापा यहा का बहुत बडा नाम ह और वह गुरमुख सिंह के गहरे दोस्त ह।

उन्हाने तो हमें बारह साना स काई चिट्ठी नही डाली। शीघ्रता से इस बाक्य को ममाप्त कर सुमन न पूछा—‘मि० मोहन थापा कहा मिल सकत है ?”

‘गवनमेष्ट हाउस, नही शायद नच पर बँगले पहुँच चुके हो। काई डेढ़ फ्लॉग चलने पर एक हरे गट पर आपको उनकी नेम प्लेट दिख



को छू रही थी।

हम बँगले के फाटक से सट कर खड़े हो गए। दूर झाड़ियों की आँध में माली काम करता हुआ दिखायी दिया। हमारे बार-बार फाटक को हिलाने और आवाज पैदा करने पर वह हमारे पास आया।

उसके निकट पहुँचते ही सुमन बड़ी वताबी से पूछ बैठे, 'गुरमुख सिंह ह ?'

माली ठीक से समझने के लिए हमारे और पास आ गया। मैंने कहा, साहब अदर हा तो कहना हम मिलना चाहते हैं।'

यह वाक्य मुझे तीन बार दुहराना पड़ा तब कहीं जाकर वह बूढ़ा नपाली हमारी बात समझा। वह अदर चला गया।

धाड़ी देर बाद माली हम साथ ल गया और अतिथि कक्ष में बठा दिया।

जल्दी ही गार लम्बे कद के मि० मोहन थापा गम सूट पहने टाई लगाय नजर आय। हम दोनों खड़े हो गये। मैंने उन्हे अपना परिचय दिया कि अभी यूनिवर्सिटी में रिमच कर रहा हूँ और बताया—'यह सुमन सिंह है मेरा महपाठी और बचपन के दोस्त। गुरमुख सिंह जी के भाई हैं। उन्ही के विषय में जानने के लिए आपका कष्ट दिया है।'

'वाह! उन्हां तपाक में सुमन की पीठ धपकपात हुए प्रसन्नता व्यक्त की 'वह तो दिन रात यही पडा रहता है। कहीं भी पडा रह सकता है। मन्न आदमी है। चार पाँच रोज स कलकत्ता गया है। देखो कल आ जाय।'

कल जरूर आ जायगा? सुमन का स्वर बुझा-बुझा-सा निकला।

क्या नहीं! कल न मही परमा या उससे अगले राज।' उन्हां ठहाका लगाया चिन्ता क्या करते हो! तब तक हमारे साथ रहा। वह तो मस्त मलग आदमी है। बड़ी मुश्किल से निकलता है अब की। वस तो हर टेंपर उमी का हाता है अगर वह एक्सेप्ट करे। करता बहुत कम है। एक ही टूर में चार-पाँच हजार बन जान है। कहता है क्या करना है अपनी जान को। पमा आता है ता पारा-दान्ता में बैठ कर वहा दता है।

'हा मुना है। बहुत बड़े दिल के इंसान हैं।' मुमन न पगड़ी को ठीक करत हुए कहा।

इमान या शेर ? शेर बहो शेर, इमान भी शेर भी। हर किसी के पीछे जा लडा दन बाया आत्मी है। जमक सामने किसी के साथ ज्यादाती हो जाए—वह बरदारन नही करता। जान नडा देता है। जैसे अपना ही कोई बल्ला चुका रहा हा।

फिर रापा माइव गुट हुए तो गुरमुख सिंह के कई चमत्कार जैसे लगन वाले क्लिन मुनात चल गय। यह भी दुहराने रहे कि वह स्पष्ट ता कुछ नही बताता लेकिन लगता है उसने दिल का कोई मुलायम हिस्सा कही से जकमी है।

हमार मामन उन्हान खान-मीन का खूब सामान लगवा दिया। बीच-बीच में सररर कहत— भई छाआ, कुछ छा नही रहे, छाओ ना। गुरमुख सिंह बैशा हा ता इतना नागा हवा के साथ गायब हा जाता। उनकी खुशमिजाजी का परिचय फिर उनके ठहाके से लगा।

उनके बहुत अनुरोध करन पर, जब हम वही ठहरन को नही मान तो ये हम रापती होटल तक छोडन चल पडे। कहा, 'यही यहाँ का आता हाटल है।'

रास्त में वह हम फिर से गुरमुख सिंह की बातें बताते रहे—“एक बार उस पीलिया हा गया था। कनीक ग्यारह दिन अस्पताल में रहना पडा। हर बक्त मुलाक़ातिया का ताता लगा रहता। जो स्टाफ उसे अच्छी तरह नही जानता था, आश्चय प्रकट करता—सरदार है। परदेश में इतने मिलन वाले टपके रहत हैं—गये रात तक। इस पर कई लोग हँसते, पजाबी नही नेपाली सरदार है।”

“लेकिन हम तो पिछले चारह साला से एक भी लैटर नही लिखा।” मुमन के स्वर से उदासी झलक आयी।

‘सरप्राइज ? कहा पत में तो गडबड नही हो जाती ?’

‘नही, कोई तीन महीने पहले दिल्ली आये थे, और तो और अपनी सगी लकड़ी से भी दिल बर नही आय। अपने एक दोस्त के यहाँ ठहर। उसी ने हम बनाया, नेपाल में है। ठीक पता ठिकाना बता कर नही गया।



पापुनर आदमी है। याशिषा करो ना मिर जायेगा। छर जाकर हम वगैनी मे पना करन करात रकमील पहुँच। फिर काठमाण्डू इमर वा पता चलन पर यहाँ हिन्दाडा था गय। शुक्र है।'

'फिकर न करा वात्शाआं, थापा साहब न पजाधी लहजे म कहें, 'आत हो उस आपकी अदालत म पश कर उसमे जवाब तनवी करूँगा— योल यह नीजवान ठोक कहते ह ?'

'नही-नही' मुमन कुछ सहम कर बोला—'मुना है बहुत सेंसिटिव है। जल्दी बुरा मान जाने है।'

दोस्ता की बात का कभी बुरा नही मानता, कह दिता न ठनी फिकर ई ना करा।'

हम सब हँसन लगे। रापती हाटल आ गया था। हम एक बमर म टहराकर मैनजर म कुछ बातचीत कर थापा साहब चले गय।

दूसरे दिन सुबह से दुपहर तक थापा साहब क बँगले के तीन चक्कर लगा आय। शाम का भी हा आय। गुरमुख मिह नही जाये।

उस अगले दिन और उसस अगले दिना हमारी इतजार का सिन मिना लम्बा खिचन लगा। मैं कहता—'अब तो बक गय है। चलो लौट चलें।' मुमन बटता—'हरगिज नही। अब बिना मिले कमे जा सकत हैं ?' थापा साहब कहत—'कल जरूर आ जायेगा।'

आसपास क कुछ लोग और दुकानदार भी हम जानने लगे के कि हम किमलिए यहाँ रूके हुए हैं। उनकी प्रश्नसूचक दृष्टि और थापा साहब क यहाँ के खाली चक्करा से हम बंदम हा चले ये। और साथ ही शम भी महसूस होन लगी थी। थापा साहब जबरदस्ती कुछ देर बैठा भेत। नास्ता करान। कभी खाना खिलाये बिना न जान देत।

कहते— क्या निराश होन हो—कल आ जायगा। बारबाश आदमी टहरा। यारा न रात्म म अटनी तिया हागा। बस जय आना ही होगा। यह बात भी पक्की है कि बस म उतरन हों एक जार मीघा इधर आयगा।

एत तिन मुयह मोहन थापा के यहाँ चक्कर लगान के बाद हम सारा टुपहरी पड़े मान रह य। शाम का उठा ही फिर वही शब्द मुन आय क

ओह नाट यट। इमके बाद वम अड्डे से होते हुए हम एक ऊपड-खाबड मुनसान मडक पर दूर तक निकल गये थे। जब लौटे तो अँधेरा हो गया था। एक आदमी हम देख कर ठिठक कर रुक गया। हम उसे नहीं पहचानत थे। बोला— मिल गये आपके भाई साहब ? मैंने उह काई घटा भर पहले दूर से देखा था।”

‘अच्छा।’ कहत हुए हम तुरत तेज गति से मोहन थापा के बँगल की आर चतन लगे थे।

दरवना और खाडिया की ओट से हमने उह प्रगमदे में दो उडे मूडा पर बैठे हुए देखा। बीच म तिपाई थी, उस पर हत्की गेशनी से टबल लम्प जल रहा था। साथ में एक बोतल आर दा गिलास भी रखे थे।

एगाएक सूभने न मरा हाथ पकडकर रोजन हुए कहा—‘रुवा हम उह सरप्राइज देंगे।’

हम धीर धीर मुठ और आगे पहुँच गय। उहान हम नहीं देखा। वे शायद किसी दूसरी दुनिया में पहुँच कर इसी दुनिया की बातें कर रह थे।

‘समप गये ना ! उससे कहना, दोस्त की तरह मिले।’

‘हूँ।’

‘स बेचार का भी क्या कसूर ! उम वक्त मुश्किल में जाठ-स साल का रहा होगा। उसे क्या पता बडे भाइया न किस तरह झूठे दस्तमन बनाने सारी जायदाद हडप ली ?’

‘हूँ।’

मैंन भी कहा गुरमुख सिंह, कोई बात नहीं। कौन-सी साथ ले जाने वाली चीज है, मारो गाली।’

‘हूँ।’

‘पता चला मेरी गर हाजरी म जब जग म एन्वाम कर रहा था, मेरी घरवाली का इलाज नहीं कराया। बेचारी दम तोड गयी। मैंन कहा—ओ गुरमुख सिंह, छाड दे मत्र कुछ। भाग चल, अब नहीं महा जाता।’

‘हूँ।’

आए, अभी तुमने मेरी लडकी की बात चनाई थी ना। लोग के

कहते म उमन भी मान चिया कि उमका पक्की उम्र का बाप दूमरी औरता क पीछे भागता है। गुरमुख मिह यह मार रिस्त बकार हैं। इनसे ही दुय उपजता है। बाहर का कोई आत्मी ऐसा कह दे, कह दे। धाखा द जावे, द जाय। वला स। क्या लगता था तरा ? दे गया धोखा। कर गया फरर। क्या न गया ? जितन तिन निभ गय सो भल। मगर माहन मिहा। जब एनी हरकते खून क रिश्त करत ह ता मार बदन स खून रिस्तन लगता है। समये रि नहीं ? मरी बात समझ रह हा कि नहीं ?

हैं हैं।

हा अभी-अभी छ्यान आ रहा है उमके हिंस के कोई दो ढाई हजार मरी तरफ निकलत हैं। कही वह प्यार के रिस्त का खोल चढाये मिफ पैसा वसूल करने ही ता नहीं आया। अगर ऐसा है तो उस भगा देना।

आह !

नही-नही भगाना मत, खा खाँ अरे छाती म कुछ दद-सा उठने लगा है। उमम कहना मिल ख, मिफ एक धार दोस्त की तरह मिल ले और फिर भूल जाय कि गुरमुख मिह म कभी मिला था।" खा खाँ खाँसत-खामत हाथ गिलास को जा लगा। बटका लगा ता गिलास छिटक गया। टूट कर दूर तक बिखर गया।

'हूँ ! हूँ ! ठहरा। बुलाता हूँ। माली दादा रापती होटल जाओ।' मैं सुमन का आगे धकेल रहा था। मगर वह जस वही जम गया था।

## तपती किरणों का फदा

ओह किननी कितनी हसरत लेकर हम यहा आये थे, लेकिन मारी गनियारों पूरी तरह से खामीश थी ।

इससे पहले जब भी मैं अपने बचपन के दोस्त मुखविंदर के घर आता, मुझे यो लगता, जसे मुखविंदर का घर ही नहीं पूरी गली ही मेरा गमजोशी से इस्तबवाल करती है । लगभग सारी गली के बच्चे और बच्चे तक मुझे पहचानने लग गये थे और गली में घुमते ही उमाह से भर उठते—आ गये जी ! मुखविंदर अभी-अभी गया है । मुखविंदर की घरवाली मायरे से लौट आयी है । कई बच्चे मेरे पहुँचने से पहले ही मुखविंदर का दरवाजा पटखटा देते । आपके वही मित्र आये है ।

इस बार गली में बाइ नहीं मिला । शायद सब अपने-अपने घरों में दुबके थे । हम मुखविंदर के भवान तक पहुँचे तो वहाँ एक बजनी ताता झूल रहा था ।

भारी बंदमो से मैं अपने मित्र के साथ उधर में लौट आया ता पाया सिर्फ गलियारों ही बंधो, गडका, पाकों, यहाँ तक कि मिनेमाघर के नजदीक भी प्रतिक्षण मन को बेतहर घुम्बे डालने वाली अनचाहो शांति पनरी पडी थी ।

मुखविंदर के भवान वाली गली जहाँ खाम हाती है उमरे दासी ओर कुछ बंदम रत्न के बाद एक निहायत आनीमान पुरान डिजाइन का सिनमा पर बड़े रौब से सर ऊँचा उठाय अपने आमपाम, बच्चों की तरह

मँडरात लोग को निहारता रहता है किन्तु आज वह उदाम था। आसपास कोई नहीं था। सिनमा घर की हर्दें पाग करने पर एक छाटा, साफ-मुथरा पाक आ जाता है। हम वहीं चले गये। पाक बिलकुल खाली था।

आज भी मैं रात भर का थका हुआ था। इधर की सारी स्थितियाँ से हताश निराश हो गया था अतः एक सुरक्षित मी चाड़ी की आट लेकर सो गया।

×

×

×

सपने देखना अनादि काल से मनुष्य की नियति रही है और उनकी तरह-तरह से समीक्षा भी की जाती रही है, लेकिन दिन में देखे गये, स्वप्ना की प्रामाणिकता पर हमारे पूज्य ज्योतिषी और शायद मनावनातिक भी सदा सदेह चिह्न लगाते रहे हैं। किन्तु क्या उस व्यक्ति द्वारा, दिन में देखे गये स्वप्नों के साथ न्याय नहीं किया जायगा, जो हमने रात भर ड्यूटी बजाता ही और जिसके लिए दिन ही रात का रोल अदा करता है। इस तरह कोई भी समझदार आदमी मेहनतकशा के स्वप्ना को झुठलाने का दुस्ताहम नहीं करेगा।

सपने में मेरे चेहरे का आधा हिस्सा बार-बार गायब हो जाता था जिसे पकड़ने के यत्न में मैं गलियाँ मँ भाग रहा था। लेकिन हर गली अचानक ही खत्म हो जाती थी।

अचानक बहुत ऊँचा शोर सुनाई देता था। मगर कोई भी आदमी सामने नजर नहीं आता था। लगता जैसे हर शब्द सामने आने से कतराता है या शरमा रहा है या तो अपनी आँखों की हरकतों के कारण या फिर अपने अधूरे कपड़े के कारण। धुआँ ही धुआँ। ऊपर-नीचे। दाएँ-बाएँ। मसूचा वातावरण घुघुला गया था। दम घुटने लगा था। आग नहीं थी लेकिन हर शब्द धीरे धीरे अदर ही अदर झुलस रही थी। कुछ सड़ने की गंध पदा होती जरूर थी किन्तु आँधी उस उड़ा ल जाती थी।

थोड़े-थोड़े वक़्त बाद बाद आदमी, जाधे-अधूरे चेहरा के साथ फिर उठात। देखने के लिए कि क्या हा रहा है और फिर एक-दूसरे का खराबत हुए कभी गायब हो जाते।

जमा कि होना चाहिए और होता है, मिसाल के तौर पर आटे में

पानी डालने से आटा गिलगिना हो जाता है। चकले पर रोटी बिलती है और तवे पर टालत ही पकन लगती है। अब मान लीजिए पानी डालने पर आटा गीना न हो। आग भी रोटी का पकान से इकार कर दे—नो ? ऐसा ही कुछ हो रहा था। बार-बार। हर तरफ। उस वक्त आदमी कितना बेबस हो उठता है। मुझे लगता, कुछ नाग मिलकर मुझे मता रहे ह और मुझे जो कोई भी मिल जाय उससे मुझे बदला लेना है।

ऐसे विचित्र पर्यावरण में मैं घण्टो चलता रहा था। बार-बार हर मोड़ पर अनुमान के विपरीत ही कुछ घट जाता। मर रह-मह साहस ने जब पूरी तरह दम तोड़ लिया तब मैं बेतहाशा भागने लगा था ताकि ठीक रास्ते पर आ लूँ। लगता कि वन अब चन्द मिनटा बाँक ठीक जगह पहुँच जाऊँगा। लेकिन हर बार अप्रत्याशित रूप से गनी समाप्त हो जाती और सारे रास्ते अवरुद्ध हो जाते। तब मैं दूसरी दिशा में भागने लगा। एक तरफ मुड़कर देखा तो सामने भारी भरकम बिल की ऊँची पयगीनी दीवार थी। मैं उस दीवार पर सिर मारने लगा। बड़ दफा सिर पटकने पर भी एक बूद तक खून नहीं निकला तो मरी कँपकँपी छूट गयी कि मेरा खून तमाम हो चुका है। हाँ, माथे पर दद का अहसाम हुआ। ओखें खोलीं तो एक भारी भरकम काला जूता माथे से सटा हुआ था।

×

×

×

एक छोटे जंशान स्टेशन पर मैं जब से प्वाइंटमैन लगा हुआ हूँ जहाँ सारी-मारी रात गाडिया की आमदारपन लगी रहती है। सवारी गाडियाँ घटम होनी है ता मानगाडियाँ शुरू हो जाती है और फिर उनकी शटिंग। मुबह हाते-होते फिर सवारी गाडियाँ। सारी-मारी रात में भी गाडिया की नग्न भागना रहता हूँ। दिन में हाँकना हुआ अपन एक कमर वाल क्वाटर में आगिल होना हूँ और अपना चरमरता जिन्म चांगपाई पर डाल देना हूँ फिर कुछ एम ही ऊनजनुस सपन शुरू हो जात है।

×

×

×

पिछले दो महीना में मेरा एक पन्त मुझे डन महानगर में साथ चलने का मजबूर कर रहा था। उनकी बहन की शांती थी। कुछ महने और गाडियाँ आदि घग्दीनी थी। उस पना था कि मुखबिदर मेरा गहरा दास्त था और

मँडगत लोगो को निहारता रहता है किन्तु आज वह उदाम था। आनपान कार्य नहीं था। मिनमा घर की हदें पार करने पर एक छोटा साफ-मुथरा पाक आ जाता है। हम वही चल गय। पाक बिलकुल खाली था।

जाज भी मैं रात भर का थका हुआ था। इधर की सारी स्थितिमा से हताश निराश हो गया था अतः एक सुरक्षित मी झाड़ी की ओट नकर सो गया।

×

×

×

सपने देखना अनादि काल से मनुष्य की नियति रही है और उनकी तरह-तरह में ममीशा भी की जाती रही है, लेकिन दिन में देखे गये, स्वप्ना की प्रामाणिकता पर हमारा पूज्य ज्योतिषी और शायद मनाबनानिक भी सदा सदेह चिह्न लगाते रहे हैं। किन्तु क्या उस व्यक्ति द्वारा, दिन में देखे गये स्वप्नों के साथ साथ नहीं किया जायगा जो हफता रात भर ड्यूटी बजाता हो और जिम्मे लिए दिन ही रात का रोल अदा करता है। इस तरह कोई भी समझदार आदमी मेहनतकशा के स्वप्ना को झुठलाने का दुस्साहम नहीं करेगा।

सपन में मेरे चेहरा का जाधा हिस्सा बार-बार गायब हो जाता था जिस पकटने के यत्न में मैं गलियाँ में भाग रहा था। लेकिन हर गली अचानक ही खत्म हो जाती थी।

अचानक बहुत ऊँचा शोर सुनाई देता था। मगर कोई भी आदमी सामने नजर नहीं आता था। लगता जैसे हर शब्द सामने आने से कतराता है या शरमा रहा है या तो अपनी ओछी हरकतों के कारण या फिर अपने अधूरे कपडा के कारण। धुआँ ही धुआँ। ऊपर-नीचे। दाएँ-बाएँ। मसूचा वातावरण घुघला गया था। दम घुटन लगा था। आग नहीं थी लेकिन हर शब्द घीरे घीरे अन्दर ही अन्दर झुलस रही थी। कुछ मडन की गध पैदा होती जरूर थी, किन्तु आधी उस उडा ल जाती थी।

योडे-योडे बक्फे बाद बाद आदमी जाधे-अधूरे चेहरा के साथ सिर उठाते। देखने के लिए कि क्या हो रहा है और फिर एक-दूसरे का खराबत हूँ कही गायब हो जाते।

जमा कि हाना चाहिए और होता है मिसाल के तौर पर आटे में

पानी डालने में, आटा गिलगिना हो जाता है। चक्के पर पीटी बिलती है और तबे पर डालते ही पकने लगती है। अब मान नीजिण पानी डालने पर आटा गीला न हा। आग भी राटी का पकान स इकार कर दे—ना ? ऐसा ही कुछ हो रहा था। बार-बार। हर तरफ। उम बकन आदमी कितना बेवस हा उठता है। मुझे लगता, कुछ लोग मिलकर मुझे मंता रहे ह और मुझे जो काई भी मिल जाय उमसे मुझे बदला लेना है।

एम विचित्र पर्यावरण में मैं घण्टा चलता रहा था। बार-बार हर मोड़ पर अनुमान के विपरीत ही कुछ घट जाता। मरे रह-मह साहस ने जब पूरी तरह दम तोड़ दिया तब मैं ब्रेतहाशा भागने लगा था ताकि ठीक रास्ते पर आ लगू। नगता कि बस अब च द मिनटा बाद ठीक जगह पहुँच जाऊंगा। लेकिन हर बार अप्रत्याशित रूप से गली समाप्त हो जाती और सारे रास्ते अवरुद्ध हो जात। तब मैं दूसरी दिशा में भागने लगा। एक तरफ मुड़कर देखा ता सामने भारी भरकम किल की ऊँची पथरीनी दीवार थी। मैं उस दीवार पर सिर मारने लगा। कई दफा सिर पटकने पर भी एक बूद तक खून नहीं निकला तो मेरी नैपकैपी छूट गयी कि मेरा खून तमाम हा चुका है। हाँ, माथे पर दद का अहमास हुआ। आँखें खोनी तो एन भारी भरकम काला जूता माथे स सटा हुआ था।

×

×

×

एक छोटे जक्शा स्टेशन पर मैं कब स प्वाइंटसमन नगा हुआ हूँ, जहा सारी-भारी रात गाडिया की जामदारपत्र लगी रहती है। सवारी गाडिया खत्म होनी है तो मालगाडिया शुरू हा जाती हैं और फिर उनकी शटिंग। गुबह होते होते फिर सवारी गाडिया। सारी सारी गत में भी गाडिया की तरह भागता रहना हूँ। दिन में हाफता हुआ अपने एक कमर वाले क्वाटर् में दाखिल हाता हूँ और अपना चरमराता जिस्म चारपाई पर डाल दना हूँ फिर कुछ एम ही ऊलजुल सपने शुरू हो जान हैं।

×

×

×

पिछले दो महीना स मेरा एक दोस्त मुझे इस महानगर में साथ चलने को मजबूर कर रहा था। उसकी बहन की शादी थी। कुछ महन और नाडिया आदि खरीदनी थी। उसे पता था कि मुखबिदर मेरा गहरा दोस्त था और



वह यह चीजें अमनी और जायज कीमत पर दिनवा मवता था। मेरे लिए मुश्किल यही थी कि मुझे किसी मूरत ने भी एक रोज की छुट्टी नहीं मिल पा रही थी। मैं उमे तमरनी दता था कि किसी दिन भी चल पड़ेंगे। एक ही दिन का तो काम है। अब कन ही जमन आकर बहा था— तुमने मुझे मरवा दिया। परमा ही वहन की शान्ती है और तुम्हारे भरोसे कुछ भी नहीं कर पाया। अबकी भी मैंने उमे तमरनी दी—ता क्या हुआ। आज रात चलेंगे। परमा सबेरे यहाँ वापस। कन मेरी रात दो बज तक ड्यूटी थी। किसी तरह दूसरे ध्वाइटनमन और स्टेशन मास्टर से मोहलत मागकर (बिना छुट्टी) रात एक वाली गाडी म दोस्त का साथ लेकर बैठ गया था कि दिन भर म काम निपटाकर महानगर स रात जाठ बजे चल पडूंगा और अपने स्टेशन पर पहुँचकर मुस्तैदी स फिर ड्यूटी पर तैयान हो जाऊँगा।

गाडी म बेहद भीड थी। प्राय खडे पडे हमन सफर तय किया था।

सुखविंदर का घर स्टेशन के बिलबुन पास पडता है। सदा का भाँति यही कायक्रम था कि पहले सुखविंदर के घर थोडा नाशता और आराम करेंगे। फिर उस भी बाजार ले चलूंगा।

मगर यहा ता महानगर को शायद नाप सूघ गया था।

जिम वकत मैं गाडी की ओट म नास्ट ड्यूटी और गाडी की धक्काट मिटाने के चक्कर म किहीं दूसरे चक्कर म फँसा हुआ था उस समय मरा मित्र या ही आसपास मेंडरा रहा था कि एक बडा माप उसे अपने साथ लिवा ने गया था। उसे अपने साथिया मे तरह तरह की यातनाएँ दिनवाता रहा था। अंत मे उमने जेब पर डक मार उस आजाद कर दिया था।

इधर मर माये के माय जा काना जूता मटा था भरे सारे पते उनके पताव म घरवा लिय गये थे।

मेरे पाक म बाहर आत ही मरा मित्र मुझे मिन गया था। अब इस महा नगर म और रुकने का कोई औचित्य हमारे सम्मुख नहीं रह गया था। रात आठ बजे गाणे खाना हाती थी। हम चार के करीब ही स्टेशन की

और रंगने लगे थे। हमारे साथ नडक भी रेंगने लगी थी और किल को लम्बी दीवार भी। दीवार से मटा हुआ कोई बड़ा पड था। उनका छोटे-छोटे पत्ते पूरी तरह सूखे हुए थे। पड के नीचे एक नडका छड़ा था। उसके बंधे पर एक बहुत बड़ा मत्ता माथला झूल रहा था। एक हाथ में विशूल जमी कोई लम्बी तार थी। दूसरे हाथ में मुतहरी जजीर थी। सामन एक रंग बिरंगी पिटारी पडी थी।

'बाजीगर यह शब्द हमारे अन्दर फूटा था। मगर मुह को फाडकर बाहर नहीं निकल सका था। जिधर का मुह उठाने घुमान एक ही इबारत पढ़ने की मिलती—दरवाजा खिडकियों पर दीमानी पर साइन बाडों पर—'खामोशी तोड़ना मना है।

मगर लडका हम दबकर एक फीकी मुस्कान बिखेरता हमारी आर बढ आया। उस देखकर मुझे याडा बल मिला—'क्या तमाशा दिखात हो?' कई कई घण्टा की चुप्पी के बाद मेरे मुह में निकलने वाला यही पहला वाक्य था। इन स्थिति में जैसा खबर हाना चाहिए, वसा ही था।

वह उदास मुस्कान में हमी भगत हुए थोडा झुका। एंडियां घसीटता हुआ जरा पीछे का खिसका, अपने हाथ की तार का जमीन पर बिटाकर रंगीन पिटारी ती तरफ बढने लगा—'क्या, क्या तमाशा देखना पसन्द करेंगे?'

मैं अपनी जेबा में हाथ डालत हुए अनन दोस्त की सलाह जानने के लिए उमकी ओर पधराई हुई नजर फेंकी।

दास्त ने भी अपनी जेबा में खाली हाथ निकारत हुए 'न' का संकेत कर दिया।

लडका निराग होकर आर स्पष्ट रूप में मुस्कराने लगा। हम लोग चलने के लिए जरा हिले। इस वकन मेरे मस्तिष्क में एक ही बात बस रही थी कि बिना टिकट यात्रा करने के लिए 100 टो० 100 ई० के सामने गिड-गिटाना पड़ेगा। यह बताते हुए कि हम नुट चुब हैं और मैं ग्लव में काम करता हूँ। यह सब मेरे स्वाभिमान के एकदम प्रतिकूल था।

इतने में लडक ने मेरा हाथ धाम लिया—'देख लीजिए ना तमाशा। कोई ज्यादा पस नहीं लगेगे।' वह विचित्र मंच पर मेरे पुरापुराण जा रहा

था। शायद उनके यह बाल उमकी जगह जगह से फटी कमीज के हर भाग से निकल रहे थे।

हम क्या उत्तर देते? हमारे पास था ही क्या! न शर्त और न पैसे।

हमारा चेहरा पर यथावत भाव देखकर उसने जाड़ा—'बेशक अगर आप चाहें तो बिलकुल कुछ भी न दीजिए। मगर तमाशा जरूर देखिए। सवेरे मैं एक भी आदमी ने तमाशा नहीं देखा। अब शायद आपका दूधकर आ जायें। सोचिए ना। मेरा बक्त कैसे कटा होगा। या मेरी रात कस कटेगी।

मेरी जबान कुछ कुछ खुलन लगी।

'कब से इस शहर में है ?

'कोई आठ-दम साल से।'

'क्या यही सब करते हैं हर रोज ?'

'पिछले आठ दम साला से यही सब।'

'बहुत रंगीन खेल दिखाता हैं।'

आज शहर बंद क्या है ?'

'मुना है बड़े आदमिया में टक्कर हो गयी है।

'कौसी टक्कर ?

उन्होंने अपने अपने आदमिया के गुट बना लिये हैं। और रडियो वाले कह रहे हैं दा गुटा में झगडा हुआ गया है।

'दो गुट क्या लडत है ?

मैं क्या जानूँ। आप ही बताइए ना।' उमका भातापन बदमूरती की हल तक पहुँच गया। कुछ लोग कहते हैं य बड़े-बड़े लोग अपनी दुनिया रंगीन करने के चक्कर में बाजारा की रौनक छीन लेते हैं। और हमारी रोटी

हैं मैंने बीच में टक्का क्या कर बाजार खुलेंगे ?

कह नहीं सकता। आप विश्वास करेंगे ऐसे दिन मुझे निराहरी के टपड़े में भी डगबने लगन हैं। मगर गाली चनी थी। कुछ आदमी मारे गये। बाकी सब अभी तक माय पडे हैं।

कुछ लम्हो तक मौसम के मुताबिक हममे बीजारी समाती चली गई।

“अच्छा तो तमाशा शुरू करूँ ” वह फिर से मुस्कराने के धूल से अधिक कुरूप हो उठा। धूलें में से एक सफेद धुला हुई टोपी निकालकर पहन ली। फिर अपनी पिटारी की ओर बढ़ा।

मैं आंख से अपन दोस्त को इशारा किया। शायद वह इसके लिए पहले से तैयार खड़ा था। पलक क्षणवत् ही वह लडक के हाथों पर उछलन लगा। मैं भी आगे बढ़कर उसकी गरदन को पैरा से रौदन लगा पिच्च-पिच्च खून के कुछ धब्बे उड़े और हमारे कपडो पर छा गये। कुछ मिनटा में लडका जमीन पर लुडक गया। धूलें और पिटारी में से हम कुछ घास नहीं मिला। सुनहरी जजीर को घुमाते हुए हम जागे बढ़ गये। कराहती हुई आवाज ने हमारा पीछा किया तमाशा तो देख जाते। उमी वक्त चार सिपाइ हमसे कतरात हुए निकल गये। लडक की आवाज घूमती हुई सुनहरी जजीर के साथ चमक उठी—देखा तमाशा।

हम तेजी से भागने लगे। एक बड़े नाल के किनारे किनार। उसमें से सूरज बार-बार हमारे मुह पर चपटटा मार देता। बिल्डिंगों और पड उलट होकर विपरीत दिशाआ में भागे जा रहे थे—देखिए, तमाशा शुरू हो रहा है। कुछ हमशकल तोग खून से लयपथ नजर आय। हम गलें लगाते हुए आगे निकल गये—देखिए साहवान, तमाशा शुरू हा चुका है।

सामन हैंड पम्प नजर आया तो राहत मिली। हमारे हलक दा बूद पानों को तरल गये थे। परतु पानी का रंग लाल था। इससे हमारे मुह भी लाल हा उठे—देखिए तमाशा।

जस-तस लुडकते हुए स्टेशन पहुँचे। पता चला आज गाडो नहीं जाएगी। कुछ समाज विरोधी तत्वों ने रेल लाइना के साथ खिलवाड किया है।

‘जाइए नहीं मेहरवान और इतमीनान से तमाशा देखिये।’

‘मरी नौमरी का क्या होगा?’

‘मेरी बहन की शादी का क्या बनणा? मी कहेगी—भगाडा। साट पैसा से शहर में मुह काला कर आया है।’

हम बस अड्डे चने गय । बस चलने वाली थी । भीड थी लेकिन हमारी तरफ देखकर लोग घबराकर इधर-उधर छिटक गये । हम मजे में ब्रठ गये । कण्डक्टर न टिकट नहीं पूछा ।

घर आकर पत्नी का सारा माजरा वह सुनाया तो वह राम राम कहती हुई कान पकडन लगी— आपको कसे कैसे सपन आत है ।”

## अपना-अपना पक्ष

एक तो तीन अब अधिक उत्साह में स्वेटर के घर बुनती हुई उँगलियों का तेजी से दौड़ाने लगी थी। फटे पर फटा प्रठात टुए लग रहा था जैसे किले पर किला फतह किया जा रही हूँ।

कोई दशमीय मजिन निकट आन लगती है तो मनुष्य ब्रह्म उद्वेलित हो उठता है। उत्सुकता उत्कठा दुग्ने वेग से उसे उड़ान लगती है। अत्यधिक थकावट के बावजूद उसकी गति तीव्रतर हो उठती है।

सुबह से नाश्ता नहीं किया था। नहाई भी नहीं थी। बस उठते ही स्वेटर बुनने बैठ गयी थी। कालेज भी नहीं गयी थी। सब घर वालों ने मुझाया था कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए। नई-नई लेक्चरशिप मिली है। शुरू से छुट्टी लेने का पुरा प्रभाव पडता है। किन्तु एक अदम्य उत्साह था। आत्मविश्वास की कोई धुन जैसे मेरे अंतर में बज रही थी, जिसने मुझे बाहरी जगत से काट ही दिया था।

प्रतियोगिता में स्वेटर भेजने की तिथि एकदम निकट नहीं थी दो-चार दिन की और देरी हो जाती तो कोई फल नहीं पडता किन्तु अपने द्वारा निर्मित मूर्ति को शीघ्र से शीघ्र देख पाने की लालसा बहुत ही विचित्र होती है। कुछ दिन अपने सामने रखने छून के बाद ही उसे बिगाई देने की युक्ति तकसगत ही थी।

थाड़ी-थोड़ी देर में अधुरे स्वेटर को ही जपन कघा पर डाल लेती। आदम बंद शीगे में निहारने लगती। फिर जैसे अपना को झटका देती।

और फिर से तनाइया की दौड़ आरम्भ हो जाती।

शाम सवा चार का समय था जब स्वेटर पूरा हुआ, किन्तु खशाक स्थान पर मन कुछ कुछ जैम अवसाद की भावना से भर उठा। घर पर कोई भी नहीं था। मम्मी पापा मविम पर तथा भाई-बहन स्कूल वालेज। कलाकृति का देग्न वाला कोई नहीं। तभी मैं मौमम के प्रति सजग हुई थी। ठंड बकायदा छिडकी के रास्त से अंदर आन लगी थी। मैं छिडकी बंद करने की सोच ही रही थी कि कुछ क्षणा के लिए हकी बकरी रह गयी। कोई आकृति गिन्की से सटी खड़ी थी।

मैंने आंखा को मला और शीघ्र ही सँभल गयी। कोई लडकी थी। पहचान नहीं सकी। दिमाग पर जोर डानन पर लगा शायद कभी-कभार इसे अपनी गली से गुजरते देखा है। वस। इतना भर परिचय कोई परिचय नहीं होता।

मडम "वह हूँमन लगी— हाय इतनी तमयता। बाह इतना सुन्दर डिजाइन—विष्व की मखमल पर जड देने का अहसास हाता है।"

वस। अघे को क्या चाहिए वाली मरी समस्या थी। मैं प्रशंसा ही तो सुनना चाहती थी। घरवाला के मुह से, या किमी के भी मूह से।

आइए-आइए अंदर आइए ना।'

थकन फार काइड इचिटेसन। मैं तो कितनी देर म खड़ी थी आपकी एकांत माघना म विघ्न क्या डालती भला।' कहत-कहत वह दरवाजे की ओर बढ गयी और मैं फुर्ती से दरवाजा खोल दिया।

'क्या क्या वास्तव म यह डिजाइन आपको बहुत-बहुत अच्छा लगा? मन उसकी ओर स्वेटर बढान हुए वाम्य को पूरा किया। चाहती थी कि कोई त्रीस बार इसकी मराहना करे।

वह मुक्त बठ स स्वेटर की डिजाइन और सफाई की बारीकी से प्रशंसा करती रही। फिर पूछा— यह डिजाइन आपने कहाँ स लिया मडम?

किमी मे नेन का मवान ही पैदा नहीं होता भर लिए," मैं स्वाभिमानपूर्वक कहा—'यह मेरी मौलिक कृति है।

‘यदि आपको एतराज न हो ” उमन थोड़ा हिचकिचाते हुए कहा—  
‘मरा मतलब है मरी मम्मी इस देखकर बहुत खुश होगी। अभी शीघ्र  
ही चोटा दूंगी।’

अब मुझे दूसरी प्रशंसा उमकी मम्मी से मिलने वाली थी सो  
पुनर्विस्तार से बोल उठी— ‘जरूर-जरूर। वस जग जल्दी भिजवा  
देना। पूरा बना हुआ स्वेटर तो मेरे मम्मी पापा ने अभी नहीं  
देखा।’

‘आप चिन्ता न करें मडम,’ उसने स्वेटर अपने बायें बाजू पर डाल  
निया और ‘अच्छा’ कहते हुए चले दी।

मुझे न जान बघों, उमकी चाल में लापरवाही का सा आभास हुआ।  
मैं दुश्चिन्ता में घिरे गयी। क्या तनी आसानी से बिना उमका पता  
ठिकाना जान स्वेटर उसे पकड़ा बठी थी ?

फिर माचा। कुछ नहीं। एसा वान सा अधर मचा है। निकट ही  
गहती गगती है। जरूर मुझे पहचानती है। तभी ता बात बात पर  
महम मडम कर रही थीं। वह मरी सम आयु थी। हा सक्ता है एकाध  
बप छाटी हो।

मम्मी-पापा घर आ गये ता उनके लिए चाय बनाने लगी। छोटा  
भाई स्कूल में जाते ही नाश्ते के लिए जिद करने लगा ता उमके लिए  
आलू के चिप्स तयन बठ गयी। लकिन रह रह कर मस्तिष्क में कुछ  
बचाटना रहा। दरवाजे की हर हरकत से चौकती रही। घरवाला को  
कुछ नहीं बताया, क्याकि मेरी जरा सी गलती पर मेरे भाई बहन मेरे बग  
का ही मजाक उठाने लगते थे रही बुद्ध की बुद्ध। क्या लेक्चरर बुद्ध  
गहा होत दूसरी आर से नारे जैसे प्रति उत्तर गूजन हात ह—यहुतेर होत  
हैं। एव अपन ही घर में देख लो ना। इसलिए मैं मिटपिटार्ड-सी उदास  
और चुप साधे थी। इतजार और निरंतर इतजार।

रात का जब डाइनिंग टेबल पर खाना लगाने गयी तो सहना बहा  
स्वेटर को उपक्षित पडे पाया। खुशी से उसे अपन माय चिपका लिया।  
गुन्सा भी आया कि किसी ने मुझे बताया तक नहीं। पूछने पर छोटे भाई  
ने स्वीकार किया कि आधा घंटा पहले जब वह गली में खेल रहा था तो



एक आत्मी इम दे गया था जन्दी म उमने एम डाइनिंग टेबल पर हा  
ग्य दिया था और फि म मेलन में नत्र कुछ भून गया था ।

खर, मन चन की मांम ली । बई तिन तत्र म स्वटर को जस अपन  
म चिपकाय फिरती रही । जगह जगह स प्रशना लूटन व लालच म ।

अतिम तियि स दा दिन पूव ही मैं एमे प्रतियोगिता म भेज नवा  
थी । इमक राद मैं लगातार बई बई मप्ताहा तक परिणाम के लिए  
बेचन बनी रही । दिन गुजरन जान और दमके साथ मरा विश्वास  
दह रूप धारण करता जाना कि हो न हो प्रथम पुरस्कार मुचे ही मिलगा ।  
मग बनाया जिजाइन दतना मुदर तथा मौलिक है कि किसी वा हो ही  
नही सकता ।

एक तिन मचमुच डाकिय न मेरा नाम नेकर पुकारा ता मर शरीर  
वा रफ्तचाप एकाएक तज हा उठा । डाकिया एक सौ रुपय का नोट तिय  
खडा भगी प्रतीक्षा कर रहा था— 'बटी, यहाँ दा जगह हस्ताभर कर  
दो ।'

मैं पन लन कमर म वापस लपकी—तो आ ही गयी मैं अब्बल ।  
प्रथम पुरस्कार व एक सौ रुपय की ही ता घोषणा था ।

म कूपन और नाट को दोना हथलिया म लिय पलग पर आकर गिर  
सी गयो । अब तक मरा दिल जस किसी तज यत्र द्वारा बज रहा था ।

विन तीव्रता से यह सब हुआ—जस ख्वाव—डाकिया—उसकी  
आवाज । पन—हस्ताक्षर । रुपय । कूपन ।

अब मैं पहली बार नचेत हुई ता मुझे कूपन देखन का ख्याल आया,  
देखे क्या शब्द लिखे है । कम्पनी की माहर वही नहीं थी । केवल सौ रुपये  
और अनुराधा ही लिखा था । वस ।

अर यह किसका मनीआडर है । मैं बुरी तरह से चाक गयी और  
अब मेर दिल को जस किसी और भारी यत्र का प्रहार सहना पड रहा  
था । मैं कुछ हाफन लगी थी ।

तभा बडा भाइ कालज स क्रिबेट खेल कर लौटा । सारी म्बिटि  
उमे समयायी और गुथी मुलज्ञान म उमकी सहायता चाही । वह बनी  
सापरवाही स बाला— 'तुम्ह रुपय मिल गय । बाकी चीजा का मारो

गोली ।”

बुछ क्षणा के लिए मैं चंचल हो उठी—“बताओ न भइया, यह अनुराधा कौन है ?” उमने मुझे घूरा तो मैं न जोडा—‘कही अपनी ननद को ता प्लीज नही करना चाहती ?”

वह मुसस नोट छीनन को उतर आया। नाक-नाक हुई मगर मैंने शीघ्र ही भागकर नाट को एसी जगह छिपा दिया जहाँ से उसके परिश्रत भी नोट को ढूढन म मफल न हा ।

इस सबके बावजून कुछ एमा था जिससे मैं बुरी तरह स उलझ गयी थी। एक तरह म वेदम हो चली थी।

दूसरे दिन मवर ही मैं लम्बी बस यात्रा की। फैंकट्री पहुँची। निर्दिग कम्पीटीशन के आयाजका से मिली। उहाने बताया कि दमेक दिन पूव उहान परिणाम घोपित कर दिय थे। विजयी प्रत्याशिया को सूचना एव पुग्म्मार भी भेजे जा चुके है। बाकिया के स्वटर वापस भेजे जा रह है। आपका क्या नाम है ?

मैंने नाम बताया।

“तो आप स्वय अपना स्वटर वापस लेती जायें ।’

“ठीक है। क्या मैं परिणाम सूची दख सकती हूँ ।’

“अवश्य ।” उन्हान परिणाम-सूची व मेरा स्वटर मँगाने का आदेश दिया। प्रथम अनुराधा

“यह लीजिए अपना स्वटर।’ वे कह रह थे—“बस आपके व अनुराधा के स्वटर को बुनावट डिजाइन म विशेष अतर नही था किन्तु ” वे रुके— ‘हूँ, बस वह हमे पहले मिला था, सफाई भी आपसे मामूली-सी अदिक अच्छी थी। आपके स्वटर का हमने उसकी अनुकृति मान लिया। मानना ही चाहिए था ना ।” व अग्य से हूँमे और मुसे मदेह की दष्टि से देया ।

मैं अपमान स भर गयी। एकदम वहा से भागना चाहती थी। मगर जन्दी स अनुराधा का पूरा पता देखा ‘ओह ! हमारी ही वालीनी की, वही

घर लौटी तो शाम हा गयी थी। किसी से बात नही की। अलमारी

म दस दस के नोट रखे थे उन्हीं म से दस नोट उठाय और अनुराधा क घर की ओर नपकी। जल्नी-जल्दी मकाना के नम्बर पडे। एक दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खुला।

अनुराधा यही रहती है ?'

हा। आओ। अंदर चली आओ। अपने कमर म है।' उहाने आगन के दूमर छोर की ओर इशारा किया। शायद अनुराधा की मम्मा थी।

मैं उनसे कुछ नहीं बोली। सीधी अनुराधा के कमरे म पहुँची। वह कोन मे टबल लैम्प जला- चुकी हुई कुछ लिख रही थी।

'कौन ? वह एकाएक मुझे पहचान न सकी।

मैं तो जन मुद्द के लिए तयार होकर निकली थी। तन कर खड़ी हो गयी— 'पहचान लो।'

"ओह आप मड म ' जमन त्वर का सयत एक कोमल वनाम गखन का प्रयास किया। मगर आवाज वही काप कर शून्य म दुबक गया।

हाँ मैं ही एक क्षण के लिए मेरी मुटठी और बुरी तरह स जकड गयी। किंतु दूमर ही क्षण मैंने उसे छोला। कस कर रुपये अनुराधा क मुह पर द मारे। नोट इधर उधर बिखर गय। वह उह बीनन लगी— 'प्लीज ऐसा न कीजिये।'

मैं वही से उल्टे पाँव लौटन लगी। उसने नोट छोट मेरा हाथ पक लिया— 'मैं शर्मिदा हूँ। मैंन पहले भी बहूत-भो प्रतियोगिता जीती है। उनमे कई-कई दिन पुलकित होती रहा हूँ। लेकिन लेकिन इन जीतन मुझे पस्त ही कर डाला। उठते बैठत मन भारी हो उठता है।

'कोई धान नहीं, माहम बरगे। जब आदमी नगा हो जाता है तो उन शर्मना नहीं चाहिए।

मैंडम ! लगुएज प्लीज !" वह गुम्से से चिल्ला पडी।

लैगुएज स ऊपर आचरण होता है। तुम्हें कोई घाटा नहीं पडा। तुम्हारा आचरण तुम्ह मम्मान तिनवायगा। परमा पबट्टी म मत्री आयेगे। तुम्हें मच पर हार पहनाये जायेंगे।

मुझे मानूम है परन्तु मैं नहीं जाऊँगी। मैं आपके माम का प्रस्ताव

रखूगी ।”

“टूटा हुआ धागा जुड़ता नहीं । गांठ अब रती रहती है । गुड बाई ।”  
मैं दरवाजे की ओर बढ़ गयी ।

उसने जल्दी से नोट उठाये । “मडम ।” उसने मुझे आगन में आ  
घेरा, “अपने रुपये लेती जाइए । यह मेरे नहीं है ।” उसने नोट मेरे हाथ  
में दिये ।

‘यह मेरा नहीं है ।’ मैंने नोट उसके हाथ में ठूँस दिये ।

‘मैं कहती हूँ इन्हें मैं नहीं रखूगी ।’ उमन फिर से नाट मेरी ओर  
बढाये ।

हमारे वाक्य निहायत ऊँचे और शुष्क थे । उसके घरवालों सब देख  
रहे थे । कुछ कह भी रहे थे, लेकिन वह सब हम सुनायी नहीं दे रहा था ।  
हम दोनों के चहरे बेहूदा हो गये थे । स्वर काप रहे थे । नोट बेशकन हो  
गये थे । मेरे हाथ शिथिल पड गये थे । ज्यादा लडन की ताकत मुझमें  
चुक्ती जा रही थी ।

कब तक, आखिर कब तक यह अवाछिन आदान प्रदान चलता  
रहेगा । मेरी समझ में आने लगा था कि इस प्रकार के कठोर आदान  
प्रदान में नोटा का क्या हथ्र होगा ।

अब की उसने नोट मेरे हाथ में थमाये ता मैंन उन्हें जोर लगा कर  
फाड डाला । एक दो तीन कई बार उनके टुकडे पर डाले । चिदियाँ हवा  
में उडन लगी ।

मैंन दाँत पीसे—“तो यह लो ” दरवाजे से बाहर भागी तो सुनायी  
दिया— तो यही सही ।”

## कवजा

बटी रजना का खत आया था माता जी का भेज दीजिए। इन्हें (पति को) तो वही आगे प्रैक्टिस पर जाना पड़ रहा है। मरी हालत तो आप जानत ह

यानि कि खराब है। क्या हो गया रजना का ?' लगभग पाच छ साल हो चले ये बाबू सतोप कुमार को नौकरी स रिटायर हुए। व शुरु से ही हर कहीं सतोप कुमार की वजाय सतू बाबू के नाम स ही अधिक जान जाते है। तबीयत उनकी बहुत अच्छी ता कभी रही नही। यू ऊपर से ये खुशमिजाज गमजोश लिखने का प्रयत्न करत रहत थे।

मगर अदर ही-अदर किसी गम से घुलत रहत। दूसरो के सामन तो क्या, ये खुद अपने सामन ही, उस गम् का प्रत्यक्षत प्रकट नही हाने देते। एक साध थी, जिनके पूरे होन की आम और सोच ही, समय समय पर उनमे थोडा उत्साह पैदा क्रिय रहती और इमी चाह की पतली डोरी के सहार व जिये चले आ रह थे। मगर अब सवा निवृत्ति के बाद तो वे रह रहकर खाट ही पकडते रहते है। एक तो नौकरी का दबदबा जाता रहा दूसरा जिस गम को, दपनर के काम काजा म कुछ समय के लिए भुत्तार्ये रखन म व सफ्त हा पान ये वह गम चौबीसा घटा का हो गया था।

उनके गार चेहरे पर शुरिया व साय साय काली फुनिर्या भी उग आयी था। थोडे-स सरसा के तल स वह मुह को रगडत रहते। व यही

कर रहे थे कि कमरे की दहलीज से 'भर' की आवाज हुई। गौ किया तो चिट्ठी थी। खाल कर पड़ा तो असमजस म पड गय। रजना ग्टी को एवाणक क्या हो गया ? इधर मेरी खुद की तबीयत ठीक नहीं ह। कंस भेज दू रजना की माँ सूरजी का ?

मानिक भवान ता चाहता यही होगा। वह पडित शुरू से ही किसी अच्छे मौके की पिराक मे है। हो सकता ह सूरजी के चल जान के बाद ऊपर-ऊपर से पलिन बहुत महानुभूति दिखान नगे। फिर डाक्टर म मिल-कर कुछ ऐसी बसी दवाइया दिला द। फिर अस्पताल म दाखिल करवा दे। फिर वन फिर ता उसका काम कितना जासान हा जायेगा 'यही, या ऐमा ही तो कोई मौका चाहता है वह काइया पडित। म पीछे अकेला क्या कर नूगा ! हो सकता है, इस हालत म मुझे पना भी न चन जब मेरा सारा साजो-सामान सडक पर चरनन लगे।

एसी उटपटांग आशकाभा के बानल हमेशा ही की तरह आज भी मन मस्तिष्क पर उमडने लगे। तभी दाता हाया म भारी बल उठाव हुए सूरजी अदर आयी। वह पति के मुकाबले थोड़ी मजबूत कधा वाली जारत जरूर थी लेकिन उठनी उम्र के साथ कुछ-कुछ ढीली पडन लगी थी।

अदर आन ही पति की आर स्यादा ध्यान न देकर, उसी घानी बोना तलाश किया। वहीं धले रखकर मुह स 'ऐह की ध्वनि प्रसारित की, थकावट से नजात पाने के लिए। वह पसान से लव पथ हो रही थी। उसने स्विच बोड का एक बटन ऑन किया पर पछा चालू नहीं हुआ।

। खोज उठी सूरजी, 'क्या हो गया ? क्या बाकई विजली चली गयी या हम मताने के लिए फिर से पडित गिरजाशकर की मेहरी न कोई बदमाशी की है ?'

सूरजी क्या, सत् बाजू भी और दखा-देखी उनके घर के लगभग सभी सदस्य पडित गिरजाशकर की पत्नी को मेहरी ही कहत हैं। उनके अनुसार, सब कुछ होत हुए भी, वह कजूसी के मारे पूरी मेहरी बनी हुई है। कानी कनूची। मुह पर बढती बेशुमार चुरिया। माये से ऊपर और ऊपर दिन ब लिन बिसवते सफेद वात। मेली सनवार और गल मे फटी चुन्नी डाने हुए वह परी मेहरी लगती है, मेहरी। भले ही कहे, अपन-को

मकान-मालकिन ।

सूरजी गुस्से से खँखारते हुए वापस कमरे से बाहर गली में चली गयी। थोड़ा आगे पीछे घूम आयी। इस घन मोहल्ले के आर-छार तक घूरती रही। परन्तु चमचमाते दिन के उजाले में उसकी जासूस निगाह वास्तविकता का पता लगाने में अमफल होती रही। दूर-दूर तक भी कोई ट्यूब लाइट या बल्ब जलता हुआ दिखायी नहीं दिया।

तब वह कमरे में वापस जा गयी, लेकिन बेचनी की वजह से बठन सकी। फिर से कमरे के दूसरे दरवाजे से जाँगन की ओर निकल गयी। बिल्ली के से धीमे कदमों के साथ जाकर कुछ क्षणों के लिए पड़ित जीक कमरे के दरवाजे से सट गयी। अब की वह आँख की बजाय कान से काम ले रही थी। पछा चल रहा है या नहीं ?

अन्दर से चौकन्नी आवाज उभरी, 'कौन ?'

इससे पूर्व कि दरवाजा खुल जाता सूरजी चोर की तरह अपने कमरे में पलट आयी। थोड़ा हाफती हुई। "मर जाओ" कहकर जैसे अपने मुँह को माफ किया।

पति के निकट आकर देखा। उन्होंने कराह कर कन्वट बदली है। कीच-भरी आँखा को अँगुलिया से माफ किया है। आवाज में पूरी तल्ली भर कर बोले हैं 'फिर से वहाँ मर गयी थी ?'

सूरजी ने बड़े निरपेक्ष भाव से पति और इधर उधर दिखरी चीजों पर नज़र डालते हुए कहा 'महरी का स्थापन करन गयी थी। मैं कहा देपू तो सही चुडल ने फिर कही हमारी वाली लाइन का फ्यूज ता नहीं निकाल लिया। उसी के कमरे तक गयी थी। पछा तो नहीं चल रहा। यह भी तो हो सकता है उनके बिजली तो हो मगर बजूसी के मार बचन कर रही हो।

'ठीक है, ठीक है' कहकर मनोप कुमार थोड़ा रुके साँस उतर आगे बोल, 'कमी गिफ कमी बहान से, जब बिजली चली जाती है या बहानी बदल देते हैं तभी हमारी बिजली की बचत हो पानी है।

सूरजी ने अब तक भटमैली माहो उतार कर दरवाजे के ऊपर टॉप में दी। अब यहाँ ही मन्मन पेटीकोट के माथे गुन्ठर पर पर बठ गयी।

सामने मन्त्रिणा को फर्श पर विखेर दिया। कुछ दान मेमाना क लिकीकी को दीवार क सहार लगाती हुई महंगाइ-राग पर तान दे दी, 'कुछ भी नहीं आता। चाहे जब म कितन ही रुपये हा। सा ऊपर वाले की जो मेरे पास पाच के सिक्के का छोडकर कुछ बचा हो। आपकी दवाई की शौशी भी नहीं आयी।'

"वह तो मैं खद ही मना कर दिया था। क्या फायदा फिजूल म पसा उडाने का। मेरा राग ता नित नया और हरा रहता है। जब सूखता है कुछ रोज के लिए, अपने आप ही सूख जाता है।

'आपको भी तो सुखाता जा रहा है। कौन-सी कमी है आपका। ढग से इलाज कगे। सूरजी एक लडकत हुए आलू की ओर लपकी।

'उपर वाले की दया से, कमी ता शुरू से ही नहीं रही, लेकिन अब इस उठती हुई उम्र मे क्या ताजा खून बनेगा। दूसरा इस पडित और उसकी महरी न भी तां हमार नाक म दम कर रखा है।

"अजी नहीं," सूरजी हसन लगी, 'व तो खुद ही मार माहल्ले का कहत फिरत है कि हमी न उनके नाक म दम कर रखा है।"

यह भुनकर सतोप कुमार के चेहर पर घुशी की हल्की-सी रखा तर गयी, 'बला अच्छा है। व इसी तरह घुलत-सडत घुलत हो जाएँ।' वे थोडा खास और उठकर बठ गय। फिर सहमा कुछ यात्र करत हुए बोले, 'सुनो, रजना की तबीयत ठीक नहीं है। बुलाया है।

"क्या हुआ उमे? सूरजी न घबरा कर पूछा।

"अभी-अभी चिट्ठी आयी है" उन्हाने सूरजी को पत्र दे दिया, "यह देखो।"

सूरजी जल्दी अल्नी इमारत पठ गयी, उतावलपन के साथ। फिर थोडी राहत की सांस लेकर हँस दी "आह आप आदमिया को कुछ पता तो हाता नहीं। बान की बतगड समय लत हैं। उसके वच्चा होन वाला है ना तभी बुलाया है। नीचे यह भी लिखा है, कि आप दाना साथ ही आ जाव तो ज्यादा अच्छा रह।'

मत् वादू न भी थोडी चन की सांस ती पर साथ ही उबल भी पडे, 'नादान हाथी कडाव बर गिरा है। गिरा यह से केरी बोली गयी बर।



के सारे हालात भूल गयी। क्यों हमें मरवाने पर तुल रही है।”

सूरजी ने धीमे स्वर में उहँ रोका, “किन्तु किस स बिगाड़ेंगे आप। न पहुँचने पर रजना तो बुरा मानेगी ही। दामाद साहब और नाराज हो जायेंगे। दोनों बेटे पहले से ही इसी बात को लेकर नाराज हुए बैठे हैं। प्रकाश ने तो पूरी तरह से किनारा काट लिया है। भूल ही गया। उस जन्म दिया पढाया लिखाया पहले लड़के अलग हुए, अब लड़की दामाद भी उसी बात को लेकर हाथ से चले जायेंगे।”

तो मैं क्या करूँ” मत्तू बाबू हारे हुए स्वर में बोले। “इन नागना का तो हाश है नहीं। जायदाद किस तरह से जोड़ी जाती है बोनी तफ्तीफ तो उठानी ही पड़ेगी। किशनु को ही देख लो। अभी तो हो-टन म रह कर ट्रेनिंग कर रहा है। पूरा बागी हो रहा है।”

हा-हाँ” सूरजी ने बात को निष्कर्ष की मीठी की ओर बढ़ाया। “वह तो हमी को गलत कहता है। उस मार को भी वह नहीं भूला जा एक मुजह, उठते ही उस पर पड़ी थी। आप आत्मी भी तो पशु बन जाते हैं। एक ही कमरा है तो जग मन्न रखो। रात को उमन सत्र देख लिया था। साफ-साफ बचने लगा। बाकी सभी भाई-बहन भी तो देखते हैं। बस किसी तरह दम माघे पड़े रहते हैं। बिल्की खाने भर रह रहे हैं हम सब।”

बशम है बशम बोखला गये मत्तू बाबू। मुह म घाड़ी साग निश्चल पड़ी।

सभी दरवाजे पर आहूट हुई। आगतुक को देखा ता मुह का ऊपर अघिन बन्ना हो गया। पुरानी स्मृतियाँ याद हो आइ। यही बट ध्यक्ति है आ एक तनी तनी बार, अपन माधिया को लेकर उहँ ओर उनसे परमातो का हाती बहागे पोटने आया था। फिर भी तिसी तरह मर ना उहँनि नियंत्रित कर लिया आइए रगतगम जी। बटिया।

बटिया बन्ने के साथ उहँनि इधर उधर दगा। हम कनी बटाएँ। बीमागी तथा बट स्मृतियाँ की बन्नाट अनायाम पाना पर निश्चल पडा। कुरी का हर दान बपने पाटनिया म क्या पेर रहती हा?”

सूरजी न बिना कोई प्रतिवाच बिज कनी कनी कुरी म गगा मन्मन मि लिया। उस जन्मे तम शादा और रगतगम क मामन रख

दिया। फिर दरवाजे में अपनी साड़ी उतार कर पहनने लगी।

‘देखिए रगताराम जी, आप पड़ित जी के दामाद हैं। इस राते हमारे लिए भी वैसे ही आदर के योग्य हैं। पिछली रातें हम भूल गये थे। पर रात को आपने पुलिस का बुलाकर अच्छा नहीं किया। एस हमने यह भवान छोड़ना होता तो कब के ही छोड़ चुके हान।’

‘ओह अक्ल! यह कोई घरराने की बात नहीं। वह दाना तो मेरे पुराने साथी क्या कलास फँलो है। इतना टुच्चा को ऐस ही पुलिस की नौकरी में जान ही शराब की लत लग जाती है। जिद कर बैठे तो मोंगा कर देनी पड़ी। आपकी सौगंध अगर मैंन जरा-भी नी टच की है।’

‘जय से तुम्हारी शादी इस घर में हुई, तुम्हें जानत है। तुम एन अच्छे लडके व मगर एक बार बाजार में तुमने हमारे विशनु का पिटवान की काशिश की थी। आखिर कब तक भूलें। एसे हमारे भी खूबार आदमी हैं।’

‘भारी अक्ल! आपको कोई गलतफहमी हुई होगी। यही बात मैं अपने फादर इन-लॉ को ममझाता हूँ कि दरार क। बडन नहीं देना चाहिए।’

‘अच्छा छोड़ो इसे। पहन बनाओ ठंडा पिज्जो या गर्म?’

‘कुछ नहीं। कौन सा दूर में आ रहा हूँ। बिजली क चले जाने से आध घुल गयी। सोचा आप लोगो से मिलता चलूँ। रिटायरमेंट के बाद आदमी का सुख-चन की जिदगी गुजारनी चाहिए।’

‘रगताराम जी, यही बात अपने सात मसुर का समझाइय। कोई किसी को दुखी करके खुद सुख नहीं पा सकता।’

‘जमीन तो आप कब की ले चुके हैं। वहाँ बड़िया भवान बनवा कर ठाठ से रहिये। यहाँ जापन कान-सा सुख पाया।’

‘मौ तो है ही बरबुरदार। पर एक जगह रहत रहत उस जगह से जुड़ाव हो जाना नाजमी है। नुना है लख असें के पत्नी को भी जेल कोठरी से मोट हा जाता है। सच पूछो तो मैं यहाँ सुखी हूँ। दुज होगा है तो पड़ित गिरजाधर जी का देखकर जो स्नाहनुम्बाह हमारी बजह से परेशान रहत है।’

‘चला ऐसा ही सही। जैसा चाह फैसला कर स।’

‘यह कौन सी नयी बात है बरखुन्दार। मैं तो हमेशा से तयार हूँ। पिछले पच्चीस सालों से यही मजता रहा है। पहले-पहल उन्होंने खुद ही कहा था—सतू बाबू! हटाओ यह किराया विराया। तुम्हीं ले लाओ आठ हजार म। मन अपना समझकर रिक्वन्ट की—पडित जी, याजी रिआमन कीजिए। छोट-छोट बाल बच्चा वाला हूँ। साढ़े छ हजार। मुनकर वे बोल नहीं बल्कि चीख पड़े—नहीं। चार साल बाद मैं ही बुक गया—ले लीजिए पडित जी आठ हजार। कहन लगे—ब्रक्फ समन रखा है क्या? तुम नहीं जानते। कीमतें कितनी बढ़ चुकी हैं। दस हजार! इसमें क्या शक है महंगाई की भी अपनी पालिसी होती है। माली बढ़ती रहती है। लिहाजा पांच साल बाद मैंने खुद ही डेढ़ हजार बढ़ाकर कहा—तो ले लीजिए पडित जी साढ़े ग्यारह हजार। विगड कर बोल—कान खालकर सुन लो। पूर चौदह हजार। तुम तो मेरे समझदार बेट हा। ऐसे कही सौद होत हैं। बुग नहीं मानना। हमारे पडित जी जरा अडियल तबीयत के हैं। दो-तीन बार मैंने हाथ जोड़कर विनती की, एक कमरा छत पर अपने पैसा का बनवा लता हूँ। साफ नट गये।’

‘अडियल रखा तो दाना तरफ स है। मकान मालिक हान से उनका प्रस्टेज इशू आडे आ जाता है। पर मैं उह भी समझा आया हूँ। रगतगम न सीधे मतू बाबू के चहरे पर धूरत हुए आगे कहा, “जो किराया आप उह दे रहे हैं। उससे छ गुना सूद इसी फ्लैट की कीमत म मिलता रहेगा।’

ठीक कहा आपन। कल ही सतरह हजार मुझसे ले लें। व भी क्या याद रखेंगे। मैं इसी का एक आलीशान रिहायश म तदीत करके सबको चवाचौध कर दूगा।

अबन, यह तो बहुत ज्यादानी है। जानत है आजकल इम कालानी की जमान पाच सौ रुपय फुट डूबन स नहीं मिलनी। इन परना कुत बना भो हुना है।

पहों तो मैं भी करना हूँ। हर बार बात एम ही आगर अटक जाती है। मुम ना आनकरन का जमाना देग हा। मतू बाबू जार बार म

खान्ते हुए उठे और कमर के कोन में पड़ी हुई बाल्टी में से पानी निकाल कर कुत्ता करने लगे।

रगताराम उठ खड़ा हुआ, "अच्छा मैं मनाह करके जापका बनाना हूँ।"

रगताराम के जान ही मूर्खी, पति का ममभान लगी, 'जब जिद छोड़िए। सारी जिदगी इस खानी में गुजार दी। अब तो कहीं खुली हवा में सान लेने की साचें।'

सतू बाबू ऐसे गम्भीर ममल पर जोरत जात को कम ही महत्त्व दत हैं। चुप रहे।

मुश्किल से डेड घटा गुजरा होगा, रगताराम वापस आ गया। साथ में पुलिस इस्पेक्टर था। पिन्तौल लटकाय हुए।

"बैठिए साहब," रगताराम ने कुर्सी ठीक करते हुए उह बैठाया। खुद सतू बाबू के पैतान बठ गया। सतू बाबू उठकर बैठ गये। दरवाजे की तरफ देखा तो दो-तीन मिपाही खडे हुए हैं।

"लाओ यार कोई बोनल निकलवाओ।" इस्पेक्टर ने कुर्सी की बेंक से लगते हुए कहा।

"हटो यार। यहाँ कहीं रखी है। वह मैं पिलवाऊँगा। अपन फादर इन-लों के घर स। हाँ अबल, मैं फादर-इन लों से बात करक बाहर निकला ही था तो यह पूरी चौकड़ी मिल गयी।"

"क्या कहते हैं हमारे पडिन जी?" सतू बाबू ने धोडा सँभलते हुए पूछा।

"अब कोई लबी बात नहीं। आप दो महीने के अदर यह मकान खाली कर देंगे। बदले में मैं आपको दस हजार रुपया दूँगा। इन्ने अपन नये मकान के लिए हमारी तरफ से इमदाद समझिए। बस।"

"मैं सोचूँगा। सतोप कुमार अँगडाई नन लगे।

'अब क्यादा सोचेंगे तो ज्यादा मुश्किल में आ जायेंगे। बताय दता हूँ। मैं कल ही या न म जवाब लेने आऊँगा।'

दतता कहन हुए रगताराम पूर दस्त के साथ चला गया।

उनक जान के बाद मूर्खी ने हाथ जोड दिये। पहल रगताराम की

पीठ की ओर, फिर उह पति के सामने कर दिया, "बस बहुत हा लिया। खत्म कीजिए यह झक्-वक्। कही मचमुच मे शोहदे आप हम पर हाथ उठा दें तो इस बुढाप म मट्टी खगत्र हो जायेगी। न घट यहाँ हैं, न आपके शरीर म जान।"

'हैं मोचना पडेगा। मत्तू वातू फिर से मोचन लगे।' हँ तो घाटे का सोदा।

अभी तो मैं हाथ जाडकर कह रही हूँ 'सूरजी चीज कर बाली, 'मैं तो अत्र की रजना के पास जरूर जाऊँगी। और वापस इस खाती म हरगिज मिर नहीं दूगी। इतना समथ लीजिए, वम।"

सूरजी खाना बनान चली गयी। सतोप कुमार पत्नी का बाई वाजिव जवाब नहीं दे पाये थ। एसे जवनरा पर के पूर माहौल स घिर जात ह। चारा ओर के दबाव से कमकर जम नधु होत चल जात है।

डटे रहो दोन्त। बाखिरी फतह तुम्हारी है। ज्यादातर कोलीग हैमने हुए कहते रहा। कुठ तथाकथित बडे घर वाले सजीदगी म फस फुनात छोड यार। किस भकान नामक जगह मे अडडा जमाये फस पड हो। जब ता तुम्हारा खुद का नक्शा तुम्हारे इस भकान के नक्शे स मेल खान लगा है। थोडा अपन स्टेटस का भी ध्यान रखा होता।'

कई खट्टी मीठी यादें। अपमान के घूट। सतू वातू सोचन लगे तो सोचत ही चल गय।

भकान का नक्शा ता शुरू स तेमा ही था। मगर उनका स्वय का रूप रम अच्छा-खामा था। सूरजी भी सूरज सी दमकती थी। एक प्रकाश था गोली म। 1958 के जासपाम इम अजीबागरीब जगह अडडा जमाया था। तब के हियाब से यह सत्र ठोक था। मात्र एक कमरा। बाहर का दरवाजा ही मेन गेट। निहायत सँकरी गत्री। कमरे क दूसर दरवाजे को पार करते ही एग छाटा बरामन्दा। बरामदे को आधा घेर कर रगोई। आगे जरा-भा आगिन। यही नहाना धोना। जागे मातिक भकान का रनाका शुरू हो जाता है। पानी बाहर गली के मोठ पर लगे सात्रजनिक मल से। शीच के त्रिए आगे दूर तक फनी झाडिमा। बहुत

वाद म रमोई-आंगन के सहारे एक छोटी-सी त्रैट्रिन बनी थी।

सूरजो तो शुरू से ही विद्रोह पर उतरन लगी थी, 'वहा ला बिठाया।' परन्तु धीरे धीरे वह भी पति की लाइन पर आ गयी थी। तब उसकी गोद में केवल एक बच्चा ही था। छोटे से परिवार के लिए यह क्या बुरा है।' आराम से खिचन नगी दम गहम्भ की गाड़ी। जा चीजें शुभ्रम दिक्कत देती थी वही नैतिक अभ्यास म शुमार होकर सहज होता गयी।

कई लाभ भी दीखन लगे थे धीर धीर। जम मन्जी मण्डी का पाम होना। मत्तू बाबू का दफनर भी अधिक दूर नहीं था। हा, अस्पताल फुछ दूर था। दूर ही ठीक। भगवान सबकी महत ठीक रमे। दूर ही रमे अ-पताला से।

शुद्ध लाभ तो तीन महीने बाद लाला कोशिश राम ने समझाया था। लाला कोशिश राम सत्तू बाबू के सहकर्मी थे। सत्तू बाबू के बान के पास अपने मोटे-मोटे हाठा वाला मुंह ने जाकर बोल हा मक्ता है 18/- रुपया किराया फुछ ख्यादा लगे। लेकिन 'इन द लाग रन यह जबदस्त फायदे का सौदा रहेगा तुम्हारे लिए। जत्र यह मकान मुकम्मल तौर पर तुम्हारा हा जायगा। मालिक मालकिन होना दमे के मरीज है। लडका इनका कोई है नहीं। जरा सन्न रखो और डटे रहो।'

जम्तु आज तक जैसे तैसे व उसी सन्न की नीति पर डटे हुए है। धय की नीति जो हमारे मामाजिक आचरण धार्मिक उपदेशा का सूनाधार है। इमी से तप कर देह कचन हो जाती है।

लेकिन कहाँ क्या हा पाया आज तरु? पलट कर पीछे देखत हैं सत्तू बाबू। कहाँ का धय। कब रहा धय। धय तो हर मुकाम पर उनका इम्तहान लता आया है। कब उत्तीण हुए हव उसम। बच्चा के पढने बैठन, मान की जगह को लेकर हर रोज के खगडे। उही का फंसला करत करत उनकी अपनी नाक में दम आ जाता और वे बार-बार बोखला उठन। बाद में लडक लडकिया के कई अच्छे रिश्ते सिफ इसी मकान की बजह म लोट गय। अब दामादा के तान। दामाद ता दामाद, इसी घर म पत्नी बड़ी हुई लडकियाँ तक, उमी घर म कदम रखन म अपनी हठी

जमना है। उसके ता गुरु ने ही बागी हो रहे थे। जब नौकरी लगी तो क्या रुज करे इन पर की जानिव। नूरनी बाहर भन ही मेरी वकालत करती फिर लेकिन घर न मुझे बुरद-बुरद कर मेरा भुरभुरा बना रहनी है। पडिन से लडाई पाडे के बाद जा मोहल्ले के साग मेर साथ सतानुभूति जनान आते ह उही लोगो का मैंन खुद बाद मे पडिन क पास बंठे देया है। पडित का छोटा दानाद कृपानकर वकील है, जो समय समय पर नोटिस भेजकर हमारी शानि भा करता रहता है। साला बन जाया हमारे धर्म की परीक्षा लेने वाला।

सूरजी उनके लिए बिना चुपडी दो रोटिया दाल की कटोरी तथा थोडा ता टमाटर का सलाद एव चाली मे रखकर छोड गयी।

ये धीरे धीरे खाना खाने लगे। सूरजी आयी और अब की चाला म नसोहत भी परोस गयी, "अब की अडना नही। पता नही पुलिस यान थ या गुडे।

"शोषता तो मैं भी हूँ कि फैमला हो जाये। लेकिन 1964 क बा' से आष तक हर घर कुछ हजार का फरक प्रेस्टेज प्वाइंट बन जाता है।"

"जहाँ जानी है प्रेस्टेज जब होली पर भगिन से टटटी डलवा देत हैं। ठीक दरगाजे पर। जसे-तसे ट्रका पर रखा नया-नया टेलीविजन कितनी हसरत से पहले दिन बालूही किया था तो अगला ने विजली काट दी थी। कहा, आटूबर म अप्रैल फूल मना रह हैं। बच्चा का तो क्या अपना अपना मन कितना खटटा हुआ था। सारे उत्साह शोक पानी फिर गया था।"

"जीत के लिए मुर्बानी तो देनी ही पडती है।  
होगी। कृपानकर वकील होकर कुछ नहीं कर  
रंगतराम की भेजा है। हमारा कब्जा होकर रहगा  
इसी भरों तो <sup>तक</sup> म काट दी  
न बनाने दिया कस  
तुम थोडा अ  
आज के जमाना म

स्वग

27

मिनता है। स्टेशन पास, बाजार पास। बाफिन भी पास है।

सूरजी घाडे तीखे स्वर में बोली "अब आफिन को तो जह त नही पढती, अब तो हर रोज अस्पताल भागना पडता है। उधर अपना प्लॉट खरीद रखा है, उधर ही बड़ा अस्पताल बना है।"

'ठीक कहती हो तुम,' सतू बाबू जैसे बचसी ब तहत बोले, 'उम दिन काशिश राम और नारायण वार् हाल पूछन आय थे मुना था क्या कह रहे थे ? जिसे तुम थोड़ी मी जगह कह रह हा इस आज अपने नाम रजिस्ट्री करा लो। कल का हमी से तीन गुना कीमत ले गो।' सतू बाबू खासने लगे।

'अब आराम कर लीजिए। इही लोगो न तो हम सबको खराब किया है। आखिर हम कमी किस बात की है। गाव में भी जायदाद है। पैसा पहल भी था। रिटायरमेंट पर तो और कितना मिला है।'

सूरजी ने वर्तन उठाये और रमोई की आग बड गयी। सतू बाबू उधर ही एकटक देखत रह गय। पहली बार शायद उह लगा, एक नक औरत नक सनाह दे गयी है।

×

×

/

सूरजी, बटी रजना के पास चली गयी। जान से पहले 12 हजार में फमला करा गयी। सतू बाबू ने मकान छोडना बतून कर लिया। पहले 5 हजार। मकान खाली करते ही 7 हजार और। शुद्ध लाभ। पुराने सहकर्मिया की सहायता से नया मकान तजी से बनन लगा। सतू बाबू में जैसे जान आ गयी थी। जिम तिस से बडी शान में कहते फिरत, 'नये माडल टाउन के पास है मेरा मकान। बहुत शानदार बना है। खूब लवा-चौडा। कितनी जगह तो लान के लिए छोडी है।'

छ महीने बाद मकान का मुहूत हुआ। सभी लडके, बहुरें दामाद, बेटियां आयी। बाबू सतोप कुमार बहुत खुश थे। जैसे काई कलाकार अपनी कृति को देखकर मुग्ध हो उठता है, उसी भाव से कह रह थे, 'कोई कमी नही छोडी। सभी आधुनिक उपकरणों से मुमज्जित है।'

सभी आय हुओ से बघाई स्वीकार करती हुई सूरजी बार-बार कह



उठती दखो ना, पूरी कौलोनी भी कितनी बढ़िया है। आस-पड़ान बहुत मम्ह है। उस मकान का तो वे लोग जानबूझकर मरम्मत करवाके नहीं दत थे। दीवारें बदरग। फश टूटा फूटा। चाडू देते रहो मतवा समेटत रहा।

यह सत्र मुन-सुनकर आखिर विशनु अपन का बोलन से न रोक मवा, हम सभी बच्चा को उसी रग में रंगे रखा। अब तो मेरी भी कही बाहर पोस्टिंग होन वाली है।

इस पर प्रकाश न भी ताना कत्त दिया, "अब तो वह जायनाद आप दोनो के लिए काफी थी। यह इतना बडा झकट क्या माल ल लिया?"

सूरजी न उह घूरा तो बाबू सताप कुमार हँसने लगे। वातावरण को हल्का बनाने के लिए बोल "सब ऊपर बाने की माया।" उन्हाने जाकाश की आर जँगुली उठाकर जस नादान बच्चा का समझाया, 'जो चीज दिन वक्त के लिए ऊपर बाल न लिखकर भेजी है, उसी वक्त मिलेगी।'

X

X

X

सभी बेटे-बेटियाँ अपन-अपन घरा का चले गये थे। जान मे पहले प्रवाग सत्र बाबू को पूरी तसलनी दे गया था "पिताजी, अब आप किता बात की चिन्ता न करें बिग वास मेरा अपना आदमी है। मैं बहुत जल्दी यहाँ का ट्रामपर करा लूंगा। रजनी और बच्चे आपकी खूब सबा करेंगे।"

नई जगह। नय लोग। चारा आर हरियाली। दूर-दूर तक फला घुलापन। फिर भी सत्र बाबू घुटन-मी अनुभव करत हैं। मोचते हैं नई जगह जो है। अभी हम एमी जगह रहन के अभ्यस्त नहीं हुए।

यही बात सूरजी भी उह समझाती 'धीर धीर मन लग जायगा। अभी किमी म विशेष जान-पहचान नहीं हुई। सभी तो अपनी अपनी भाग दौड में मगगूल है। हाँ अगर दस माल पहन यहाँ आ वमे हाते तो अब तब एमी ममम्मा न हानी। अब भी मत्र एज्जस्ट हा जायगा। योना बन तो नगेगा ही। आह यह कितनी अच्छी जगह है।'

पत्नी व एम वाक्या म मत्र बाबू अनुप्रेरित होन बाँहा म जस उन्नह भगत हुए पत्नी का हाँन म न जान। वने पत्रग पर ना जात। मत्र तब भी गय नुन मग मग-मा। योनाक। येस्वाद। वमसा।

×

×

×

पाच महीन ही मुश्किल म गुजर थ कि फिर से सभी बच्चे इसी नये मकान म एकत्र हुए थे। सतू बाबू की मौत हो गयी थी।

सूरजी एकदम सूत्र गई थी और सबके सामने खड़ी खड़ी काप रही थी। प्रकाश उस मातृना दे रहा था "मा चिन्ता न करो, मैं बहुत जल्दी यहा आ रहा हूँ। स्पेअर होकर ही आना होता। तार की वजह से जल्दी आना पडा।"

'भैया! तुम्हारी तो हर जगह अप्रोच है। मेरे यही क पक्के आडर करवा दो ना।' किशनु प्रकाश से कह रहा था।

'सब हा जायेगा। देखत जाओ।' प्रकाश छोटे भाई किशनु के कधे पर हाथ रखकर उत्साह से बोल रहा था।

रजना, मा को पकडकर अपन साथ बंठाकर, आखो के आसू छिपाते हुए कह रही थी, 'मा, अब तुम्हारा मन लग जायगा। इनका फील्ड पीरियड पूरा हो चुका है। हम इधर ही आन की कोशिश कर रहे हैं।'

छोटे उच्चे शोर मचाते हुए एक दूतरे का पीछा कर रहे थे। लुका-छिपी का खेल—'हट जा, यह जगह मेरी है।'

सभी, कुछ-न-कुछ बोल रह थे। बुडिया चुप थी।

## वही मोड़

मा एक अमें से बीमार चली आ रही थी ।

दधर जा एक छोटी-नी नौकरी मरे हाथ म थी, वह भी जाती रही । बड़ी बेचैना थी । कई दिना स मारा मारा फिर रहा था । बाल एक-दूसरे में फँस गय थे । कपडे धोने का होंग ही नहीं था । और न ही था शायद घर म साबुन का छोटा मा टुकडा ।

फटेहाल मकसूद के पास पहुँचा । अब सिफ यही मकसूद एक सहारा दिखायी दे रहा था । बाकी सब रिश्तेदार या दोस्त अपने अपने हिसाब से अपना फज पूरा कर, अलग हो गये थे । रोज़ कोई किसी को किस हद तक दे सकता है ।

मकसूद कुछ देर तक खडा सोचता रहा । फिर बोला, 'तुम असद चौधरी के पास जाओ ।

कौन असद चौधरी ?' मैं उतावली से पूछा, 'मैं तो उह जानता नहीं ।' मेरी आवाज फट रही थी ।

'ज्यादा जानने की जरूरत भी नहीं । उनसे एक बार मिलो तो । अपना खुनामा कह सुनाओ । वे हर जरूरतमद की मदद करत हैं । मैं तो खुद पहले से ही नाजुब दौर से गुजर रहा हूँ वरना कहते-कहत मकसूद रफ गया ।

जानता हूँ । मकसूद झूठ नहीं बातता और न ही कोई गलत राय ही देगा ।

‘अमद चौधरी’ लगा बहुत पहले वचन में सुना हुआ कोई नाम है। बहुत-स नाम एक जमे हात हैं मिलते जुनते, मगर हकीकत यही थी कि मैं किसी अमद चौधरी का नहीं जानता था और न ही इस वक्त मरे पास पसोपेश में पडन की कोई गुजाइश ही थी। जल्दी में असद चौधरी का पता ठिकाना पूछा और आगे बढ़ गया।

कई गलियाँ के मोड़ काटता आगे पीछे घूमता घुमाता आखिरकार असद चौधरी के घर तक जा पहुँचा।

भारी भरकम पुराने किस्म का बड़ा दरवाजा था। दो-तीन बार कूड़ी बजायी, तो अदर से खासी के साथ एक आवाज उभरी ‘कौन हा भाई ? जने आओ। दरवाजा खुला है।’

मन्मथ दरवाजा खुला था। थोड़ा जोर लगाते ही चर की ध्वनि पैदा हुई। अदर पहुँचने का रास्ता निकल आया।

आरामकुर्सी पर अमद चौधरी अधलेटे सुस्ता रहे थे। उन्होंने सिर उठाकर मेरी तरफ देखा, ‘कहो, कहाँ से आय हो?’

मैंने हड़बड़ी में अपना घर बार का ब्योरा और उमके पास आने का मकसद जाहिर कर दिया। मुझे खुद लग रहा था कि मेरी जवान में कहीं हक्लाहट आ शामिल हुई है। कुछ शब्द पूरी तरह या अधूरी तरह गायब हो रहे हैं।

“अनवर हुसेन बताया, तो तुम उनके वच्चे हो। मैं उसे नहीं जानता था, बाद में जान गया था। खैर, बैठो। हिचकिचाने की जरूरत नहीं। तमल्ली से बातें करो। अरे मैं तो बठे-बैठे अकड़ गया।”

असद चौधरी कुर्सी से उठ खड़े हुए। अपन लम्बे कमरे में चहलकदमी करत हुए फिर बोले, ‘हाँ, अब कुछ गर्मी आयी है। शायद सूज बाहर निकल आया है।’

उहोने आहिस्ता आहिस्ता ओवरकोट उतारा। उमे सामने की दीवार पर लगे एक बड़े कील पर लटका दिया। ऊपर एक औरत का बड़ा फोटो-ग्राफ टँगा था। कुछ देर यू ही उसे देखते खड़े रहे। कोट उतार चुबन के बाद वे एकदम से दुबले पतले लगन लगे थे। हाँ उनकी लम्बाई से लगता था किसी उम्र में तगड़ी काठी के इंसान रहे होंगे।

‘तुम्हें यहाँ किसन भेजा है ? लगा जैसे तत्वीर में पूछ रह हो  
इसे यहाँ किसन भेजा ?’

मकसूद अहमद न ।

मैं आगे कुछ और बालता इसके पहले उद्धान दूमरा सबाल कर  
दिया यहाँ पहुँचन में कोई दिक्कत तो पश नहीं आयी ?”

‘हुई । कुछ लोगो से पूछना पडा । मगर अब देखता हूँ, रास्ता बहुत  
मुश्किल नहीं है । इधर से कभी एक-दो वार गुजरा हूँ । दूर जरूर है ।  
दरअमल हम तो दरिया के उस पार रहते हैं ।’

उद्धान हूँ हूँ हूँ हूँ किया जम पूरी तरह समझ गया हा । “तुम्हारा  
गता खुशक-भा लग रहा है । कुछ खाओगे ? सामन क दुकानदार को  
आवाज देकर कुछ मँगाए लता हूँ । चाय अगर तुम हिम्मत करो तो  
बावर्छाखान से खुद बना लाया । घर की चाय पीन का हमारा भी मन  
कर रहा है । मेरी तो ताकत जवाब दे चुकी है वरना हरगिज तक्लीफ न  
देता । पर हो तो अपने ही बच्च ।

“इसमें तक्लीफ कैसी ? ’ कहता हुआ मैं रमोईशर में चला गया ।  
स्टाव में पम्प मारने लगा । उस पर खासी धूल जमी हुई थी । उमे बुरेदता  
रहा, चाय भी बनाता रहा और सोचता भी रहा कि यह बूढा मुझे यू ही  
टान तो नहीं रहा । चाय का कप पिलाकर चालू तो नहीं कर दगा । अजोब  
आदमी है । मैं इसका बच्चा हूँ । मेर वालिद को जानता भी था । नहीं भी  
जानता था । मगर मुझे उमके लिए इस पहिली को पहिली बन रहन में  
ही फायदा नजर आन लगा । लगता है बूढा मठिया गया है । मुझे रुपये दे  
दे । बस । इमरार कर नहीं सकता है । इनजार करना लाजमी है ।

मैं चाय की ट्रे लेकर कमरे में दाखिल हुआ तो सेण्टर टबल पर मिठाई  
और नमकीन की नौ बडो प्लेटें रखी थी । माय ही पपरवट के नीचे कुछ  
नाट समक रह थे ।

ध मुझे जार द-द्वार मिठाई खिनात रहे । चाय का आधिरी घूट लन  
हा उद्धान रुपये उठाये और मरी जेब में डाल दिये—‘चार मी ही बहे  
थ ना । अगर ज्यादा की जरूरत हा ता दुपहर वात् चल आना । इतना  
कर रगूंगा ।

‘बहुत-बहुत मुद्रिया जनाब । फिलहाल इतन से ही ~~गुण~~ वन नान ।  
 की उम्मीद है । नहीं चाहेंगा, जापका और तकलीफ दू । ~~नोक-खन-में-उम~~  
 हद तक दबना भी नहीं चाहता कि उठान म दिक्कत-मणु आयेंगे । ~~इस-सूत्र-के-प्र~~  
 से भर गया था ।

‘मैंने तुम्हारे सामने कोई म्याद या शर्त तो नहीं रखी । बातों में उम्मीद  
 की तरह होशियार हो ।’ उनका स्व-एकाएक मन्त हा गया ।

मैं पछा होकर उठ ताकन लगा । तभी हवा का एक ठंडा पाका  
 अंदर आया । व ओवरकाट की तरफ जड़े मग-उपर टेंगी तस्वीर की  
 तरफ निगाह जम गयी ।

मैंने चाहा मैं ही उ-ह काट पहना दू । मैं जरा जागे भी उठा । मरी  
 आहट पाने की वे चीख पड़े—‘जपना आर बदन जाया नहीं बने । जरा  
 भागन नजर आओ । जोर कुछ जरूरत हो तो प्रणव चन आना । बरना  
 शकल मत दिखाना । व कापन नगे थ ।

मैं हरान होकर चन दिया । अपमान के घूट भरता हुआ । एसा मैंने  
 क्या कह दिया जो चाधरी माहव न मेरी सरामर तहीन कर दी । वस्त  
 का तकाजा था । बरना सारे नोट उनके मुह पर दे मारता । बचपन में ही  
 वाप से जुदा हो चुका था । मैं ही मर निण एक बडा महाराग थी ।

मैं उमी रास्त स गुजर रहा था । पता नहीं मकमूद कत्र में मेर साथ  
 साथ चल रहा था । मैंने पहनी बार उससे सुना— लगता ह काम नहीं  
 बना । असद चौधरी किमी को खाली हाथ तो नहीं लौटात । कई दप पूव  
 उचित चिन्तिमा के अभाव म इसकी बीबी दम तोड गयी थी । जब कोई  
 खास आगे पीछे न्ी है । अपन पर खच बहुत कम करत ह । जब अच्छी  
 पेशन मिन रहो ह । मगर शायद तुमन बहुत प्री रकम माग ली हागो  
 या ।

‘नहीं मुझे पूरी रकम मिन गयी है । सिफ जल्दी म हूँ ।’ मकनूद की  
 बात पाटता हुआ मैं उससे बहुत आगे निकल गया ।

डाक्टर की दुकान पर पहुँचा, तो उसने मेरी तरफ ध्यान नहीं दिया  
 और मरीजा से बातें करन लगा ।

मैंने पहले फुर्ती में नोट निकाल । डेढ सौ गिनकर उसकी तरफ बढ़ा

दिये तो किंचित मुम्कान उमके हाठा ५२ उभर आयी— कहिए क्या हाल है आपकी बलिदा का ?”

डाक्टर साहब वह उमी तरह ह। फायदा जहर हुआ था, तकिन बीच म दवाई के स्व जान स हालत अपनी नाजुक जगह पर आ पहुँची है। मर माय चलिए।’

घरराइए नही’ डॉक्टर न जल्दी स आलमारी से कइ कप्पून, इजेक्शन निकाल और मुझे अपन स्कूटर के पीछे बँठा लिया।

माँ वहाश थी। पडास की कोई औग्त उह सँभाल रही थी। डाक्टर न नब्ज देखी। बगल म थमामीटर लगाया। इसके बाद इजेक्शन। लगभग दस मिनट बाद माँ कराह उठी। हमने करवट बदलवाने म महायना का।

अब बिलकुल कोइ डर नही रहा, डॉक्टर न कधे थपथपान हुए मुझे आवस्त किया बहुत कीमती इजेक्शन है। असर कर गया। हाक आने पर एक कॅप्सूल द दीजिएगा। दूध के साथ। मैं शाम का चक्कर लगा जाऊँगा।

दा घंटे बाद ही मा को हाश आ गया। मुझे सामन बठा दघ बहुत धीमे किन्तु उत्साहित स्वर म बाली— कहा था र? दखत-देखत मेरी तो आँखें पयरा गयीं। तू मुने कहा स वापस खीच लाया ?

मैं तुष्ट भाव म माँ का दखता रहा। चुपचाप।

हाय मेर लाल पर इस उम्र म ही कितनी मुनोबतें टूट पग हैं वँमा मुह तिकल आया है।’ माँ की आँखें गोली हान लगी— दोना क्या तरी कहाँ गया था ?’

माँ, काई अमर चीधरी है उनक पाम रूपये लत गया था।’

‘नदी क उम पार ? कहत-कहत माँ जम घबरा गयी। ‘वही कम पहुँच गया ? मुझम पूछ ता लिया हाना।

क्या तुम उह जानती हा माँ ?

हाँ वर तर अर्या के गस्त थ। मगर हावान कुउ ग्य तरह बिन्द कि तुम्हार अश क मस्त पर भी अमर का उनका मुँह दगना गवारा नहा जा। कान-कहन माँ गीमने लगी।

मैं चारता था माँ आगम म मटी रह। इय कारनि

यही स्यगिन बर द । किन्तु खाँसी व रक्ते ही माँ न एक आह खीची और पुन धीरे धीरे बालन लगी ।

“ एक लम्ब वक्त स हमारी जमन के मुलाकात नहा हुई थी । एक दिन आया तो बोला—बीबी सखन बीमार है । आगरा जाना हागा । पाच-छ सौ रुपये चाहिए । तेर अब्बा ने दूसरे दिन रुपये दन का वायदा तो कर दिया, लेकिन फिर आगा पीछा साचन लगे । इसकी भी एक वजह थी । दरअसल तेरे अब्बा बहुत रहमदिल इंसान थे । जिस-तिस न झूठे मन्चे बहाने बनाकर उनस छोटी बड़ी रकमे हउप ली थी । उन्हु ठेस तो उस वक्त और भी बुरी तरह से लगी, जब पता चला कि चद लागा ने बीमारी का बहाना बनाकर जा रुपये लिय है उसकी शराब वगैरह पी गये हैं । व हरेक पर शक करने लगे । किसो को भी उधार न दन की कसम खा ली । ठीक वही दौर था । उन्हान दूसरे दिन असद चौधरी स भी कह दिया—मेरे पास कुछ नही है ।

“ दो-तीन रोज तक असद और वही से रुपये का वदावन्त करन के लिए भाग-दौड करता फिरा कि इतने म उमकी बीबी के इतकाल का तार आ गया ।

“ असद तेर बाप के इस झूठ को समझ गया और उनसे नफरत करने लगा । तू कौन-सा मुँह लेकर उमक पास पहुँच गया ? ” मा फिर खाँसन लगी ।

एक तरफ मा खास रही थी, दूसरी तरफ मेरो आखा व सामन असद चौधरी का कापता दुआ तथा तस्वीर को एकटक देखता हुआ चेहरा उभर आया ।

अनायास हाथ अपनी आखा पर जा पडा जा कुछ भीगी भीगी-सी लगी ।



## टूटते हुए पख

बहुत ही छोटा था मैं, तब से यह अनोखा और लाजवाब पक्षी मेरे पास था। मुनायम मुलायम मुनहरे परा वाला। घूबसूरत पतली और खूब लम्बा गदन जिस थोड़े थोड़े समय बाद ऊँचा उठता जैसे दुनिया भर का मुआयना कर रहा हो। पतली छोटी गोल, तीखी आँखें जा बहुत दूर तब की तमाम चीजों दृश्या को महजती रहती। वह बहुत मीठा मीठा बोलता और हाँ कभी कभी उसकी जवान म तल्खी भी भर उठता, जिनका रोचना वाटना शायद किसी के बम की बात न हाना। मगर सबसे हैरानी की बात यह थी कि जो कुछ वह बानता उस बकन न सहाँ लेकिन बाद म मभी कहन कि हा एसा ही वे भी साचत हैं और शायद यही मच है।

आह, अब क्या करें !

एकएक क्या हा गया या मुझे

दम पछी पर ता मैं दिन रात जपना सज कुछ निछावर त्रिभे रहता था। रंगी क लिए बचपा म नकर अब तक कई लडवा और दूमर लोग म लडाइयाँ भी मान ली थी।

मनर दष्टि। हर ऊँची नीची बात पर वान रम हुए। प्यारा-भा मुह। मुक्ता म भरी छाटी छोटी आँखें। साथ हा घहर म हरदम टपकता भाता।

मैंने दिन का मिनतार या मही। व्यक्ति के सामाजिक दायित्व,

‘शिक्षा के विस्तृत आयाम’, नीतिशान्त्र की मामूली समस्याएँ उन विषयों पर कुछ विद्वान् भाषिया के भाषण थे। कुल मिला कर बहुत ही व्यस्त कार्यक्रम थे। तीन दिन दखत ही देखन जैसे पता मगुजर गया। जैसा कि होता है इन सगोठियाँ म किसी ठंडी हन्ती की भागीदारी जरूरी होती है। वरना आप सब कितना भी अच्छा क्यों न वहाँ समान के लिए एक से एक मागदशक व्यावहारिक विचार क्या न रखें उनका कोई यूज तक नहीं बन पाती। परंतु वही जिमी भी मंत्री जादि के आ जान न, मामूली स जलस की गीठ मजबूती पकड़े रहती है।

हम सबका मालूम था आर शायद मंत्री जी का भी मानम था कि उक्त विषयों से उन मंत्री जी का कुछ भी लेना देना नहीं था। मगर फिर भी उनकी बहू मौजूदगी दोनों ही पक्षा के लिए हर निहाज से ‘लाभदायक’ आर चर्चा का विषय तो था ही। शायद मंत्री जी की अपनी नजर म, उनकी ऐसे समिनार मे उपस्थिति मात्र ही उनका विद्वान बना दन के लिए काफी थी। बस मत्र तरफ यह चर्चा भी आम थी कि उन मंत्री जी की रुचि महिलाओं म अधिक थी। हमार साथ भी कई महिलाएँ थी, जो आजकल के रिवाज मे मुताजिक काफी सजधज कर, खुशनु लगा कर कुछ लोगों के लिए ‘शुष्क स्थान’ का सँवार हुए थी।

घर, गोठियाँ अपनी पूरी वचारिकता के साथ चलती रही। ऐसे माहौल म विद्वानों के मतभेद भी खूब उभर कर सामने आत रह और विषय को और धार देकर उनम ताजगी भरते रहे। किंतु कभी-कभी किन्नत तब आती जब कुछ लोग बहम को व्यक्तिगत स्तर पर उतार कर एक दूसरे को लालित करन लगत। तब मं गुम्से से भर उठता नैनन मेरा पत्नी मुखे नियंत्रण मे कर लेता, समझाता कि बहुधा विषयों म मतभेद न हात हुए भी कुछ लोग उनके प्रस्तुतीकरण का ही बहस का मुददा बना कर नाम कमाने का मोह त्याग नहीं पाते। अत बहुत चाहन पर भी मैं चुप बना रहा।

परंतु अंतिम समापन दिवस पर कुछ लोगों ने मुझे अपने विचार रखन के लिए उठा कर माइक के सामने ला खडा किया।

अत्र मैं तो क्या बोलता, मेरा पक्षी चहचहान लगा। उसने बोलना

शुरू किया ता मजको लगा कि जैसे कोई गीत सुना रहा है। खन में ता वह बहुत जाकपक था ही, लकिन उसकी असली लिपत थी कि अन पूर्ववर्ती विद्वाना की स्थापित धारणाओ और मूल्या का भली प्रकार या रचना किमी के लम्ब स लम्ब वाक्या को ज्या का-र्या दाहरा दता और सब कथना की वागीकी से विवचना करना, मन का आगलित करन बान विचारा को निरंतर गुनगुनात रहना।

किन जिन विदुआ पर मेरी अपने साथियो से अमहमनि थी, उन्हें भी उसन बडी शालीनता तथा बडे सतुलित ढग से ऐसे काटा कि मारा विषय जैम नयी सजना बन उठा।

तब बहुत दर तक तानियाँ बजती रही थी। तालिया म मत्री साहब मवस जागे थे। वे मेरी ओर एस बडे कि मैं सहम गया।

अब सबने अन्त मे मत्री जी का अध्यक्षीय / समापन भाषण था। वे जैसे और मव कुछ भूल गय। दो तीन रोजक्या-क्या हुआ था। किन विषया पर गाण्डिया हुई थी। किस किसने क्या-क्या कहा था। उसकी उनके तइ और कुत मिलाकर क्या-क्या प्रतिश्रिया रही। यह सब कुछ नहीं।

बस उनक भाषण का मूल विषय था—मरे पक्षी की तारोफ। जो निहायत ही खूबमूरत था। मुलायम और मासूम था। खूब चहचहाता था। खुल कर गाता था। अपने राग म अलमस्त ववाक सध्री हुई जवान का मानिक। किसी की खुशामत मे बोले गय शब्दा का बह वह तरज देता कि अगला मन-ही मन पानी पानी हा जाय। या फिर उसकी दबग आवाज स कुछ लोग दहशत म भर उठें। ऐसे साहस बाल पक्षी के गुणगान कौन नहीं करगा। इसी तरह वे अनेक जुमन मत्री महोय्य कितनी ही दर तब बोलत चल गय और पूरी दापहर हा गयो।

छुट्टी।

रगिन्तानी धूप और भयकर गर्मी। फिर किसी तरह हम सब घाना निगलन लगे और अपन-अपन राम्ना की तालाश म जुट गय।

मैं अपनी अटची म ज्यू त्यू सामान भर रहा था कि एक अदमी मेर पास आया। कमिन्तर साहब चाहत है आप जान से पहल उन्हें मिल कर

जायें।" उसने बड़े धीरे स अपनी चौड़े पट्टे की पगडी का स्थिर करत हुए झुक कर कहा।

"ठीक।" कुछ सोचता हुआ मैं फुमफुसा दिया था।

आह! यही से गोपनीय वार्ता शुरू हुई थी। मुझे जन-माधारण स तो क्या अपने आप तक से काट देने के लिए।

मैं कमिश्नर साहब के पान पहुँचा। मरी गदन कुछ लटकन लगी थी।

'मुनो।' उहान अपनी व्यस्त गदन का उठाया। वे इतनी गर्मी क बावजूद मोटे प्रेस किए हुए खाकी कपडे पहन हुए थे।

"जी।"

'तुम्हारे ही फायदे की बात करता हूँ।'

"शुक्रिया, कहिए।"

'चाहूँ तो पहल अपन फायद की बात सोच सकता हूँ। लेकिन नहीं। सिर्फ तुम्हारे फायद की बात। मैं तुम्ह उतना फायदा नहीं पहुँचा सकता जितना मंत्री जी।' उहान बहुत धीम स्वर में, यह सब कहत हुए, मुझे अपन पास खडा कर लिया फिर हथेली स मेर कालर का बुरी तरह से मसला कि वह भुम्भुरा गया।

बताइए, मेरे साथी चले जायेंगे।' मैं थोडा घबरा गया।

उह जाने दो। मंत्री साहब की औरतें पसद हैं।' कमी भी क्या है। अब यहाँ तुम्हार पक्षी पर भर मिटे। यह उह दे दा। अभी तो सविस शुरू की है। तुम्ह बहुत-बहुत प्रमोशन लेन ह। महरबान हो जायेंगे। बहुत जल्दी तुम कही से कही ऊँचे जा पहुँचोगे।'

'पक्षी! यह कैसे हो सकता है?' मेरी जबान लडखडा गयी। गले में बलगम जम गयी।

तुम्हारे फायदे की बात। सिफ इतन विद्वान होने से काम नहीं चलता। लोग तो ऐसे समिनार म आते ही सिफ इसीलिए हैं ताकि मत्रियो कमिश्नर स सीधा परिचय प्राप्त हा सके। जहाँ तुम इतने कुशाप बुद्धि और विद्वान हो वहाँ उतन ही भोल भी हो। इशारा भी नहीं समझन। तुम नहीं समचे। भले ही दूसरे लोग समझ गय हा। उन्हें

तुम्हारा पक्षी चाहिए।

‘नहीं नहीं।’ मैं मुश्किल से दो बार कह पाया। गला सूख गया। गिरते गिरते वापस मुडन लगा।

टहरो।’

उहाँ पानी मँगाया। मैं चुपचाप पानी पिमा।

जा सकते हो। मिफ, तुम्हारा फायदा। और कुछ मशानही था हमारी। भाग्य वार बार जाकर द्वार नहीं खटबटाना। नहीं तो न सहा।’ उनकी जुवान से उपेक्षा भाव उभर आया था।

तब जोर दिया देर नहीं की मन। दम न घुट जाए। गदन का तौरी स झटका देकर ऊपर की ओर उठाया। मुडा और तज कर्मा स बाहर जा गया।

आनपास सेजडी के दा चा पड थे। शायद उही स टक्का बर घाटी ठी हवा का झाका मुझे महसा गया।

वक पहुँचा। कुछ लोग जा चके थे। कुछ जा रहे थे। और घाड स अभी खाना खा रहे थे। एक मित्र ने मेरा हाथ पकड कर खान व लिए साथ चलने को कहा। मैं बतयाया—खाना तो खा चुका हूँ। फिर भी साथ चलने के लिए उमन मुझे साथ ले लिया। कहा—‘मन्त्री साहब को तुम्हारा पक्षी बहुत भा गया।’

मैं गुमगुम सा माचन लगा। फिर हाथ घोने के बहान उमन अर हो गया। फिर एक वान स बटकर सबको धीर धीर जात हुए देखना रहा। फिर मौका पाकर चुपचाप भाय के कमरे स जाकर बठ गया।

घरक की और आसपान की तमाम हलचल घम चुकी थी। बकाया भी मेर अरर को चलल। नाय पामन पर भी वानू स बाहर।

कितनी तर तब अकना बठो जमा नफी व सवालालत करता रहा। अब मौका है। मर मादिया व दीच तो यह नायाव ताहफा उनको निया नहा जा महसा था। घटकत दिन स मन्त्री साहब का रिहायग की तरफ बड घना। घीमी परा चाल।

मगर तब तब बहुत दूँ हा गया थी।

पना जना कि खाना खान व बाँ साहब आराम परमा रहे हैं।

मैन ड्राइवर के हाथ बहलवा भेजा कि मैं वही पक्षी उड़ते हैं, भेंट करना चाहता हूँ। जोर इतजार करन लगा। मगर ब नही जाय।

नाजुक पक्षी धूप और लू के मार निनमितान लगा। इतजार लम्बा होना चला गया। पक्षी तडफडान लगा। पिजर न तिकाल उस हाथ म ल लिया। पक्षी चीन् उठा— 'चला।'

मैन इस तर्फ ध्यान नहीं दिया। फिर न माह्व की राह देखन लगा।

हाथ के दबाव स पक्षी ममल गया किमी वच्चे की तरह। 'चला घर चला' की रट लगान लगा। मगर भर कान माह्व क बदमो की राह जाहत रह।

पक्षी लम्बा और शिथिल हाता चना गया।

दुसारा कहला भेजा। जवाब मिन आ रह है। मगर नहीं। नहीं आ रहे थ। तग आ गया था इतजार करत करत। मोचा, चल दू। तकिन अब मैं अपन का फौसा हुआ पा रहा था। क्या पता, मेरे मुडत ही व था जायें और अपन का अपमानित अनुभव करें। वही बाद म बदल पर उतर आयें।

पक्षी कुछ देर तक पानी-पानी चित्वाता रहा। फिर निडाल-सा होन लगा। साचा, उनको दे दूगा ता वही पानी पिला देंगे। और कितनी देर करेंगे। जात ही हामे अब।

दया पक्षी डर गया है बचारा। जैसे साह्व नहीं कोई मुसीबत आन बानी हा।

मैन फिर स ड्राइवर से इतजा की कि उनको मेरी याद पिला दे।

ड्राइवर न मुझे जलती आखा न देखा— 'क्या मेरी शामन आई है जो बार-बार उनके मुह लगू? लगू भी नैंमे। ज्यादा मुह न खुलवाआ। बस अंदर आराम कर रहे हैं।' मैं समन गया ओह। कमिश्नर साह्व बंगल से बडे हैं नाथ के कमर म। उह सब पता है। तुम भी इतजार मे हा। तुम्हार पास ता अपनी सुविधा से आयेंगे। सभी छोट बडे का फन करके चलते ह हमशा।

ड्राइवर चला गया।

मैं हीनता में भरने लगा। पक्षी का गला सूखन लगा। बहुत मिनतों कान पर माली एक सूते पत्ते पर चार छ बूंदे पानी की ल आया।

‘पी पी पानी पी।’ मैंने कई बार पक्षी से कहा। बड़ी मुश्किल में उसने गदन का उठाया।

हूँ हूँ हूँ शिथिल दद मा उभरा। नहीं, पक्षी हँस रहा है। हूँ हूँ हूँ। पक्षी हँस रहा है। नहीं। ओह पक्षी मर रहा है। अब मैं क्या करूँ। मैं मरते हुए पक्षी को देखन लगा। किसी तरह उसे बचा लेने की युक्ति सोचन लगा। वहाँ से भाग कर। परंतु लगा अब तक मैं बेवस हो चला हूँ। मेरे जिस्म का एक के बाद एक अंग झर झर कर जमीन पर गिरने लगा है। कभी हाथ कभी हाठ, कभी आँखें, फिर पैर और नाक

अमहाय मा एक तिकानी दीवार के सहारे सिर टिका लिया। जन नील मी आ गयी।

क्या है? मुनायी दिया। मिर को ताना। देखा कोई नहीं था।

फिर भी मैं फुमफुसा उठा— माहव। आप चाहत थे। यह आप त लीजिए।

फिर एक वाका नीद का।

तो लाओ। सख्त आवाज़। सख्त। खडे छडे अस्त-व्यस्त बात। उतनी ही सख्त हयेली।

मैं हडबडा कर रह गया। इतना नाजुक पक्षी—इनी खरखराती आवाज़ मुनन का आदी नहीं था।

पक्षी ‘उनकी सख्त हयेलिया में पडपडा उठा सूँघ’ एक नम्बो साँस निवरी मरा राआँ-रोआँ जड हाकर फिर क्षनपना उठा।

आह।’

‘बकार है। क्या करूँ अब हम मरत हुए पक्षी का।’ बड़ी बेरपी से वापस मरी ओर बडा दिया।

मैं जपाहिज-मा बिनकून भी भँभन नहीं पाया।

‘उपाक’ पक्षी खुरदरी बँकरीनी जमीन पर जा गिरा।

मैं चीख उठा। मचमुच पक्षी जमीन पर गिरा बराह रहा था। जन तम गदन का ऊपर उठाना—‘बिननी पक्षियाँ बची हैं और जिन्ना रहें

की ।'

मैंने झुक कर पंथी को दोनों हाथा मे सहजे कर अपनी गादी मे भर लिया ।

तभी माह्व वान्तव म एक कमर से निकल । मुझे देखा । पर अनदेखा कर दिया । उपक्षा भाव से झट दूसरे कमरे म चले गय ।

खटाक्' दरवाजा बन्द होने की आवाज ।

अपनी ही दुनिया के सार दरवाजे बन्द हा गये मेरे लिए ।

मैं दहशत से भर उठा ।

बिल्कुल अकेला । सँकरी, लम्बी, टेढी-मेढी राह । और ऐसी ही मुडी-तुडी हुई राण—मैं अपने हाथा म उठाये रापन चल देता हूँ जो विवृत लम्बी और भारी होती चली जाती है । हाथा मे नही सँभरती तो अपने निवल कंधा पर डाल लेता हूँ । अपनी ही लाश ढोने का अहसास ।

कब तक ढोऊँगा इसे ! ता उभ । या शायद अगनी पीढियो तक । नही पता ।



## भविष्याक्रान्त

आज ही आया था यहाँ। नय स्टेशन पर चाज लिया था। बच्चे साथ नहीं थे। प्रतीभालय म नहा-धो लिया था। स्टेशन के एकमात्र टी-स्टाल से चाय आ गयी थी। चाय पीने क बाद ए० एम० एम० याड मास्टर, बुकिंग क्लक मवने, अपने-अपन यहाँ खाना खाने का अनुरोध किया था। मेरी आदत है, जितना हो सके आज के जमाने म किमी पर बोझ न डाला जाये। इस दृष्टि के पीछे चद एक और अच्छे पहलू है। अतः मेने मवको किसी तरह प्यार स टाल दिया।

वस ता खास भूख थी भी नहीं। सोचा जब लगेगी ता निकट क किसी होटल-क्वा से कुछ खा-पी लूंगा। इस बीच मैं सारी फाइने रजिस्टर आदि सरसरी तौर पर देख लेना चाहता था।

तभी विश्वेश्वर ट्रेन क्लक हाथ जाडे मर मामने आ खडा हुआ। बोला— बडे बाबू खाना ता आपका मर साथ खाना होगा।' स्वर म गहरे तक आत्मीयता उभर रही थी।

मैं एकाएक उस मना नहीं कर सका। कहा—“क्या नाहक परेशान हात ही और घरवाला का भी

बडे बाबू घरवाली बच्चा क साथ बाहर गयी हुई है। अपन लिए खुद खाना बनाता हूँ। कोई सौ एक सवजी और चार रोटिमाँ। थामे अन्नार। परशानी बह की।

'अच्छा शटल क बाज चलेंगे आपक क्वाटर।

“हाँ, शटल के बाद ही। तब गाडिया का रश एकदम मदा पड जाता है। घान के त्रिए लम्बा गप मिलता है।” पाँच नम्बर लाइन पर क्वाइटस-मैन हरो थडी हिना रहा था। मालगाडी धीरे धीरे रुक रही थी। विश्वेश्वर उधर ही बढ गया।

शटल क बाद हम दाना विश्वेश्वर के क्वाटर पहुँचे। क्वाटर बहुत सलावे से सजा हुआ था। मत्र चीजें व्यवस्थित ढग स लगी हुई थी। शलिए मुझे वहाँ खिचकी के पान बठन म बहुत अच्छा लगा। विश्वेश्वर बडी फुर्ती स खाना बनान म जुट गया।

जल्दी ही हम खान की मेा पर बठे थे। कुछ देर तक विश्वेश्वर मुझे स्टाफ और स्टेशन के कामकाज के विषय मे बताता रहा।

घान क बाद मैं उनके परिवार के विषय मे पूछा ता विश्वेश्वर न उत्तर दिया—‘ट्राई मारने गये ह।

मैं इस तगभग नय मुहावरे का एकम स कोई अध नही निकाल सका। पूछा—‘कैसी ट्राइ?’

इस पर विश्वेश्वर जार मे खिलखिला पडा—‘साहब, यह हमारे घर का एक चालू मुहावरा हा गया है।’ वह हँसा जरूर, पर मैं लक्ष्य बिया कि इस हँसी की तरग के साथ कही पीडा का स्वर भी उठ-बैठ रहा है।

“अब थोडा आराम कर लें, बडे बाबू।’ विश्वेश्वर न एक चारपाई पर मेरे लिए चददर बिछा दी।

मैं चारपाई पर, सिरहाने से कुहनी अटका कर अधलेटा हो गया—‘हा विश्वेश्वर भाई आपने ट्राई वाली बात बीच म ही छोड दी।’

“नौकरी चाकरी के लिए ट्राई करने की बातें ह बडे बाबू।’ विश्वेश्वर ने मूग मेरी चारपाई के निकट खीचा और उस पर बैठत हुए आगे बोला। “लडके ने इस वय एम० एम० कॉम० फाइनल की परीक्षा दी है। पढह बीम रोज म रिजल्ट निकलने वाला है। जरूर पास हो जायेगा। मैं सोचता हूँ, यह ट्राइ वाना प्रमा जब जरूर पुर हाता ता क्यादा बेहतर रहता। मगर यह दो अडाई वय पूव ही गुरु हा गया निसन लडक को सुखाकर रख दिया आर साथ मे घरवाला भी जाधी रह गयी।’

‘हूँ’ मन सिरहाना ठीक करत हुए विश्वेश्वर की आर देखा तो वह

आगे वालन लगा—

“बुछ लोग नालायक औलाद, लापरवाह पत्नी की बजह से परेशान रहत ह मगर यहाँ लगभग स्थिति बुछ उल्टी ही बन निकली।” विश्वरवर के अनुसार लडके शिशिर जोर घरवाली शीला के जलावा घर म दा लडकियाँ भी हैं जो अभी छोटी हैं। वे दोना भी सममदार हैं। सभी बच्च पढाई मे अच्छे ह। पर शिशिर बडा होन के नाते अधिक जिम्मदारी महसूस करना है। अभी स उसे छोटी बहना की फिर है। अढाई माल पहल से ही मर्बिस के लिए फाम भरने शुरू कर दिय थे उसने। साय म टाइड शाटहैंड भी करना रहा। इन काय के लिए मा भी उम यथाचित प्रोत्साहित करती थी जिमस दूसरे-तीसर रिटन टेन्ट म वह पाम हो गया। इधर बी० काम० की परीक्षाएँ त्रिलकुल सिर पर थी। तभी दो दिन पहल उमे इन बात की सूचना मिली कि वह पाम हो गया है और अब—परीक्षाआ र बीच की वार्ड तिदि थी—कि उस त्रिल्ली पाटहैं टेन्ट म बठना था। महना पूरे घर मे खशी की लहर दौड गयी—शिशिर भया पाम हो गया शिशिर भया पाम हा गया। लेकिन सडका बचारा बहुत परशानी अनुभव कर रहा था। कहन तागा—मुये कौन-मा पना था कि पाम हो जाऊंगा और एन दिन के नोटिस पर शाटहैंड के लिए भी बुना लिया जाऊंगा? मारी स्पीड गिरी पडी है।

घर जम तैमे वह और उमकी माँ दिल्ली बन गय। विश्वरवर के भाई नाहव उसी विभाग मे अपसर हैं, लेकिन बट उनक मामने “म विपम म जवान नहीं खानना चाहता था। किनु शीला के पाम माँ का जिगर था। बोली—मैं बट नूगी। कौन किमसे नने कहना? देखूंगी। आजकल के जमान म जोर भी बटून कुछ बनता है।

इतना कहकर विश्वरवर कुछ देर के लिए रुका। मूटे पर बरब बन्नी और फिर म बानन लगा—

गाइवें राज जब शीला गाडी म उतरी तो उसका मुह तन्पा हुआ था। पीछे-पीछे शिशिर भी अटची और बिन्तरबद घनोटता हुआ पपाट मे मे बाहर आ गया।

स्पष्ट रूप म शब्द भी प्रश्न करना बमानी था। उनके चेहरा पर

'काम न बनने' के उत्तर उग आये थे ।

'चलिए।' शीला फुमफुमा कर यही एक शब्द बोली, और हम क्वाटर की तरफ चल दिये । विश्वेश्वर मोच रहा था, जाती बार शीला के चेहरे पर कितना कितना उन्माह फूट पड़ रहा था और वह एक ही घुन में चहके जा रही थी—'मैंने आपको बताया नहीं पर मैं आपकी भाई साहब से बात करती थी । उन्होंने यही कहा था कि शिशिर रिटन पास कर ले । आगे मैं देख लूंगा ।

हा शीला के इन शब्दों को तब विश्वेश्वर ने बड़ी मुलायमियत से धो दिया था कि वह भाई साहब में कुछ नहीं कहें । अच्छा जो कुछ अपन बलबूत पर करता है उसके अमर में वह आगे का जीवन ठोस आत्म-सम्मान में जीता है । बगरह बगरह ।

अब घर में कदम रखते ही बाज से लदे शिशिर ने सारा सामान फण पर पटक दिया और लम्बी नाम खीची ।

धर पत्नी ने बोझिल शब्द फण पर पटकन शुरू का दिया—

हाय उतना पैसा खर्च किया । गाड़िया के धक्के खाए आपके भाई साहब का मलूब हृद में घटिया रहा । किसी से एक तपत्र कहना तो दूर, हमसे बात तक नहीं की । जैसे उन पर बोन बनकर जा बैठे हो । हमने तो खाना तक अपने रिश्तेदारों के यहां में खाया । और तो और इमान पराय को भी थोड़ी-सी सहानुभूति ही दिखा देता है ।'

देख लिया ना कहने का फल । खुद ही जल रही है । विश्वेश्वर ने कहा तो शीला की आग में धी पड़ गया ।

'तो क्या करती । आजकल दिना सिफारिश के मामूली-सा काम भी नहीं होता । महां तो मामला ही नौकरी का था । शीला की आवाज रझासा हा थायी । उसमें क्षुब्धता की मात्रा अधिक् थी । 'यह है आपके भाई साहब । भरवा दिया । किसी और को पकड़ने या कुछ देने तितान को बात करते तो जरूर काम बन जाना ।'

'अपना शिशिर कौन-सा बड़ा हो गया है । लग जायेगी नौकरी । विश्वेश्वर ने उसे शांत करने का मल किया ।

आप कौन-सी दुनिया में रहते हैं ? आजकल नौकरी मिलना

मिन्न के बगवत हो गया है। जग मचमुच मुझे काई यकीन जिला द कि वन का नौकरी मिन्न जायगी ता मैं इससे फाम भरवान बन कर द। पहन तात्नी स एम० वाम० वरन दू। विनना पैमा फुंक् रहा है फामो पर। वन आग रामो का यही ड गाना गहता है कि बच्चा नौकरी डडन डूडन जावर एज न हा जाये।

अपना प्रच्चा नायक हाना चाहिण। वम। वम' शब्द पर विश्वेश्वर न ग्राम तौर पर जोर दिया। जग इस तरह कहन से मारी बहस वही की वही घुलम हो जायगी।

लकिन जल्द ही विश्वेश्वर ने महसूस किया कि यह बहस ता ताजिदगी चलन वाली बहस थी। चाचा जी की मरनी पर यही टाफिक। रानी ने जन्म दिन का फक्शन हुआ तो यही चचा। हर कही यह विपय जैसे आकाश मपुच्छा तारे की मानिद उनके जागना म आ गिरता। पहल फुम फुम की ध्वनि पैदा करता। फिर धमाक शुरु हो जात कि भाई साह्य न सगे भतीजे की नौकरी पर लात मार दी।

भाजे की शादी मे वे मत्र गये ता वहाँ भी यही बात। साल साह्य का कहना था कि आपके भाई साह्य आदेशवादी हैं। वह भाई भतीजावा क विशुद्ध आवाज खड़ी कर रहे ह। इससे उनका नाम भी हुआ है।

दीदी न कहा—कोरा यश बटोरन के पीछे बेचारे शिशिर का कैरियर चौपट करक रख लिया। देख लेती, अगर शिशिर को गह इनका अपना छोटा लडका होता।'

जीजीजी ने भी पूरी बौजलाहट व्यक्त की—दख लिय है, सारे उमून। चाहत ता हमारे लडका की भी मदद कर सकत थे। लकिन असलियत यही है कि किसी को हँसना खेलता, फलता फूलता नही देखना चाहत।

दीदी दोबारा वाली—वही कोई इनस आगे न निकल जाय और डग म खाये पिय यह इनस वदाशन कहा जाता है। अफसर क्या बन गय

दीदी के शब्द पूर नहीं हा पाये थ कि तभी वहा बडा भनाज नितिन आ पहुँचा। आत ही घापणा की—'डडी नही जा पायेंगे। उनक

भिर म चक्कर आ रह हैं। फिर आज ही शाम कानपुर भी जाना ह।  
डाक्टर ने रेस्ट करने को कहा है।'

मयने एक-दूसर की ओर दखा जसे एक-दूसर से तगजू तान को  
कह रह हो कि तौल कर देखें कि नितिन की घाता का सच का पनडा  
भारी है, अथवा झूठ वाला पलडा।

मयकी चुप देखकर नितिन दीदी म सवाधिन हुआ—'बुआ जी।  
मेरे तामक जो-जो काम हो वता तोजिय। मुश्किल न जाधे तिन की छुट्टी  
मिनी है।'

मार काम तो शिशिर नैभाने हुए हैं। उत्तर पत्नी न दी दिसा,  
यदि तुम्हारी तरह उमकी भी नाकनी लग गयी हाती ता उसे भी कहा  
फुमत होनी और अगर कही अपसर तग गरा होता, ता क्या इम शादी म  
जाना ?'

सुनकर एक वार तो मयके चेहर फक पड गय। यह तो युद्ध नेत्र म  
फैला गया विस्फोटक हथियार जैसा धा।

विश्वेश्वर अभी तक कुछ भी नहीं बोला था। उसे लगा इन तरह  
की झकझक का कही अंत नहीं होगा। इसलिए चिल्लाकर पत्नी का विडक  
दिया—'बकवास बंद करा। अपन घाबर वालो म बात की जाती है।'

इन पर नितिन बिगड उठा—'जाप हम घटिया छोटा समझत ह।'

नहीं, तुम छोट हो' विश्वेश्वर न उमकी आयु का लक्ष्य कर कहा।

किंतु वह और आर जनाप जनाप बोलता, बहा स रुठकर निकल  
गया, कि डेंडी अपसर ह ता किसी का नहीं भाते। हम कमी स छाटे  
नहीं। देखेंगे—अब शिशिर की नौकरी कस लगती है।'

तब से हमने तौबा कर ली, किसी रि तेदार के सुख-दुख म  
शरीक होन नहीं जात। अपनी या भाई माहव की हँसी उडवान, लडाईं  
झगडें स बहतर है कि विदरादी स कटकर रह लो। क्यों बडे बाबू ?'  
विश्वेश्वर उठ छडा हुआ, अब गाडिया का समय होन वाला ह। मैंने  
आपको आराम ही नहीं करन दिया।'

'मैं तो बल्कि लेटा रहा। आप ही तैठे रह गये विश्वेश्वर भाई। रुका  
मैं भी चलता हूँ।'

उसने क्वाटर का ताता लगाया तो मैं विश्वेश्वर का तम नी दी,  
'अपना चिन्ता मत बिया करा। यह ता सबको जिंदगी क यमल है। लय  
ही रहत है। मस्त रहा रा।'

'मैं तो ऐम ही मानता हूँ, घडे बाबू, पर शिशिर है कि तब स जस  
अपन अन्तर दैत्य की शक्ति भरकर पागल-मा बन गया है कि बिना बिना  
की मिफारिश के जल्दी ही कहीं लगकर ताऊजों को बता द्या कि दुनिया  
म व ही सब कुछ नहीं है। हर विभाग के फाम भरता चता आ रहा है।  
दूमरा वह जासपास गली मोहल्ल म नजर दौड़ाये रहता है। अपन साथ  
के पडे लिखे युवका का दख-दखकर घुलता रहता है कि देखो यह लडका  
इतना पढा लिखा है। उसकी भी अभी नौकरी नहीं लगी उसकी मा  
नौकरी नहीं लगी। य बचारे बिना काम के थोडा इधर-उधर घूम आ  
हैं तो इनक मा बाप इनसे नफरत करन लगते है। कहत है हमारी जान  
को आपत है। घर म बँठे बठे रोटियाँ तोडते है। फिर निकल जान है  
आवारागर्दी करने। लम्बे समय तक इह सगे माँ-बाप भी नहीं मट पान।  
दरअमल इममे किसी का कसूर नहीं हाता।

मैं शिशिर की तकलीफ को नमझता हूँ जो बकन म कुछ पहन ही  
आरम्भ हो गयी। उन तमल्लो देन के लिए कहना हूँ उस फिन्न करन का  
जत्तरत नहीं। कुछ पैस तो हम कस्व के मवान के किराय के भी आ जात  
है। मगर वह है कि एक तरफ उसकी पढाई की बडी-बडी पाथियाँ है  
दूमरी ओर कपीटीशन मास्टर जस भारी भरकम प्रय। इन दानो क बाब  
पिसकर रहा गया है मेरा शिशिर। दखिय अब की फिर ट्राइ मारल  
गया है। लगता है इम बार जरूर सफल हा जायेगा।'

विश्वेश्वर फिर हँसा। वही रदन की छनक भरी हँसी।

मैंन मन ही मन विश्वेश्वर तथा उसके परिवार की मराहना की।  
फिर काम म व्यस्त हा गया।

म घटना क काई वारहवें राज मुबह की गाडी के बाद विश्वेश्वर  
मरे पास आया। वह बहुत खुश था। उसके हाथ म अखबार दखकर मैं  
समन गया जरूर रिजल्ट निकना है। विश्वेश्वर को अपन पास बठात  
हुए पूछा— कहिए विश्वेश्वर भाई। लगता है शिशिर के पास

हीन का समाचार है।”

“जो हा बड़े बाबू ! मत्र बड़े भाइया की शुभकामनाएँ है। शिशिर ने फस्ट डिबीजन ली है।’

“बहुत बहून बधाई हो।’ मैंन गमजाशी म उसका हाय छुआ।

“और आज ही शाम की गाडी स सब बच्चे लौट रह हैं। कितना खुश होगा शिशिर। उस ता ध्यान भी नहीं हागा कि अब की रिजल्ट इतनी जल्दी निकल आया है।”

शाम को मैंने भी खास तौर स गाडी अटेंड की। गाटी रुकी। शीला बेहाल-सी बाहर निकली। घबराय स्वर में विश्वेश्वर स कहा—“जल्दी स अदर चलिए। शिशिर की तबीयत रास्त में खराब हो गयी। दा-तीन उल्टिया भी हुई ह।’

मैं और विश्वेश्वर अदर गय। दोना ने शिशिर का सहारा दिया, और उस बाहर ने आये। बाहर आत ही, स्टाफ के अग्र लागा न उसे मँभाल लिया।

मैं थाडा जलग हुआ तो देखा, जैसे पतली पतली सलाखा वाली कोई ड्राली हड्डिया का ढाँचा लिए जा रही है। मैं पीछे-पीछे चलन लागा।

विश्वेश्वर न धीरे स अखबार को शिशिर के हाथ म पकडात हुए कहा—‘ बटे, तुम फस्ट डिबीजन म पाम हुए हा।’

किसी तरह एक हाय स अखबार पकडकर शिशिर दूसरे हाय का पट की जेब म ल गया। एक लिफाफा निकालत हुए उसन कहा—“इतम रहा मरा अपाइटमट सटर।’

दाता ही हाय अपनी विजय का समटने म बडौल हा चले थे। मुस्करान की चेष्टा की तो जम चेहर पर मर्पीली नाडियाँ उभर आयी। मुसस और नहीं दखा गया। थाडा पीछे हटा तो स्टाफ का ही काई आदमी बुदबुदा रहा था—‘ खाने का ता कुछ मिलता नहीं निम पर इतनी कडी महनत। अब यह लक्का बचेगा नहीं।

मैंन अपन को पटका दिया और दूसरी दिशा म चल दिया, डॉक्टर बुताने ।



## प्रहार

पवा माँदा। परमान हालत। दिन-भर की फिजूल सी दौड़ रूप। कछ गेज म प्रियेश हैड क्वाटर के चक्कर म डाल रहा है, मारा मारा।

दपनर उद होने के साथ ही अपने अदर जार अधिब रिस्का अनुभव करन लगता है। हर रोज की तरह आज भी अपन उसी त्राणीन की गमटता नचतरग म आ बठा था। बदम।

बुछ लोग मसाना डोना वैफन, नमकीन चाय बॉफी, प्रेमिकाया या दास्ता के भाव मन लगाय हुए जोड़े तिरछे बठे थ। चएए खाते ता पूरा थान मेज पर फलाय थे। उमन लिए पिछन दिना की तरह कुत मिनाशर वातावरण घुटा घुटा सा था जिम बह सिगरट क धुएँ स के ज्याण घण कर उमी म गुम होने की वाशिण म मगगून था।

‘प्रियेण !’ किनी न आवाज दी थी। धीम म रेंगती आवाज उताता आ पहुँची थी—प्रियेण ! उमने जान नूतकर जनमुनी तर दी थी अपन नाम न जुनी वह आवाज।

यही-वर्ग गती दपनर न आवाजें उभता हैं। पदन उा बुछ सटगानी के जो दिन कुरान नगती है—क्या प्रियेण ! क्या प्रायेण है क्या की ? क्या घना ? यह मय हुआ ता आग्रिह हुआ केंन / तुता है विभागीन जीष क दान का पुनिस को जाउगा। किनी मत्री वत्री की पकना ता। पगिण् मनी भावात्रा म वषन क विन उमन अपन शहर म ता दपार जाना ता ककम कम कर रखा था, तकिन यही आवाज हैड प्रायिण

तो जाना ही पड़ता है। इसलिए यहाँ भी जान-पहचान के सभी लोगो को केन का पता चल चुका है।

सब उसकी दमानतदारी से वाकिफ हैं। जालो रसीदें किसने बनाइ। हस्ताक्षर उसके मिलत नही। फिर भी केन्द्र म सिर्फ वही आ अटका है—प्रियेण।

“प्रियेश।” जब को जाबाज के साथ किमी न कधे पर धीरे स हाथ रख दिया था। गौर किया तो जनादन या नाटय कलाकार। थोड़ी लकी दाढी और बाला तक पहुँचती मूँ। रसी के कारण शायद चेहरा गोल-मटोल लगता था। ‘इधर आजा एव माहव न मिलवायें।’ वह उमका हाथ पकड कर पीछे के केजिन की तरफ न गया।

“आप ह प्रियेश और आप ह प्रतीप जी। ह ना मिलत जुलत एन-भी राशि वाले नाम।” ऐसे ही जनादन अपन लये दान निकाल कर सिफ हँसन के लिए हँसा।

प्रदीप तकरीबन खाना खा चुके थे। थानी के किनार काफी सारी हडिडया के टुकडे मिमट पड़े थे। ‘ओह आप ताग खाना पायेंगे? वैजिटरियन या नॉन वैजिटेरियन?’ जिदादिन आवाज थी प्रदीप की।

‘कुछ भी नहीं। मैं तो सिफ चाय पीन को, किमी दोस्त के साथ आया था। वह चना गया तो यह दिख गये। अब खाना तो हम रोग घर जाकर ही खायेंगे। आपने तो खा लिया। बरना हमारे साथ चनकर पात।’ जनादन न अपनी दाढी को मलत हुए ऐसे कहा जैसे यहा भी किसी नाटक की विशेष भूमिका प्रस्तुत कर रहा हो।

नॉन वैजिटेरियन बनवाजो तो बन ही हाजिर हो जाऊँ। पर पर कुछ अलग ही तफरीह होनी है। मिसेम हमारी ता साथ देती रही। इसलिए धक्कन पक्कन हाटन का महाराग लना पडता है।’ प्रदीप ने कधे को थोडा पीछे खीचत हुए जोडा, ‘तुम एक बलाका हो। एक घाम तुम्हारे माय गुजार कर डूब रग जमेगा। क्या।’

हड्डेड परसेंट। बन का प्रोमिन। पक्की ही ना।

‘ओ के। और बाई जिदमन मेरे नायक।’ गन्ताना जाबाज थी प्रदीप की।

यम मग । निफ एक ।' जनादन का हाय हरी चिक्नी मत्र क घरातन पर फिमलता हुआ प्रदीप के हाय के करीब जा पहुँचा "जहानफ मेरा ख्यान कहता है, आपकी मिनस यानी भाभी जी एम आर टा एम में एकाउटस में हैं ?"

'करैक्ट श्री इज ए आफितर नाउ ।"

तब फिर मुन लीजिए, खिदमत," जनादन न हाय उठा कर प्रियश के ऊँचे कंधे पर रखत हुए कहा "इस भोले पछी को ख्वाहमुखाह फँसाया जा रहा है । पस कोई डकार गया, इलजाम इसके मत्थे । अगर कोई ध्यान द ता मामला वच्चे तक की समझ म आ मक्ता है । मगर

करैक्ट करैक्ट मिस्टर कलाकार । समझ गया । मरा मतलब है कुछ भी नहीं समझा । मैं समझ कर कहूँगा भी क्या । जिनके समथन का है उन्हें ही समझाए ना । आप तो घर जानत ह । मुझे वही और बाग जाना है । करैक्ट ।"

दिमाग कुछ कच्चा कच्चा-भा होन लगा था प्रियश का । जीवन क पिछडे कुछ अशा का पकडन की एक नाकामयाब कोशिश, वजिटेरियन नॉन वजिटेरियन । लेकिन ठीक इही क्षणो, पूर उलथे हुए माहौल म फुसत कहा थी कही कोई मगति बठा पान की । भूत की ता कौन सोच इस समय यहा भविष्य ही दाँव पर लगा था ।

प्रियेश अपन लब कद के बावजूद गदन धुकाय किसी बौन की तरह अपने को जनादन से बँधा हुआ अनुभव करता कुछ उलझी गतियाँ और चौगहा का पाग कर रहा था अपने को उवार पाने की क्षीण आशा के साथ । जनादन कुछ सोचता-सा रूक गया ।

मामने एक छोटा-सा घर था । बाहर उमी अनुपात में छाटा-सा झॉन । हरी-हरी घाम । आमपाम खिले-अधखिले नील लाल फूल । दीवार के सहारे चन्ती पीले फूला स लदी बगैर बलिया । ऐम ही किसी जोधपुग के छोटे बगीचे का ध्यान आ गया, प्रियश के अवचेतन म ।

हाँ, यही घर है जनादन फाटक खाल रहा था 'मब जानत है हम, पूरे शहर म । गाह-बगाह वारी-वारी स हम इन बडे लोपा को आयोजना का अध्यक्ष बगैरह बनाते रहत है । कामिनीजी का भी बनाया

है।" खास उत्साह से उसने काल बैल पर अँगुली रख दी।

कामिनी पुजारी

प्रदीप पुजारी

छोट बल्ब के नीचे नम प्लेट पर प्रियेश की नजर कुछ क्षण के लिए जैसे ठिठक गयी। 'मरवा लिया जैसा भाव चेहरे पर उभरा। वैजिटेरियन नॉन वैजिटेरियन। फिर अपने पर ही खीज उठा और हँस भी दिया अपनी सोच पर—'ऊँह बीसा कामिनिया।'

दरवाजा खुला—'कौन ! आटए !' एकाएक न पहचान पान का भाव।

'मैं जनादन हूँ मंडम ! नमस्कार और यह मेर एक अच्छे मित्र ! साहब से होटल म मिल कर आ रहे हैं। आप उहाँ मीट नही खाने देती।'

'मैं कौन हाती हूँ रोकन चात्री !' पीली साडी का गदन क पीछे स सपटते हुए कामिनी बोली, "कोई किसी को क्या रोके ? हाटल म खायें या घर पर। चाहें तो बना कर भी दे सकती हूँ। मुझे खास शौक नही था। बिल्कुल छोड दिया। व मुझे इसिन्ट नही करते।

'साहब कल हमारे यहाँ खाने पर आयेंगे। आप भी आइये। आपकी मनपसद डाइटम भी बन जायेगी।'

"क्या न्योता देने के लिए कष्ट किया ? उन्ही से कह देत तो क्या मैं नही आती ! आय हैं तो बैठेंगे नही !"

प्रियेश का दम घुटन लगा। वही कामिनी—वैजिटेरियन नान वैजिटेरियन।

'आप ह मि० प्रियेश" अदर साफे पर बैठते हुए जनादन ठीक स परिचय देन लगा। फिर प्रियेश को गुमसुम गूडा दस्तकर बोला—'बैठो यार !'

कामिनी ने पहली बार उधर गौर किया। हाथ अनायास स्विच पर चला गया। 'खट' के साथ ट्यूब लाइट न पूर वातावरण को बिस्तार द दिया जैसे।

और इधर प्रियेश सोफे पर सिंकुड-सा गया, जैसे इतनी तज रागनी

मे कही से नगा न दिखने लगे ।

ओह आप ! " भरसक प्रयत्न कर कामिनी तटस्थ स्वर में बोली,  
"जानती हूँ प्रियेश जी को ।"

गुट । जनादन वापस उत्साह में भर गया, 'जानती हागी । आप भी तो जोधपुर रह चुकी ह ।

'हा, हमार साथ ही पढत थे आप ।' एक उठता बढता स्वर ।

तब तो खूब रही । इनकी एक परेशानी है ।" जनादन ने सौफे के हृत्थे पर अँगुलिया नचात हुए कहा ।

वह भी समथ गयी अब " कामिनी ने आत्मविश्वास के साथ कहा, हमारे आहूजा साहन लकी छुटटी पर गथ हैं । उनका काम नी मुप ही देखना पड रहा है । पहल तो वावू लोग कागज, ठोक स ऊपर तर पहुँचने नही देत । हर मामूली केस म मौ मौ अडगे लगाकर अपनी कना का प्रदशन करत रहत हैं । खैर कल ही मैंन मारे कागज दख लिने थे । पूरा मामला समथ गयी हूँ । एट तो त्रिन्कुल भी घरदान की ज़रत नही । एक मिनट—आपके लिए चाय कामिनी किमी को नावाब देने के लिए मुडो ।

'नहीं ' प्रियेश की जवान खुशी और साथ ही किमी दब दब न लडखण कर रह गयी ।

'नहीं मडम । प्रियेश की धान का पूरा करन ना दायित्व जनादन न ले लिया आपकष्ट नही करें जब न फिर मुनाकात होगी ।' यह खडा होन के लिए थोडा हिना ' बस आप तो इनके कागज त लीजिए ।

आवश्यकता नही पडेगी । फिर नी अपनी तसरली के लिए बगर छोट जायें । लान् ।' कामिनी न हाथ घडा लिया । अस गुजर जमान की दान्ती का हाथ ।

प्रियेश न उठ कर जम-तम तीन चार कागज, अपील रसाग की फोटो स्टट घगरह, जाग बड़ कर मँभलवा दी । फिर नही रवा बही । अपन की झटपाना-सा दन हुए कमर न बाहर आ गमा ।

जनादन न घोर न प्रियेश का अनुमरण किया— अच्छा ता आपा शे भयम, पहल हुए जग मुवा । जन प्रियेश के व्यवहार के लिए धमा

मौन रहा हा ।

प्रियश तजी स कुछ आग बढ गया था । एकदम मौन ।

“अब तो खुश हो पटठे ।” जनादन ने मौन को जमाने से बेचात हुए कहा, “देखा कितनी जल्दी और आमांशो स काम बन गया । अपने प्रति ही की तरह कितनी नम दिन चौर निभायते प्रानुदास प्रियशो लगता है, कल दिन पर और भी अमर टाल योगे ।”

प्रियश कुछ नहीं बारा ।

“हो न हो यार लगता है तुम्हारे लिए तो कुछ ज्यादा ही साफट बानर है डमके दिन मे । साथ जा पटत थ । और कोर्द दिन की खास बात रही तो वह भी बता दो । याग न क्या छिपाना ।” जनादन नाटसीय ढग म हँसे जा रहा था । साथ ही रह-रह कर प्रियश के कधो पर हाथ मे क्षटके पर बटवा भी देता जा रहा था ।

पर जसे किसी पत्थर पर हाथ पड-पड कर लौट जाता हो जनादन का । यह उसने थोडी दर के बाद अनुभव किया जब प्रियेश नगभग उखडाता-सा एक पुलिया का सहारा नेता हुआ उसी पर बठ गया । जैम कई-कई दिना की थकावट का बोध एकलपत सिर पर आ गिरा हो ।

जनादन उसके ऐसे हाव भाव देखकर घबरा गया । क्या हो गया भइ । अब तो मुम्हे खूब-खूब खुश नजर आना चाहिए ना ।”

फिर एक लबा मौन जिसे तोडना अब की जनादन को भी अपने झूते से बाहर की बात लगन लगी ।

कुछ मिनट और गुजर गय । जनादन न गौर किया, प्रियेश के हाठ धीरे धीरे हिन रहे है—“पहल तो यह कामिनी मीट, मछली अडे खाने लगी थी । अब फि छोड दिया ।”

‘अपनी मर्जी की आइशाह है । बीन वार साथ सौ वार छोडे । तुमसे मतलब । तुम्हारा काम हा गया । छुट्टी ।’

‘नहीं यह बात नहीं—’ प्रियेश जसे कराह कर चुप हो गया ।

ता फिर क्या बात है ?” जनादन ने पूछा ।

‘बस यही तो मैं तुम्हें बतान जा रहा हूँ । तुमने अभी कहा था ना,

दोस्ता से कुछ नहीं छिपाते, तो मुनो ।”

जनादन प्रियेश के साथ थोड़ा और सटकर बठ गया— हू ।’

प्रियश धीरे धीरे एस बोनने लगा, जसे अपन अतर क अँधर में स कुछ कुरद कर बाहर रोशनी म रखने को तत्पर हा रहा हो ।

कामिनी मुझे शुरू म ही एक बहुत अच्छी लडकी लगती थी। इनफाक से हमार घरवाला ने यही हमारा सबध पक्का कर दिया । मैं मन हा मन बहुत दुश रहने लगा था ।

एक दिन छोटा भाई नई आने वाली भाभी को देखने की उम्कता लिय चूडिया का नाप देने के वहाँन इनक घर चला गया । वापस आकर जो कुछ उमने बताया, उसमे हमार पूरे घर मे कुहराम मच गया । घात तौर मे मा ने तो हाय-तौजा शुरू कर दी— हाय मैं ऐसी बहू को कम पर ना मक्ती हूँ । मैं तो घर को भ्रष्ट नहीं होत दूगी ।’

दुनरे दिन उहाने कामिनी की मम्मी को बुलवा भेजा । उन्हें बेइज्जत मा किया— यह रिश्ता हमे नहीं करना । आपने हम घोवा दिया’ ऐम ही वाक्या से माता जी न उन्हें कोमा ।

कामिनी की मम्मी सब कुछ मुनती रही । फिर बडे मयन तया विनम्र स्वर म कुछ तथ्यात्मक विवरण दती हुई चली गयी कि जनिम फैमना हम कर लें । उहाने कहा, यहन जी, वसे घोत्रे वाली कोई बात हमन की नहीं । हमारे यहा यत्न बदा नाँन कनिटेरियन बनना है । कामिनी नहीं खाती । बहुत जार लगाया तो भी नहीं पाना । अब की भाई उस खिजाने के लिफ बोला— घाले से खा त अब तो । आग तो या नहीं पाओगी । तरगोगी ।

‘लाओ तब तो मैं जरूर खाया करूँगी जब तक मन करेगा । जब दिन करना जाडदूगी ।’ नादान लडकी । जोर खान बैठ गयी । फिर दो एक स्फा वह कर भी भँगवाया । मैंन साचा कि यदि कोई छिपा हूड चाह जाग उठी है तो पूरी कर देने दा । आग तो घायगी नहीं । पाडा मगरगी है । चिड़ा रही है तो हम इमम क्या उनमें ।

आप हम तो न उलझाएँ । मरी माता जी का सहजा मछ हो गया था ।

कामिनी की मम्मी ने उन्हें ममझाने का प्रयत्न किया—'बहन जी शादी के बाद तो सब लडकियाँ ममुराल के राग में रँग जाती हैं। आप स्वयं समझती हैं। सारा गहर जानता है नरकी कितनी टलेंटिड है। कम्पीटीशन की तैयारी में लगी हुई है। जाग में आगे पढ़ना चाहती है। बस हम ही जरा भार-मुक्त होना चाहते थे।

'ठाँक है फिर,' जाता जी ने उन्हें जैसे जान का सक्न किया, 'हम साच कर आपका सूचित कर देंगे।'

घर पर हम सब के बीच तीन-चार रोज़ तर चञ्चल चलती रही। मैं तो किसी सूत्र में कामिनी जनी मुन्दर प्रतिभामम्पन लडकी को खोना नहीं चाहता था। मुझे तो राग राग एसा लगन लगा था कि सभी अभिन्न घटा तक कि घर वाले मुझमें जैन रूपा करन लग ह। अतः मैंने यह फमना हुआ कि एक बार मैं त्रय कामिनी ने मिनू। उस समय। और यदि वह जाइए मीटन जाने का वचन देता रिश्ता मन् कर लिया जाया।'

इतना कहकर प्रियेश चुप हा गया।

"फिर क्या हुआ?" जनादन ने एसे पूछा जैसे कोई बच्चा कहानी के जरा स्वत ही पूछता है—हाँ फिर आगे।

प्रियेश ने एक गहरी साँस के साथ अँगड़ाइ ली—"कामिनी ने बिल्कुल यही कहा था जा, जो मेरा मतलब मेरा मतलब जो अभी थोड़ी देर पहले हम दोनों के सामने कहा था, कोई किसी का क्या रोके।'

फिर कुछ देर का मौन। तभी उसी रास्त से दूर में एक बस आती दिखायी दी। प्रियेश उधर ही गौर से देखने लगा। बस के ऊपर बोर्ड पर 'आधपुर' लिखा था। प्रियेश ने हाथ के इशारे से उसे रोका। जाह थी।

प्रियेश बड़े उतावलेपन के आलम में उसमें चढ़ गया।

दुलबत के यहा मेरा थोडा सामान रखा है। कभी भी भिजवा देना। महरबानी होगी दाम्त।"



## लाल तरंगे

टप टप ।

मरी दायी हथेली ने लहू चू रहा है, जिस में अपन बायें हाथ स थामे हुए हूँ ।

‘हम अभी जात हैं, गोली चलन स पूव मेर दो महपाठिया का शोर दूर से सुनायी दिया था । इससे जागे वे शब्द वादिया न लो गये थे । मुझ अकेले को इतन बड़े दस्त से घिरा हुआ दखकर वे फारन मदद कर सकन मे असमथ थे और तेजी स भाग गम थ । शायद दोबारा पूरे दल-बल सहित आने के लिए ।

मन-मन पहल दो गोलियाँ इन लोगो न उधर ही दाग दी थीं जिधर स आवाज हुई थी । य गोलियाँ हवा म खाली गयी थीं ।

‘कौन थे यह हरामी की औलाद । इस गजना के साथ ही पिस्तौल का मुह मरी तरफ घूम गया था ।

‘नहीं-नहीं ।’ मैंन प्रायना के स्वर म हाथ उठाकर उह राका था । हूँ । एक भरी गानी दकर वे घाड़ी दर के लिए रुक गये थ । फिर मुश्किन स एक-दो मिनट का सवाद मर और उनके बीच हुआ था । आधिर एक बार फिर दहशत उगलती हुई मन की आवाज गूँज गयी थी और समा क माथ जिन का दहलान वान बहका चुलत हुए थे । फिर नारी जूता की आवाज दूर-दूर फैलती चली गयी थी ।

उन गवन वहाँ म हटन ही माहौल म यकलज तबदीनीआ गयी था ।

अब मैं स्वतंत्र था, और नितांत अकेला। कुछ भी करने के लिए या सोचने के लिए स्वतंत्र। मगर कसी स्वतंत्रता? यह तो स्वतंत्रता की एक अभिशप्त स्थिति थी, जिसमें हम नामीतूद लोगो को गानिया से धुन सकते हैं। या फिर अपने-आप को बोलत हुए चबात रहत है।

हमें इस तरह की आजादी दर्शन वाल विल्कुल बफिक्र तबियत के यादशाह हात है। व अच्छी तरह से जानत हैं कि मुफ्त में लूट हुए माल की तरह मनचाही आजादी का आनंद भी केवल वही लूट सकते हैं।

नहीं कह सकता यह सब मैंने उसी वक्त सोचा था जधवा बाद में।

टप टप! तहू के जमीन पर गिरन का अहमाम।

उस वक्त पहल ता मैं पीटा ली प्रखरता को नापन के लिए अपनी दोना आखा का गार गार हथेली पर गजाता रहा था तबिन जदम की गन्गई अनचीही रह जाती। कारण खून की पता न मसूची हथेली को हर जगह से टक रखा था।

फिर टप टप! नाउ बूदाबानी।

तब उधर से ध्यान हटान के लिए अपनी दष्टि का जमीन से उठाकर आममान तक ले गया था। वहाँ छोट छोटे कुछ पत्थी सब भी उड़ रहे थे। पैसा से रक्त दुक्त पत्ते सर रहे थे। चारा ओर छोटी छोटी पहाडियाँ शान्तिपूर्वक दुरांग मुवह की खुमारी में डूब गयी थी।

तबिन इसमें बद मिश्रित पहल तब जद चतन दहल गया था। मन! गोली की आवाज। बई बकर पहाडिया से नीचे लुठके आय थे। परिन्द बनी प्रतापी न छत्रांगों मार गये ऊपर आममाँ की जानिव। ममप्र वातावरण लहशन से नहा उठा था।

तब लगा था दद हथेली में नहीं मस्तिष्क में जाकर बैठ गया है किन्हीं डीठ बाब की तरह। तार भगान पर उडता नहीं।

फिर महमा में तब घायन पती की मानिंद फडफडाता हुआ मन-माहुर में जान्जानि फाटके के नाचे जा पहुँचा। फाटक पर लगे का निगान जमाना हुआ अन्दर दाजिन हो गया। यह एक तिविल सजन का आमान था।

गुवह-नडक, अंधर का चीरती बद चमकीली गिरण। लाल-नान

नपटे। पुजारी अग्नि प्रज्वलित किय है। मन्त्रोच्चारण का ध्वनि—ऊ  
भूभव स्व प्रचोदयात्। रवाहा। म्ब म स्थात् तक पहुचन-पहुचन  
'ब' जैसे हाहाहा कर उठता है और शोना म बिनीन हा जाता ह।

दूसरी तरफ नौकर गनरी म झाड पाछ 'हा है। पद व छलन गड  
पर 'पटाव पटाव' वज रहे ह। सब कोइ अपने प्रात धम म व्यत है।

मेरी हथेली की नमें 'फटर फटर कग्नी हुई वज रही ट। टप-प।  
लाल लान बुछ कतर नीले बैंगनी फर्श म एक नया रंग भर रहे हैं।

टाँय टाँय' तोता पिजरे म फडफडाता है। गायद मेरी हथेली पर  
उमकी नञ' पड गयी है। डरकर चीख उठा है— टाय टाय। फर फड,  
पा के वजन पजा के लोह मे टकगन स बैंगले के तमाम दरम्बा के पत  
थरथरा उठे ह। समूचा बैंगना जस एकत्रारगी हिन् गया हे। नेकिन फिर  
भी किमी न नही दमा है मरी ओर।

एक साच थोडी सी ऊपर की जोर 'भर आयी है—गर कोई और  
वक्त होता ना एमे मौके का फायदा उठाता। चद कीमती चीजें उठाकर  
रफूचकर हो जाता। इम प्रकार अपने लुट जान और साथ ही उपक्षित  
होने का बदला मही म ले लेता। लेकिन जानता हूँ यह एकदम खोखली  
साच है। इम वक्त तो मुझे एक 'नायक' डाक्टर की दरबार है। मैं गिरत  
गिरत बचा हूँ।

म्वाहा के माथ शायद अब की मेर मुहन हा हा हाय जमा कई  
स्वर जोड दिया था। तत्र पुजारी उठा था अपने लम्ब वस्त्रा का पाटना  
हुआ। मन सम्पन्न हो गया। उनने मरी आर देखा। हाय उठाकर हैला  
किया या आणीवाद दिया। मरा गला सूख रहा था। रंगी हुई हथेली मे  
उम डाक्टर का बुलान का आगरा किया। वह राम राम जमा कुछ  
बुन्दुबाना हुआ गनरी आम कर गया।

डाक्टर अपन मुवह वान विस्तुल मही अदाज म आया था। मामा  
इनडाग करान क बाद। नाइट गाउन म। नाच पीनी डारी लानरवाही  
मे पग की जोर गून रही थी। अनमाई हुई जाँवें। 'पै' 'पै' म ब' टो  
का मग।

अर नुम ! वह मरी जानिय मुघानिय हुआ। शुक्र है। मुझ पन्वान

गया, एसा लगा था। मेरे बहुत मे सहपाठी उमी मिबिन लाइन एगिया म रहत हैं। एनीनिए अस्सग यहाँ बहा म राहुगुजर होती है।

“टाक्ट ’र’ मर मुह स नही निकल मना। और मैंने हथेनी उनकी ओर बढा दी।

औह, यह ता बडी मामूनी चोट है। नौजवान रोग घबरात नही।

महसा उनकी नजर, फग पर बन, जगह जगह खून के कतरा पर पडी और वह उबल पड—“ओए महशिए। मफाई का ध्यान रख। अब की नौकर दौटा आया।

फिर वे मुझे वाशवेसन के पास ले गये। इतमीनात से चाय की एक चुम्की ली। मग को ऊपर शैल्फ पर रखा। टाटी खोलकर मेरा हाथ नीचे रख लिया। दखने लगे, गुनाबी रग पाट मे झिनमिल करने लगा था।

‘हूँ गोली रगी है।’ पहली बार जैसे गौर से मुआइना किया उन्हाने। आखें मनी—“बैसे हुआ यह सब ?

मैंने भी पहली बार परखा—हथेली के बीचोबीच कारतूस का छर्ता स्पष्ट रूप से चमकने लगा था।

उहनि चाय की आखिरी चुस्की ली। खाली मग मे मेरी हथेली पर दबाव डाला।

‘उई आयी।’ मैं कराह उठा। लगा था शायद इस दबाव से गोली बाहर आ लुढ़केगी और मैं झट से उसे उठा लूंगा। सोच नहीं पाया क्यों ? खेलन के लिए ? या कि उन पुलिस वाला की करतूत को जिस-तिम के सामन छर्ता दिखाकर विज्ञापित करने हेतु।

मगर देखा, गात्री अपने पूवस्थान पर ज्या की त्या चिपकी पडी है। अलपत्ता पानी पडने से खून का रग कुछ मुलायम जरूर पड गया है।

‘इमें निकालन के लिए एक छोटा सा आप्रेशन करना होगा।’

‘तो कर डा ’ नि और ‘ए’ मेरे तालू स ही चिपके रह गये। मैंने पाना की चाह के लिए इशारा किया।

पानी पीकर गला कुछ तर हुआ। पर-तु लगाना अपना इतना मारा खून देखते रहने मे घबराहट होन लगी थी। और माय ही लगन लगा था कि शायद मतली हो जाय। इसके बावजूद मैंने अपन पर काबू पात हुए

उत्तम— कर डालिए आप्रेशन डाक्टर साहब ।' शायद पानी उनसे से गला कुछ साफ हो गया था ।

डाक्टर न मममा । गाउन की ग्राह कुछ ऊपर चढ़ायी । दाबारा आँखों का मममा । बदन धीरे धीरे एक एक लपट का अलग अलग रखत हुए दान— तो मग मतलब जाइ मीन टू मे गू सी यग मन नौवान, पर एक पुनिम केम है । उसम हम तुत हस्तनोप नही कर सकत । स्थितिए जाजा । पहने पुलिम म रिपाट लिखवाकर आओ । हा, जरा फुर्ती करा ।'

पर तु कस सम्भव है ? क्या पुलिस वाले पुलिस वाला के विरुद्ध ? मेरे मम्मुख पूर्वदश्य और पुलिस वाला के बहशी बहबह गूज गय और मुझे जस बहाशी होन लगी ।

डाक्टर ने मेरे अवच्छेद स्वर को अपनी कल्पना म गति दी— ता पुलिस वाला से भिडकर जा रहू हो । तब ता और भी जरूरी है यह सब । जाखिर हम भी नौकरी करनी है ।

' मैं भिडा नही, उहान ही—डाक्टर जाबाज म अस्वाभाविक और दुदम्य थरयगट्ट थी ।

ठहरा ।" वे लम्ब डग भरत हुए गय और वापस आ गय—'पह टनलट लो । कुछ ताकत आयगी । म तुम्हारी वान नहा समझ सक्ता । जरूरत भी नही मुझे समझान की । पुलिस कप्तान का फोन किय दा है । उनका सारा माजरा लिखवा देना । घरान को बाइ वान नहा । शाबाश भागा । जम बरस म दौडान के लिए वन, टू धी कर रहे हा ।

पता नही टवलट का जमर था या मात्र मरी जिजीविषा । जराब जाधे घट के अन्दर पूछन पुत्रात में पुनिम कप्तान के बँगल जा पहुँचा ।

मर बायें हाय म मरी दाया नहनुहान हथली है ।

पुनिम कप्तान बम पूरी बर्दी म लैस घर से निक्लन ही वाल है । पढाम म ही वाना है ।

' डाक्टर साहब का फोन मिना हागा जायरा । मैं उनके लम्ब का मन्नाटी हू जा आजबान

नही जनी से अमरी वान पट जाया । उहान अपना हाय

निकाल ली।

‘सुबह की बस से उतरा था। मैंने रेडिया से सुन लिया था कि शहर में अब पूरी तरह से शांति है। लोग अपने-अपने घरों का लौट आ रहे हैं या लौट रहे हैं।’

दर की एक टोम फिर से हथेली के नीचे से उछली और मैं उठक गया।

‘हाँ-हाँ, हरी अप, अमली मुझे पर आओ। शांति तो आदमी के मन की चीज है।’ उन्होंने दाया कंधा सिकाड़ते हुए अपना कानन दुस्मत् किया।

‘जब वैसे भी चलने लगी थी तो मगर मोचना गरवानिव नहीं था कि सब अमन चैन हो गया है।’

‘मैं दाव से कहता हूँ कहीं कोई गड़बड़ नहीं है। कहीं से किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना की खबर नहीं है। तुम नौजवान हो गम खून घाने। तुम्हीं किसी में जरूर उनस गय होंगे। अपना चालचलन पुंडरको दोस्त। मेरी तुमको यही नेक सनाह है।’

अभी वे शांति और नेक मशविरों पर और लम्बा भाषण पाडन कि मैं टोक दिया—

‘नहीं मैं त्रिक्कुल अपने रास्ते जा रहा था। और मेरा भला क्या नापाक डराना हो सकता था। आप दज करें नाहय ता रात में पुलिस।’

‘हाँ-हाँ, डोट धी अफेड् माफ माफ कहो। जब की उन्होंने अपनी लम्बी अँगुलिया से कंधे के स्टार को छुआ।

‘कुछ पुलिस के जवान थे।’ अब मैं तजी में बोलने लगा ताकि जल्दी बयान दज कराने के बाद फौरन इस भयकर यत्रगा ने मुक्ति पा मकू और उन पुलिस के जवानों के पीछे-पीछे सिरा पर बहुत-सा मामान उठाय कुछ नवपुत्रक सामने से रहे थे। कुछ आधुनिक वेशभूषा में तो कुछ फट हाला।

दस रोकें और देखो हमक पास “या-क्या है।” इरपवटर न जार त पीछे चलत एक छोट बंद के लडके की, मेरी जा इगित कत हुए कहा।

‘मगर यह तो दह नहीं लगता मर! देशक नाम पूछकर दख

नीति। दाढ़ी वाल सब अलग स्टाइल ।'

बक्कू की दुम, प्रतिक्रिया में वह गरज उठा। मगर फिर जान कुछ साचकर दूसरे क्षण महज भी हा गया—'इस बात से परा फक पन्ना है। खैर टटपूजिय का जान दो।' मग हत्के फुल्क कपडा को दखन हुए आदश जारी हुआ। इस पर मैं थोडा आरवस्त हा गया। सहसा मरी निगाह दूसरे नम्बर के व्यक्ति के सामान के ऊपर के अटची पर पग। भूर वाले चौखानदार कपडे स जडा हुआ अटची। एक वान स थाग उघडा हुआ। निश्चित रूप स मैं पहचान गया, यह मेरा था और मैं किमी आस्था के वशीभूत वाल उठा—'बडे भाइ, वह ऊपर वाल अटची मरा है।' बग यही मेरा कमूर था साहब।

एक न पूछा— तो तुम घर छोडकर क्या भाग थे ?'

क्या तुमन इसकी रिपोट लिखवायी ?' इट दूसरे सिपाही ने पूछ डाला।

नहीं। कब लिखवाता। मुझे मालूम ही कहा था। मैं ता दा नि की छट्टी गुजारन गाव गया था। बाद में मुना था शहर मे दा हो गये हैं।'

अभी सब मालूम हा जाता है वच्चू।' इस्पेक्टर न मरी आर पिस्तौल तानकर कहा— जरूर तुम्हार पास दो नम्बर का पना है जो चोरी हाने पर भी रिपोट नहीं लिखवायी।'

नहीं-नहीं।' मैंन पिस्तौल चलाने से महमते हुए हाथ स उठ गेका। वस तभी सनन की आवाज के साथ मेरी हथेली घायल हा गया। जब तक मैं संभलू, वे कहकह लगाने हुए पहाडिया के बीच स गायद हा गये। मैंन दूसरे हाथ स घायल हथेली को टेक देते हुए बात समाप्त कः।

अब की वटो वेफित्री के साथ मेरी पीठ थपथपायी कप्तान साहब न। कहा— यग मैंन टाट वरी, हम इक्वायरी करा लेंगे। पुलिस भेत म ब डाकू नी हा मकत ह। पुलिस जवान ऐसे नहा होन। जा सामान लूटत हैं दरअन्त व टाकू होन ह। तुम्ह यही माकर चलना चाहिए कि पुलिस का यह वान हरगिज नहीं हो मफता।

मैं वैन ठुठ बह मक्ता हूँ बिना प्रमाण के। मैं अनमनसत म प

गया।

तब चाँदी दर नर व कुछ साँचत रहे फिर बाल—“हाँ, एक बात मैं जरूर साँचना हूँ कि एक प्लाटून एक हफ्त की चाँदमारी पर जरूर गयी थी। तुम नहीं जानत वहा जगल म बडी बोरिंग लाइफ हाती है। अगर यह वही प्लाटून हो तो हा सकता ह वहाँ उनके निशाने ठीक न लग हा तभी—मेरा मतलब है तुम मेरी बात समझ रहे हाग।

मैं कहना चाहता था कि जिन घरों का उन्होंने निशाना बनाया था उनके हिमाव से पूरे निशाने न लगन म ही, हर घर का, और हर आत-जात का उन्होंने अपना निशाना बना लिया। डाकुआ का मजहब, जाति या अपनी बर्दी स क्या लना देना। पर इस विषय मे चुप्पी ही साध ली। बोला—‘साहब, जल्दी स कारवाई कीजिए ताकि मैं आप्रेशन करवा लूँ।’

उन्होंने जो कुछ भी थाडा बहुत नोट किया था उस फाड डाला और कहा—‘यह कोई मामला नहीं बनता। तुम मुझसे सहमत हाग कि इस तरह पुलिस को बदनाम करने से उसका मनोबल गिरता है। तुम समझदार बच्चे हो।’

‘परन्तु मेरे हाय का आप्रेशन कस हागा ? आप कुछ तो दज करा दें।’ मैं लगभग गिडगिडात हुए कहा।

‘एक प्राइवेट डाक्टर हैं। उनका पता नोट किये देता हूँ। मेरा नाम लेना। दिक्कत नहीं होगी। बाहर र्का अभी आया।’

मैं बाहर लॉन म आकर चिट लेन के इतजार मे खडा हो गया।

हटात फाटक के पास से भागी जूता की आवाज हुई और फिर कुछ खुसुरफुभर।

अरे, यह तो वही सुबह वाला मालूम हाता है।’

‘हुआ बरे। बम एक अटची को रो रहा है। शायद अपन जने हुए घर तक ता गया ही नहीं।’

मारो गोली। जल्दी म साहब का हिम्सा रख जाओ और जागे वना। बहुत थक गया हूँ।

दौना मरे पास से गुजरें। सुबह वाले ही थे। चौखाने वाला, एक



बोन में थोड़ा उधड़ा हुआ, अटंकी एक के हाथ में झूत रहा था।

मैं एक निरपेक्ष दृष्टि अपनाये खड़ा रहा। मैं उनका नहीं पहचानता। अपने अटंकी को नहीं पहचानता। डाक्टर को नहीं पहचानता। पुलिस कप्तान को भी नहीं पहचानता। यहाँ तक कि अपने आपको भी नहीं पहचानता।

इस नएके बावजूद एक बार फिर वही अटंकी बेस मेरी बंद आँखों के सामने में झूल गया। इसके साथ मेरी धायल लाल सुख हथेली में हवा में लहरा गयी। फिर मेरे पूरे जिरम का चप्पा चप्पा जलज-अलग खण्डा में खच्च-खच्च सा करने लगा।

और मैं बेहोशी के आलम में पास की पाठियों में जा लुटका।

फिर गोली चलने की आवाज।

अब की शायद एक साथ कई गोनियाँ चली थी और शायद इस कारण मेरी बेहोशी टूटी थी।

मेरे महपाठियों के स्वर थे— 'जिन्दाबाद।' मेरे लिए इनाफ के उदघोषक नारे। पुलिस अत्याचार के खिलाफ मधय जारी रखने की शपथें।

इधर दूसरी तरफ से दूसरे किस्म की आवाजें— 'मारो साला को। पट नहीं भरा इनका। और चनाओ गोनी। स्टूडेण्ट हूँ कि गुंडे। राज नीति में पडते हूँ। मजा चखा दो हमेशा के लिए। इनके बाप दादा और आन वाली आँसुओं भी याद करें।' कोई हुकम जारी कर रहा था— शायद पुलिस कप्तान। फिर भाग लौड। और फिर वापस पथराव और नारे।

मैं धीरे धीरे उठ खड़ा हुआ हूँ।

मेरी दायी हथेली से लहूँ चू रहा है। मैं इनके बावें हाथ का सहाय देना छोड़ दिया है किन्तु देखता हूँ कि कई हाथ एक साथ लहरा कर इस सहारा दे रहे हैं। मेरी हथेली में नहीं सड़का आधा में लहूँ चू रहा है।

## अंधेरा

अचानक रात तीन बजे के करीब चाचाजी की नाजूक हालत की खबर देता हुआ कोई आगे इतना दृढ़ दन निकल गया।

टाच को हाथ लगाया। बकाश थी। उसी समय बशव की याद हो आयी जो अक्सर शहर के मदभ म कहन लगा था—वक्त जरूरत किसी दोस्त के पास जाकर देखिए—उमक सैल लोक कर चुके हगि।

अब मेर लिए कठिनार्द यही थी कि गम्ने मे कही रोशनी नही थी। गलियो और चौराहा के साथ-साथ अंधेरा जैम मरे जिस्म मे भी घुसन लगा था। इससे म कुछ भयाक्रान्त हा चना था। सफर, म ऐमे हालात मे त्रिन्कुल शुरू नही करना चाहता था। तभी बेशव का एक वाक्य याद आ गया। वह कहा करता था—हर चीज का हमार चाहन या न चाहने से जरूर कोई सबघ हो ही—ऐसा कहाँ होता है।

बेशव का चेहरा उस अंधेर को चीरता-सा मेरे सम्मुख हिलने डुनन लगा। इममे मैं किंचित अधिक् भयभीत हो उठा और साथ ही कुछ ऐसा भी लगन लगा कि मेरे पीछे पीछे या बगन मे कोई चल रहा है।

अजीब बात है अब मैं मफर के मकसद मे देखबर होन लगा था। और फक्त रोशनी दूदन की फिराक म वदम ही चला था।

इससे भी एक और अजीब बात यह हुई थी, कि मैं किसी चीज म टकरा कर सन्खडा गया था। मुने गगा था जन्म कही कुछ था जो अब डूर छिटक गया है। अब पर के किमी भाग से खून रिमन लगा है। किन्तु

जल्दी ही मैं ठाकर, लडखडाहट, चोट, गून जैम बिंदुआ स दूर हटकर कल्पना म केशव के गून से रंगे हाथ दयन नगा था। और फिर उधर न ध्यान का झटकता हुआ फुछ टटोलता-मा जागे बडन लगा था।

म कभी तो रोशनी का पकड़न के लिए तज हा जाना और कभी अवरोधा का टटोलन मे भरी गति शिथिल पड जाती। केशव कहा करता था—या ना राशनी डूड तो। न मिल को अवरोधा की तलाश जारी कर दो। फिर साग ऊबह-खाबड गमता खुद बखुद हमवार बन जाता है।

कुछ कदम पीछे चरमराहट हुइ—जम्पर कोई मरा पीछा कर रहा है। मैं र्व गया। आवाज र्व गयी। कुत्ता के रान की आवाज मुनाई दा। मुझे लगा हा न हा य रोशनी क लिए मुह ऊंचा उठाय फरिमा कर रह है।

मैंने आसमान की तरफ गार से दखा—शायद चांद दिखाई द जाय। वमुश्किन कही दर-दूर तक इक्के दुक्के तार दीख सके थे। बाका सिनात का बडे बडे दैत्याकार बादला न मितकर घेराव कर रखा था।

मुझे लगा काई मर नजदीक आया है। मुझे ठिठकत दख या तो एकदम से आगे बड गया है या फिर निकट की झाडिया म जा छिपा है।

मैं फिर स फूक-फूक कर कदम बटान लगा।

केशव के अनुमार क्रूर शक्तियां बडी आसानी स अधकार म अपना प्रयोजन सिद्ध कर लेती है। उनका डित पनपती राशनी को हूप जाने म निहित है। एसी ही ऊटपटांग बातें करता हुआ केशव किसी अधरी रात म खो गया था।

केशव खूबसूरत साथ ही खूब गठे हुए शरीर का मजबूत नौजवान था। पहाडी गाव की तराई म रहनेवाता। कुछ लोगो का कहना है कि वहा आमपाम के जगला मे बहुत स खतरनाक नरभक्षिया स डर कर शहर भाग आया था। किंतु केशव का कहना था कि वह तो जान-बूझकर एत रास्ता म निकनता था जिधर नरभक्षिया के हान की आशका हुआ करता थी। उमन कई जगली नरभक्षिया का मारा भी था। कोई भन हा सन्ह करे परंतु मुझे ता उमके शरीर का देखकर तथा आवाज पर कभी अविश्याम नही हुआ जो उसके अदम्य माहम की परिचायक होती।



दरवाजा खोल बैठी ।

मगध डकुआ का देखकर वह काप उठी थी । पिरतौल गिवाक उहान अलमारी खुलवार्द । उसके मव आभूषण लूट निय । मात्र दा मिनट के अन्दर । और चलते बने थे ।

डाकुआ के चले जान के बाद दस मिनट तक नोनतियया गुम-गुम बैठी रही फिर जैसे एकाएक उममे आत्मविश्वास जाग उठा था—अब वह गैवार नहीं है बतिक एक शहरी औरत है ।

उसने मकान को ताला लगाया । निक्ट के पुनिम-स्टेशन जा पहुँची । आजा निराशा से उद्वेलित मिना कमचारिया की जोर दमे, जल्ला-जनी सारा काड बह मुनाया । फिर धानेदार से पूगी गिपोट दज करने का अनुगोध करने लगी ।

गिपोट लिखने से पहले हमारे लिए मौज पर नाच करना जरूरी होता है । धानेदार ने गम्भीर स्वर निक्ाला । ह्यूटी पर तनात दोना मिपाहिया का उमक माथ रवाना कर लिया । और उा सब घर पहुँचन न पहुँचन स्वय भी आ गया ।

एक मिपाही को दरवाजा बंद करने का संकेत कर वह निया से मग्धाधित हुआ— यह हार ?

'यह हार ! हाँ यह मरा हार है । नतियया हकवा गयी । समय म न आया बह क्या उत्तर द—या धानेदार क प्रश्न का सत्नी अय नया है ?

धानदार न हार छून छून उमके गन म बाह चाल दी । सब-सब बयान दो ' वह डांटन लगा था ।

जाह ! नतियया एतनी ता डाकुआ के मामने भी नहीं घबरायी थी । किनी तरह लडगुहानी आवाज म उमने ममपाया— जल्दी म जानी नउर डग पर नहीं पची होगी ।

दर डर के मारे पीछे हटी तो एक मिपाही ने उमकी कमर म बसकर हाथ छाटा—'गाह्य मनी भी यहाँ बग्घनी बगनी है ।

रुआ—दरुआ । बसत जाया मन गने । दरुओ पनी क्या है ? धानदार गुंगार मग रग था ।

'दरु नतियया की आँखा क गमन पूगी तरह जघवार छा गया

था। रात भर वह बहाश पड़ी रही। सुबह होश आने पर उमन पाया था कि वे लाग उनका वह सब कुछ लूट ले गये है जिसे डाकुआ ने छोड़ दिया था।

दूसरे दिन केशव के जान पर नत्थिया न रा राकर मारी घटना के सुनायो धी और कहा था—'मुझे गाव लोटा ने चतो अब मुचे बहा के नरभक्षिया म डर नही लगगा। वह भयानुर होकर वाप रही थी।

गाव हम लोग जरूर चलेंगे,' केव की जाबाज पूरी तरह बदल गयी थी। धान कर्त समय वह हिनडुल भी नहीं रहा था लेकिन कल तक ता मचे यहा जरूरी काम है। उम निपटा कर ही गाव चनेंग।

वत्र काम केशव न उसी रात निपटा दिया था। उमी चौकी पर जानर। धानेदार और दोना निपाहिया की हया करके।

हवा माय-माय कर चलन लगी थी। ऐसी ही कुछ ध्वनि पैदा करता हुआ केशव मीठी वजाया करता था। मुचे लगा शायद केशव ही मुचे छूता सा मर आग निकल गया है। एक बार फिर मैं जातकित हा उठा। तभी दर कही रोशनी की झलक नजर आयी तो मैं संभलकर फिर स चलन लगा।

मुम्ह केशव को पुलिस न पकड लिया।

केशव की गिरफ्तारी के समय नत्थिया दहाडें मार-मार कर रो रही थी। ज्याही वह केशव की ओर बढी, सिपाहिया न बडी नृशसतापूर्वक उस दूर खदड दिया—'यह सब तेरे ही कारण हुआ राड,' हेड वास्टेविल समझा रहा था, तू जरा चुप रह जाती ता वान-सी आफत जा जाती। वान्मी तो आदमी ठहरा। क्या सब वाते आदमी को वतायो जानो ह। जाकिर तरा क्या घिस गया था? अब चुप हो जा। सारी उम्र पडी है रात वा। तीन-तीन हत्याआ के बाद भी वाई फौमी की सजा स मुक्त हुआ ह। उमन जीत म ही धूक दिया।

गन्त भर केशव हयवडियां तन हाया वा उछालता बांहा तथा बधा वा झटका दना हुआ चिल्ला चिल्ला कर अपनी तथा नत्थिया की पूरी दाता राहोरा को सुनाता जाता था— पहल तो मैं जगनी नर-भिक्षया वा भाग करता था। अब शहरी नरभक्षियों को खत्म करेगा।

अभी तो सिर्फ तीन को ही निशाना बनाया है।'

हत्याकाण्ड का मिलमिना चल रहा था। अभी मुकदमा शुरू नहीं हुआ था।

दा तीन तार कुछ लोग ने नलिया को बेशव स मिलान का पत्त बिया था। इजाजत नहीं दी गयी थी। नलिया कहती— ठीक ही तो होता है। क्या अब मैं बेशव को अपनी सूरत दिखलाने तायक रह गयी हूँ। मुझे तो स्वयं अपने शरीर से घणा रो गयी है।'

एक मध्या, बेशव को यह समाचार दिया गया कि नलिया न फंग लगातार आत्महत्या कर ली है।

अब य साले नरभक्षी भरा और क्या ल लेंगे।' वह ठहाक पर ठहाका लगा रहा था। अब तो फाँसी से मुझे क्या डर। लेकिन जो भी नरभक्षी मेरे नजदीक आ गया उसकी खर नहीं। वह मतवाला हो उठा। मीखचा को टेढ़ा कर दिया। उसकी शकल इतनी भयानक हो उठी कि उसके निबट आने का किसी को भी साहस नहीं हो रहा था।

और उसी रात अतल अधिकार में बेशव जेल से फरार हो गया। फिर वह पकड़ा नहीं गया। कुछ लोग का कहना है कि पागल हो गया है। उममें बेल की ताकत आ गयी है। कभी कभार, आसपास के इलाक में किसी नरकारी अधिकारी की हत्या का ममाचार मिलता है तो लोगों के मुह पर अनायास बेशव का नाम आ जाता है।

मुहल्ला नजदीक आ गया था। मुझ्ह किसी मकान ने याकती हुई थोली-थी रोशनी दिखायी दी। मैं चाहने लगा कि इस कहानी का कोई उज्ज्वल पक्ष भी ढूँढ सकूँ। मेरी गति कुछ तीव्र होने लगी। तभी काले में निवान म लिपटा कोई आदमी ठीक भर सामने चुककर खड़ा हा गया।

मौन हो तुम ? मैं भयाक्रात चीख-ना पडा। जावाज कही छिन भिन होकर गटक गयी।

नचमुच मेरे पाम कुछ भी नहीं है।' कहत कहत उमने जेबें उतर दी। वह गिडगिडा रहा था क्या इतनी दूर से मरा पीछा कर रह हा ?

“पौछा तुम कर रहे हो या मैं ?” जय में कुछ-कुछ संभवन नगा था ।

वह भी सँभल रहा था— जाट ! मैं अब समझ गया । आप भी तो पहन में समझा था कि आह ! जाजबन जिन्दगी कितनी असुरक्षित हो गयी है ! उसन लम्बी साँस ली ।

अपनी अपनी बमजोरी और शमिन्दनी को समेटन क लिए हम मुस्करान लगे थे ।

फिर हम माघ-माघ आगे बढ़ गये थे ।



## जडे

‘जरूरत क्या पडी थी आस हुरामी के पुत्तर द घर कदम रखन का” सोहणे शाह गुस्म स काप रू थ ।

इधर रणुका सहमती सिमटती जगल बगल देखती हुई सिर आपी आपत म छुटकारा पाने की तरकीब सोचन म गुमसुम टुई जा रही थी ।

कुछ क्षणा के लिए सोहणे शाह का हाथ अपनी छोटी छोटी दाग के सफेद काल बाला म उलझा ग्हा फिर हाथ को हवा म लहगत हुए गरज उठे—“जवाब द ।

बचाव मे और कुछ नही सूगा तो रणुका धीरे से कह गयी— भाग (भया) भी ता जाता है ।’

भाग की जांच म एक और शाला धधक उठा, इस वान्य से— अच्छा सोहणे शाह बैठे बठे खडे हा गय, नम्वा शरीर कुछ और तन गया— अच्छा तो यह सत्र हा रहा है मरी नाक तन ! आन द ओत्र मूअर नू पर पहल तू वान

रणुका का वाप क थ

पकडा और कमरे म ल

उस उधर छोड पि

पा नटा कर ३ न वै

रही हवा

माहणे क

न क लिए

धर) मर

पात

उम ३

का

का हाथ

“भोहणे इतना गुम्मान कीता करे। उस दिने डाक्टर किस नामुराद विमारी का नाम ले रहा था, बलड प्रेशर। गुस्से के साथ बढ़ती है ऐसी विमारियाँ। लडकियाँ देवी होती हैं। इन पर हाथ नहीं उठाते। एह रेणु छोटी काकी है। चली गयी तो चली गयी, सरदार बिशन द घर

‘उस बुरते दा नाम न पेना वेव,’ साहणे शाह को फिर ताव आन लगा, गदन का चारपाई से थोडा ऊंचा उठाते हुए बोला—“वह समयता था कि उनके बिना हम जिंदा ही नहीं रहग। देखा दो साल पूरे हो गय

‘दो साल स भी ज्यादा।’ साहणे की पत्नी स्वर्णा रसोई स निकल कर सास और पति के पास भूटा खीच लायी। वह बालो पर वाली मेहदी लगाय थी। बीच बीच म स कुछ बाल उठकर सुनहरी चमक मार रह य।

“अब इसकी भी सुनो।” साहणे शाह ने कुछ उपक्षा म पत्नी को घूरा। किंतु पति के शब्दा की बिना परवाह किय स्वर्णा बोलन लगी—हाँ-हाँ मैं क्ती हूँ, उनको अगर कोई घाटा नहीं रहा, तो हमारा भी क्या गया इस बीच। आपके भी एक से एक नये पढे-लिखे दाम्त बन गय। अभी कितनी शान स निके नरे-दर की शादी की। इसी से हमारी रिश्तेदारी भी और बढ़ गयी यहाँ। अब हम जरूरत क्या पडी है, सरदारजी और सरदारनी की।”

‘बस यही इसी शादी पर तो उस हरामी न मेरी इच्छत बेचके ऐसी तसो कर दी ना।’ सोहणे शाह फिर तजी स बालन लगे।

‘बच्चा मे छोटे मोटे लडाई भगड, मन मुटाव होत रहत है पर बडो की तो अपना दिल बडा रखना चाहिए। सारे ते रिश्तेदारी और इधर-उधर के दपनरा द बाबू आदत वाल हमारी दोस्ती को एक मिसाल की तरह मानते थे। बडी बारीकी स हमार सबधा को जानत-पहचानते थे। इसीलिए एक-एक न पूछा, तुम्हार वो सरदारजी दिख नहीं रहे। स्वर्णा का ता इस मामन मे जसे तमाम औरता न घेराव कर लिया। इन औरतो स भगवान बचाये। इनकी बाना की मोरियाँ किसी की छटपट मुनने म बडे मडे लनी ह। अब नीधी बान बताये तो कौन एतवार करे कि हमा सच्चे है। फिर उन साला की इतने लागे के बीच बइच्छती करत भी तो

अपना दिन फटता है। लोगवाग कुरद कर हमार जड़मा पर नमके  
 िडकत रह और हमारा दिन ही जानना है कि किन किस तरह म परदे  
 डान डालकर गद को टकत रहे।'

वय न मोहणे की बाह पकडते हुए उसे जात करन की गज स कहा—  
 'छोटी मोटी बातें कहाँ नहीं होती, साहणे। मैं दूर पिड(गाँव)म थी। पूरी  
 बात मुझे नहीं पता। पर इतना पता है दोस्त जिदगी म एकाघ ही हाता  
 है जो निभाता है नय नबेले यार तो चार दिन के। मतलब निकला ता  
 हमेशा के लिए छुप जात है।'

'ठीक कहती हो बेव ठीक,' सहज भाव से साहणा बोल गया,  
 सच्ची बवे, बचपन म जिमसे बैठ गयी, बैठ गयी। नय लख अपन बने,  
 वह रगत नहीं उभरती दोस्ती मे।

ने फिर मैं और क्या कह रही हूँ नया क सामने बहुत साव  
 साव कर बोलना पड़ता है कही बुरा न लग जाये। तुम्हारी ओर दिग्ने  
 की उच्ची गूँजती आवाज मैंने भी सुनी है। जो मुह मे आया बच दिया।  
 दूसरा चुनती हुई बात की भी ठहाका लगा कर हजम कर गया।'

'बच सर्वान् (आपकी) पूरी बात पता नहीं तो इतना क्या बोलती है ?'  
 स्वर्णा ने थोड़ी तल्खी मे कहा 'बुरा नहीं मानते वो लोग तो क्या हमारे  
 बीच ऐसी बिच बिच होती। हमन तो शुरू सही जमीनें भी नडे-नडे खरीनी  
 थी कि आने वाले वकन मे सागे जिदगी के मुख दु व का माय रहगा। फिर  
 बाबजी की मौन के बाद हमारे पास जो पैसा आया था, तो हमन उही के  
 पाम एक बना-बनाया मकान भी नेन की सोची कि अभी न ही साव रह  
 ने। बिगना भाई बीच मे पडा। मकान बाने की नीयत खगब हा गयी, कि  
 गरजाऊ पार्टी है कुछ ख्याल बसूल कर लो। यत्र इनकी आन्त तो  
 जानो ही हो इनको गुस्मा आ गया। सौदा चोपट। बिगना भाई चाहते  
 तो ये आगम न उमे दवा खन थे। मगर नहीं। के क्या पता उनन मन  
 की जान। पटना झांझर विनार। यह क्या बम धाया। तब फिर  
 हमन दर गही की। हम नयी जग मरता गडा कर जिदा और वा मर  
 दर न जाना न रह गय।

गौम जन के लिए जरा धमी तो गहने क मूड म खर हुए

शब्द फौरन बाहर मडने शुरू हो गये— होर सुण बवे, बडी कुडी निन्की की एक घर मे बात चल रही थी। घर बहुत अच्छा था। मगर इन दोना न हमे डरा दिया कि लालची ह। बहुत माँगेंगे। आपकी हैसियत नही। ऐस म तो पराया भी कहता है—फिकर न कर पार जितना चाहिए हमस लो। शादी मकान का पैसा सब वापस आ जाता है। मगर ये मिया-दीवी चुप्पी मार गये। सारी बात ठडी पड गयी। मैं कहीं काहे का दोस्त है यह ”

‘मैनु निख दिता हुदा ” बवे कुछ और कहना चाहती थी, मगर सोहणे ने उसे टोक दिया।

‘अगे ते सुण। थोडा वक्त गुजरा। सयोग यही थे लडकी के भाग। पता चला कि ऐसे तो खास लालची लोग नही है वे लोग। तब दोबारा बात चलायी और वही बडी धूमधाम से शादी कर दिखायी कि यह मन देखत ही रह गये। मकान और फिर शादी मे इनकी एसी बाट हुई कि बस तब से कूडे बैठे है और हमे दिखाने के लिए सुना है—थाडा आणे, मकान बनवाया है, इन दिता।”

इतनी मीनमेख अच्छी नही, साहणे ! ’ वव न बटे के गुस्त को शान करना चाहा।

‘नही बवेजी, नही, आपका क्या पता ! जाने किधर स अनिल बीच म आ कूदा—“वे सारे हैं ही ऐसे। एक बार दीदी न किनी स प्रकटम के लिए हरमोनियम मागा था। साफ नट गयी कि और किनी का दे रखा है। दूसरे ही दिन की तो बात है। मैं और बकी उन्ही के घर मेल रह प। गैद स्टोर म जा गिरी। उठान गया तो अपनी आखा स देखा। वही बाजा रखा था। सा गुरु दी।

आए तू। तू किदर सी। सुना है आजकल उमी बकी किनी क पर जान लगा है, क्या ?

अनिल का काटा तो खून नही। एकाएक खून क इल्जाम म घर लिया गया हा जस।

याए, बालता क्या नही, साहणे शाह जा इन बीच रणुका का गुनाह भून चुक ये, दुगन बग स अनिल की तरफ पपट। अनिल नट पीछ हट



टाफियाँ। कुछ तो और लटकियों को खिलायी। घा नहीं लायी। आप मागत हैं ना "रेणुका के भोलेपन पर मोहणे शाह को प्यार आन लगा।

'बस बस। बहुत बकवास न कर।' अब की स्वर्णा गरज उठी।

"तब भाभी, मैं तो फिर नहीं गया," अनिल फिर जोश में आ गया। "उधर से हॉकी खेलने को निकलता हूँ ना तो बकी कहता है—नहीं आने देत तो मत आया कर। ऐसा करत हूँ, मैं तेरी हाकी अपन घर घर लिया करूँगा। फील्ड में जाती बार यही स ले जाया करना और आती बार यही छोड़ दिया करना। खराब नहीं होगी तरी हाकी। बेशक निखवा ले। बल्कि तल और पिलाता रहूँगा। मत घुमना घर में। बाहर में आवाज दे देना।"

"पूरे नाटकवाज हैं साले, बाप से लेकर आर जार पूरी उलाह, सब एक्टर हैं।"

"मैंने भी तो एक दिन यही कहा था कि बेकी एक्टर ह। अनिल के हाँठ पर स्मित रखा आकर टहर गयी।

"और किनी?" रेणुका ने बनावटी उत्सुकता से पूछा।

'ओ बी (वह भी) पूरी एक्टरण।' अनिल न उम्मी जदान में रहा।

'ऐ मोरा (सुमरा) बिशना बी बेडा घट (कौन सा ब्रम) एक्टर है।' मोहणे शाह हँसन लगे।

'और सरदारनी बी (भी)। स्वर्णाने भी सबसे म्वर में म्वर मिला दिया। सारा खानदान, मैं कवा (कहूँ) इनको। तो जनम ही पच्चीराज कपूर के घर लेना चाहिए था।'

इस वाक्य को सुनकर पूरे परिवार की हँसी घर में बहुत ऊँच तक गज उठी।

मोहणे शाह दतनी खोर से हँस कि हसते ही चल गये। फिर हँसी में एसा पलटा खाया कि हँसी लवी खाँसी में तबदील हो गयी। व खाँसत चले गये। खाँसी रुकन का नाम नहीं ले रही थी।

बेने ने पानी और चीनी भंगवायी।

सब बच्चा को दूर हटा दिया। स्वर्णा से थोड़ा गुस्से से कहा—'बार-

वार यह किस्मा चानू न कीता कर। जा के रोटी बना, रात हान वाली है।”

रात के जाठ बजे ही सोहणे शाह खाना खाकर लट गय। दिन भर उन्हाण काफी तेन देन दीट धूप की थी। सोच रह थे, थकावट बहुत बन गय है। जल्दी ही नीद आ जायेगी। मगर यही सोचत-सोचने दम से ऊपर का गमय हो गया था। करवट पर करवट बदलते जा रह थे। लगातार बच्चा पत्नी बेव के मवाद मस्तिष्क म ऐसी गूज पैदा कर रह थे ता बाँ में एक-दूसरे से गडडमडड होकर धू धूड ' की सी ध्वनि पदा कर चित्त को धरधराये जा रही थी।

बचपन से ही यारी। कितना अपनापा। पल पल का माय। तट्टार शेर हवली। नदाण महल्ला। गुरु नानक मिडल स्कूल। वह और वह। विजना और सोहणा। पढाई खाम नहीं की। अपने-अपन पतक घघ्रा म लग गय। पहले सोहणे शाह की शादी हुई। छ महीन बाद म कुत्ते की। मैं और स्वर्णा गये। नहीं जा सकते थे। मगर गय। उधार लेकर गय। सब कुछ पूरा किया कि कहीं यार बुरा न मान ले। यारी यारी होता है। पीछे हट तो यारी क्या। पता होता तो जानवर से प्यार की पाण को चढाना। जानवर जानवर ही होता है। इसान नहीं बन सकता। बाट गुरु किमी मे इतना प्यार न बढाना जो बाद मे तकलीफ देवे।

रह-रहकर सब स्थूल अस्थूल का भावना मण्डल म एकाकार हो उठता।

पर उस कुत्ते को औलाद का होश न आयी। पहला मैंने बनान बनवाया। सलो मित्तर मज्जण ता चार बंदम पर चगा। हल्की-सी घट पट गत ही मैं थोडा पीछे हट गया था। आज यह जो अनित, पराण रूप म प्रती के गुणगान गा रहा है जिस वस्त हमन भवान बनवाया था ता यन्ती अनित कहना था कि हमारा भवान रखकर सज जलत ह। यही बात उमन दबी म भी कह दी थी कि तुम हमारा न इतना अच्छा भवान दख कर गाटा (जनन) घात हो। चाहिए ता यह था कि बडे बडप्पन न्गियान। यह की बात बच्च तक सीमित रह जाती। मगर नहीं इसी बात पर

भारी बवडर उठ पडा हुआ। पटपट बडा म भी जड़ें फटाती चनी गयी। मात्ता तो एक दफा वकी न भी मुसस आकर कहा था—चाचे! अनिल मुझे स्कूल क लडका से पिटवाना है। तब मैंन वकी का प्यार किया था और अनिल को एसा लताडा कि हमशा याद रखे। जपन नही, जपन याद के बटे की तरपत्तगी की।

अब उस हरामी को क्या सूची जो हमार नडे जाकर मकान खडा कर दिया। जैसे हमारी छाती पर मूग दलगा। माना जमीन पहले स ल रखी थी। मगर इस बेचकर कही और भी तो ल सकता था। नही हम नीचा दिखान चला कि तुमस अच्छा मकान है। नीच नीच ही होता है। नीचता स बाज नही आ सकता। नीच न एक दफा ता यहा तक इल्जाम मल्ये मड डाला कि तुम्हारा बडा लडका नरन्दर हमार भनीज का इटरव्यू म पास कराने क वहाने उमसे खुद रुपय मारना चाहना है। अब भला एसी टुच्ची बाता का कोई क्या जबाब दे। खुद ही जलत कूडत रहा। दरारें म ही बढती है। अब कोई पूछे लगी नौकरी। शायद आज तक नही

पट म अपच हो रही है। साहणे शाह उठ खडे हुए। शौच हो आय। कुछ देर तक चारपाड पर बठे रह। फिर स लेटे तो फिर स वही बातें कितना जलील हाना पडा इनकी खातिर। शादी समारोहा क मौका पर आदमी का ताकलाज वास्त मुह ता दिखा जाना चाहिए कि नही। काड भेजा। यह नही कि आकर कुछ हाय बटाएँ, लाट साहब ने कहा—खुद नही आये। जैसे हमे और काम न हो। बिल्कुल आखिर मे हम भी ता सभी रिश्तदारा और मिलने वाला को कहना पडा कि सारा ही टन्डर बीमार पड गया है। कब तक लोगा को अनसुना करत रहते। सभी का कहना था। ऐस मौजे कौन-न गेज आत है। कितना शममार हाना पडता है बार-बार। उनके बार म जगर काई नयी खबर दता है ता हम ऐमा दाग रचने हैं—हा-हाँ हम सब कुछ पना है।

बाम्म, लौठ गुमाली, डूब मर। चार पैस क्या आ गय, पख लग गय। मकान म नही हवामहन मे रह रहा है। बच्चा को आने के वहान बुनवान है कि मकान दखें और तारीफ करें। अनिल और रेणुका का घिला पिता-



कर अपनी शान बघार रहे हैं। सरदारनी रोकर सच्ची बन रही है।

मोहणे शाह उठ खड़े हुए। बाहर की ठंडी हवा लगे तो शाह मस्तिष्क कुछ शांत हो।

दरवाजा ऐसे हल्के से भिड़ा दिया कि आवाज पदा न हो। अब क्या किसी को कष्ट दू, दरवाजा खोलने बंद करने का। थोड़ा बल पर चलने में कुछ दिक्कत महसूस हुई, जैसे एकाएक बहुत कमजारी हावी हो उठी हो। वापस कमरे में आ गये। परतु फिर लगा—कमर में बहुत घुटन है। बाहर ठंडक है। ताजी हवा है जिसमें दो चार मिनट नहा आय ध। बोन में पड़ी हुई लाठी उठाई और फिर से उसी तरह घर से बाहर निकल पड़े।

ठक ठक। ठक ठक। रात पूरी तरह से निम्नव्य थी। ठक-ठक। ठक-ठक। बाहर सब कुछ शांत दिखता था। पड़ हल्की मन्ती में झूम रहे थे। ठक ठक में रात की नींद क्षणाश को टूटती और वह करवट बलकर फिर सो जाती। अलसाती और फिर नींद की गहराई में डूब जाता। तबिन स्वयं मोहणे शाह का अदर यही ठक-ठक' हथोडा के बाहर कर रही था। बीगनगी भरा माहौल और बस, ठक ठक।

मगर सामने बीरानगी का तोड़ती कितनी कितनी बत्तियाँ एक साथ जगमगा रही है। क्या किसी के यहाँ शादी है। देखूँ? हाँ इधर ही बतागा था बिगने मरदार का घर। देखूँ। क्या देखूँ! जैम किसी को जलान के लिए कतनी रात में इनकी राशनी कर रखी है, हरामजादे न। बाइ दूँ। ठक ठक। देखूँ। देखने में क्या मुझे पता जायगा। क्या पता बिगा और का घर भी ता हाँ नकता है। बाहर तो कोई भी नहीं दिखता।

ठक ठक। ठक-ठक।

मुागान रात में इनकी रोगनी बाहर बरामद की दीवारा और पर्त का चमका रही है। अदर में बाहर में। ताजे काट हुए चौकार निगन गूण जान पर भी पुगन धार्या का उजागर करने हुए शिवायी दर रह है।

आग। और आग। ठक ठक। ठक-ठक।

आ गया आ गया। अदर में यकनपन आवाज उभरी। इन्हे

माय अदर का जालीदार दरवाजा खुल गया। बिशना सरदार हरी लाल घाना की लुगी बाधे, पट्टी से दाढ़ी कसे हुए बाहर निकल आया।

“आ गया चौकीदार बाबा, मैं बुलाया सी तैनु। इधर जरा ज्यादा ध्यान रखना। लुगी (एकत) जगह पडती है। तुचे खुश रखेगे।”

सोहणे शाह एकटक देखत रह गये।

तब क्षणाश में बिशना सरदार के सामने वजनी बाध गयी—“ओह माफ कर दे सोहणे शाह। की शकल बना रखी है। की हा गया तनु। इतनी कमजोरी माफ करद पैरी हथ लगाना। भूल हा गयी। नही पहचाण सकया।”

सनसनाता तज हवा का थाका आया। वातावरण में सिमकिया सुनायी गी। ‘मेरे नाल वोत बुरा होया इनाँ दिना। पता भी है तुम्हे।’

‘मेरे नाल वी इक ता इक बध (ज्यादा) तबलीफा देखिया असी (हमने) पर तू न आया।’

‘ओए-ओए पता ते लगे।’ करते दोना एक-दूसर स सट गये।

फिर सिसकिया।

बिशने सरदार के घर वाले बाहर आ गये। उधर मोहणे शाह को दूढत सडके और स्वणा सामने आ पहुँचे।

कइया को एक साथ साबी हात देखा तो सोहणे शाह ने बिशने सरदार को हल्का सा धक्का दे मारा—‘हट परे हरामजादे। मैं तरी शकल नही देखना चाहता।’

‘क्यो आया कुत्ते दे पुत्तर, मैंनू जलाणे। नस जा (भाग -) परे मर।’ एक साँस में बिशने सरदार ने कहा ता आवाज भर आयी।

सोहाणे शाह थोडे पीछे हट तो बिशने सरदार ने आगे बढ़कर पकड़ लिया—‘ओए शेर की औलाद आगे बढ़कर पीछे नही हटदी। आज्ञा नालायक।’

फिर बहुत देर तक दोनो एक-दूसरे की छानी से सट खडे रह।

## चलता हुआ पुल

अर्चा ने लेट-लेट ही साइड टेबल की ओर हाथ बढ़ाया। चूड़िया न खनक हुई। टेबल लैम्प स्विच ने खट की भाषा बल्ब तक पहुँचाया। मार बरब ने वह जावाज जनमुनी कर ली।

ओह! रोशनी न जान कब स चली गयी है उसके जावन स!" सोचती हुई अर्चा फिर से आलस म धिर गयी।

शायद सुबह मकर स ही बिजनी गायज हो गयी थी।

वैभे भी अँधर मे अपन जापको गुम कर लेना अचा की एक जाउ बन गयी है। घर की एक एक बत्ती बंद कर देनी है। कटा भा रिक्त कोने से नाइट लैम्प तक नहीं टिमटिमा रहा होता।

साइड टेबल पर टेबल लैम्प रखा होता है। अर्चा पल्टी रहती है तब तक जब तक नींद उस पर पूरी तरह स हावी न हो जाय। नई पुतली पहिनाएँ अखवार कहानी, उपयाम या कुछ भी, जिममे उसक, योग मनोरजन हो सक। लेकिन जमली मकसद हाता है नींद को बुलाना।

किन्तु पिछली रात जा कुछ उसके हाथ गगा उरटे उसन उन तक पहुँचती नींद वो और पीछे तक धकेल लिया था। कोइ लघु उपयाम या जिसकी नायिका का नाम बीना था। बहुत ही बिचित्र जीवन चर्र था बीना का जा अचा क भन मम्मिष्क का बुरी तरह स कुरदता बना गया था, गहरी-नीची तकौरें घीचना हुआ। प्राय मारी घटनाएँ अचा क विगत जीवन म मल खा रही थी। बीना के पिता का जाकस्मिक

निघन। पूरे परिवार में एक ही ऐसा भाई था, जो उस ममूना था। - 1  
उमकी मनाभावनाओं की कद्र करने वाला। वह भाई भी वही दूर-दूर  
के इलाके में वही नग्न पर चला जाता है। वीना उसी वक्त मना  
चाहती है। वही कारणों से भाई अपनी जवान बेहनु का जपन साथ रख  
पान में अगमय है। पीछे परिवार के अन्य सन्धियों से वीना की कही बनती।  
सहार्थ-यादा हाना है। उन मजकी नताड सहत महत वीना साचती  
है कि वही भाई एक पुन था। तब वह तल्यी क उस आनम से बजार  
कलकत्ता चली जाती है। वहा कलकत्ता में उमकी एक सहली बनती  
है। फिर उम सहली क माध्यम से दूनगी सहली बनती है। कुल दो  
सहेलियाँ। पहली की जन्दी ही शादी हो जाती है। दूसरी सहली का नाम  
मजू है। मजू और वीना के बीच पहन की भाँति सवाद बायम नहीं रह  
पान। वीना सोचती है कि पहली सहली के रहत ही शायद, वह मजू का  
बर्दाश्त कर पाती थी। वही पहली सहली पुन थी। किन्तु माय ही वह  
मजू का और लागा सं घिरा हुआ भी बदाश्त नहीं कर पाती। अब वह  
उसमें दूर चले जाने की बात वास्तव सोचती है। फिर महना एक  
दिन, उसे मजू की शादी की सूचना मिलती है। वीना मजू की शादी की  
भीड भाड में अपने को नितात अकेला पाती है। वह वहा जैम जपन  
आपको दुबली और टटालनी फिर रही है। मजू में अलग होकर वीना को  
अब मजू की कभी बुरी तरह से अपरन लगती है। अब

यह सब आखिर क्या बकवास है! इन चरित्र-नायिकाएँ कीन  
विश्वास करेगा। 'अर्चा ने परशान होकर किताब को बद कर दिया  
था। फिर टवल-लम्प के स्विच को अँगूठे में बजा कर अँधेरा कर दिया  
था। चारा दिशाओं में अँधेरा है। फिर भी अर्चा अपनी जाँचें कसकर  
बद कर लेती है। दिन-भर अर्चा छुन्न भाग दौड़ महनत करती है। इस  
तरह से जपन आपका पना दना भी उसकी जादत बन गयी है। इसलिए  
शायद पान एक घटा तो उस जपन का नींद की लपट में आ जाने का  
आभास हाता रहा। वाकी रात वह जैम टडे मेडे बूले में झूतती रही।  
बार-बार साँची जागती रही। बार-बार किताब की वीना उसके पान आती  
रही। पतने तब छरहर आकार और गोरे रूप-राग वाली वीना। जैस

अर्चा की अपनी ही प्रतिच्छाया—बीना। उपयाम की नायिका—बाना। बीना बार-बार अपन पतल मुलायम हाठ अर्चा के बाना तक स जानी रही—अर्चा ! अर्चा ! मेरी रहना, मेरी नखी। मैं बहुत सह लिया अब बस तुम मरी बात ममथो। समझा तो अर्चा

अचा न बाग़ बार साचा, ऐसे सोने ने उठ जाना ही बहतर। पर उठकर भी क्या करे। दूमरे कमरे से और कोई किताब उठा लाय। परतु वह उठ न सकी। ठीक से जाग न सकी। और न ही सो सकी।

अत म निकट के मंदिर से घंटियों के वजन की श्वर लहरी उमने सिरहाने तक पहुँची तो उमने अच्छा लगा—चलो एक और रात कटी। तभी मुर्गों की कुक्कड़-कूँ का अलाम भी बज उठा, जिसन कुछ पला के लिए अर्चा को गुदगुदा दिया 'मेरे प्यारे मुर्गों।' अपने बड़े फलट के आँगन क कौन म उमने एक खुला जालीदार कमरा बनवा दिया था। अपन बीहड़ पथ के इस साथी मुर्गों के लिए।

छट-छट छट छट सहमा चौक कर उमन करबट बदली। उस सग, शायद अनन बाल से कोई उसका दरवाजा खटखटा रहा है जिस क अनमुना किये चली जा रही है। कौन हो सक्ता है सुबह-सुबह कही पहनी सहली सा नही ? कही अमेरिका स छोटा भाई तो नही लौट आया ? कही नीरू—उमकी होन वाली छोटी ननद तो नही ? हो सक्ता है रात वाली नायिका ही जो शायद यही कहन आयी हो कि पुल का, बनम बन अपन अदर तो बना रहन देना चाहिए। पुला को नकारा नहीं जा। पुन के दूर हा जान का अब यह ता नही कि हम भूल जायें कि हमन कभी उमो पुल के सहार स इतनी लबी यात्रा तय की है। जिदगा म ऐम बूत से पुल बनत विगडत रहत है जो स्वय न रहने पर नी हमारे बन रहने के आधार होत हैं।

छट-छट-छट-छट रक रक कर जम पुकारती रही विचारा के बीच। कहीं अविनाश न हो। हा सक्ता है को नौ न हो। मात्र भ्रम हो। नहीं भ्रमजाल जिमम में जी रही हैं।

छट-छट स वचन के त्रिग कोई रान्ता भी तो नही। तभी उसन टेबल सग म कुछ महारा चाहा था किन्तु रोशनी नही हुई थी तौर 'छट-छट'

अनवरत चिरस्थायी हो गयी है जैसे उमकी जिदगी का एक हिस्सा है।  
अंधरा और खट-खट ।

उठकर आगन का दरवाजा खोलती है ।

“मडम !” मामन दफतर का चपरामी दीनू खडा हुआ है हाथ में एक लिफाफा लिए हुए—‘रात छोट डायरेक्टर साहब आये थ । साहब के बंगले पर रुके है । थोडी देर के लिए आफिस और स्टोर दखेंग । यह लिस्ट भिजवाई है । आज छुट्टी है । आप कही निकल न जायें । इसी-लिए सुबह-सुबह ’”

‘ठीक है ।’ अचा ने कुछ खीजकर लिफाफा झपट लिया । हाथ जार से दीनू से टकरा गया ।

‘तवियत ता ठीक है, मडम ?’ उसने बिनम्रता से पूछा ।

अर्चा कुछ नहीं बोली, तो दीनू—‘अच्छा चलू’ कहता हुआ वापस जान लगा ।

अब अचा को अपनी बेरुखी पर खीज हुई । दीनू !” उसन उसे रोका । दीनू के एक-एक शब्द में उसे मुलायमित की झलक मिलन लगी थी । उसके हाथ टकरान के क्षण मात्र में उसन अर्चा के शरीर का ताप-मान पहचान लिया था । अपने हाथ को शालीनता से वापस खीचन के ढग में कमी नफासत थी, जैसे सहानुभूति से कुछ झनझना गया हो ।

“मुनो दीनू ! एक कप चाय पीते जाओ ।”

दीनू अन्दर आ गया । “मैं ही बना लाता हूँ चाय । आपकी तवियत मुस्त लगती है,” कहते हुए वह रसोई की तरफ बढ़ गया ।

इससे अचा का कुछ राहण हुई । वह दुबारा पलंग पर जाकर दाहरी-सी होकर लेट गयी ।

दीनू चाय बना लाया । वह पलंग के बेंच पर अधलेटी होकर टिक गयी—‘अपन लिए मतवान स पस्ट्री निकाल लाओ ।’

“घान को कुछ नहीं लूगा, मडम । बिना नहाय घोय ही जल्दी स आ गया है । सुबह ही सुबह साहब के माली न जा जगाया । मुझे भी माय बुनाया है । एक ही तो छुट्टी मिलती है । वह भी गयी ।”

‘हैं, चलो वक्त भी तो बटता है ।’ न चाहत हुए भी अर्चा के मुह से

अविनाश अने मायात आगुटा दृष्टा था, अर्चा के टीके सामने। मैंने  
राग्य।

अना बलना म संवाद करन लगी।

आह आपका क्या हुआ था, अविनाश ?

राग कि मुम गुन हानी अर्चा ! मर चहरे पर तुम्हें अब अना प्रे  
च्छायाय और क्या सिगगा ! मैं पहले भी दा यार आ चुका हूँ। तुम अर  
एक मार फिर म

अविनाश धान जा रहा था किन्तु अचा वहीं और खोप ना रहा था।  
अंधेरी मम्प्री-मम्प्री गता म। ऊन जलून बिनाचा क बीच। दूर-दूर तक  
फँती भोड भगी या एका गडका पर। इमके या उमक बरहमी स कर  
से पैदा हुए अपन जम्मा को गहलाती हुई। मक्की उपमा के बावक  
समग सापग्याह बन रहन का यता करती हुई। या अपन आपकी उ  
दिधान या अपन टूटते अस्तिव का निरन्तर टावन के प्रयास म हुन्ना  
खोपी हुई अर्चा।

‘ओह अविनाश ! तुमन क्या किया है ऐसा ! कुछ भी तो नहीं !’

‘भाभी आपने मरी बात का उत्तर नहीं दिया !’ नीरु न उस  
ध्यान भग किया।

‘आआ बैठो। पहन नायना करो !’ अचा न नीरु का माया औ  
बाल सहलाते हुए कहा।

‘नहीं, पहन वादा करो भाभी प्लीज !’

‘अच्छा-अच्छा।’

‘एक सीमा होती है शायद एकात और नीरवता की पगडडिया की  
पाग करते रहन की !’ उपवास की नायिका बीना बोल रही थी,  
अच्छा-अच्छा के बाद।

## बीच तूफान

द्विए, चाप अगर मेरा मतलब है बुरा न मानें ता यह छाना मिम राम्बुका का है। मेरे कहने का बुरा न मानें। मेरा मतलब इस तरह स है जैसे इसी तरह का छाता राम्बुका मंडम का हो।'

हम लाग मौसम की करारी मार सहन के बाद साइकिलें पकड़े अपन अपन घरा की ओर लौट रहे थे। उस अजनबी नवयुवक की साइकिल क पहिये थोड़े टेढ़े हो गये थे और ब्रेका से टकरा रहे थे। वह अपन चार पाच साल के लड़के का साइकिल पर बिठाय किसी तरह साइकिल को खींच रहा था। उसकी बीबी के पैर लहुलुहान हो गये थे। इसलिए मैं उस अपनी साइकिल के कैरियर पर बैठाय चल रहा था।

तभी हल्की-हल्की बारिश शुरू हो गयी तो उमी न सुनाव दिया कि अच्छा हा आप अपना छाता खोल लें और इसे (उसकी पत्नी को) पकडा दें जिससे शायद आप दोना बारिश से थोडा-बहुत बच सकें।

छाता खुलत ही वह कुछ क्षणा तक उमे घूरता रहा था। फिर अटक अटक कर फुमफुसाने लगा था। मेरा मतलब अगर आप बुरा न मानें मेरा मतलब

मेरी जगह अगर कोई और व्यक्ति हाता तो वह इस 'मतलब है मतलब है' का कोई भी मतलब न निकाल पाता। लेकिन इस टूट फूट वाक्य का मुनकर मर पैरा के नीचे से दमरी बार जस जमीन छिस्तक गयी। मैं सहसा चबकर खाकर रुक गया। मुझे लगा मैं पकडा जा चुका हूँ।



मेरे चेहरे पर जैसे हवाइया उड़ने लगी जिन्हें पंजर भी शायद वह अनपढा छाड़ता हुआ आगे बोला—“देखिए बुरा मान गय ना आप। आपने इन आड़े बक्ते में हम सपकी वेहद मदद की है। हम आपने बहुत जहमानमद ह। मेरा मतलब यह कतई नहीं था जो आप समझ बैठें। मेरा मतलब सिर्फ इतना ही था कि इन तरह के नफेद उभरे हुए चपटे दानेदार परा वाला छाता तो मैंने जिदगी में मिस राम्बुका के अलावा किसी और के पास नहीं देखा। मिस राम्बुका हमें बताती है कि उसकी मर उस यह छाता या कह लीजिए ऐसा बहिया छाता दफनर में लान से हमेशा राकती है कि कहीं खान जाय। और यह कि यह टाकी मदर का अपनी जर्मन मौमी से मागात में मिला है। मिस राम्बुका जब-तब ऐसे ही कानर की सफेद स्कट पहन एक हाथ से छाता पकड़े अपनी लडी माइ-क्लि पर दफतर जाती रहती है और बदल में बड़े सट्टर रूप से अपनी मदर की टाट खाती रहती है। और कभी-कभी राम्बुका का भाई भी अपनी माइक्लि के साथ यह छाता ले निकलता है तो वह राम्बुका की, डांट खाता है।

यह सब विवरण सुन कर मेरा तो जैसे रहा-महा खून और सूखने लगा। मैं कुछ बोले। मैं क्या कहूँ। मैं नहीं जानता। मैं कुछ भी नहीं बोल पाया। लेकिन समझ गया कि उसका मतलब छान के माध्यम से माइक्लि से ही है जो कि राम्बुका के भाई की हानी चाहिए। इससे मैं उसकी दृष्टि से कहीं अधिक अपनी ही दृष्टि में गिरता चला गया।

मुझे अपना स्थान में डूबा देखकर वह नवयुवक फिर से बान उठा—  
‘रक क्या गये। चलिए आगे। मेरा मतलब यह नहीं था। आखिर और भी उसी तरह के छाते बम्पनी ने जरूर बनाय हाये। उनमें वाक्य का राक कर मने प्रतिरिया जाननी चाही। प्रतिरिया न मिलन पर फिर बाला—  
जय छानिए भी उस टापिक को। हिन्दुस्तान बान भी तो नबल बरन में माहिर हैं। हा नबता है ऐस जमन छात जब यहा भी बनन गुर् हा गय हा। क्या?’

हां हां। दुनिया में क्या कुछ नहीं हो सकता। किसी तरह फूली साँस में यह वाक्य मुह से निकल कर मैंने किंचित राहत महसूस की।

अपने घुटत हुए दम से थोड़ी देर के लिए उभर आया। मेरे कदम जल्दी आगे को बढ़ने लगे।

“तृपया थोड़ा जल्दी। हमारी तो बारात चलने का समय होने वाला है। इसी सब चक्कर में कितनी ज्यादा देरी हो गयी। हम तो दुपहरी से निकल हुए हैं। क्या मोचेगे भाई साहब और दूसर सब लोग। बजाय काम में कुछ हाथ बँटाने के बीबी बच्चों को लेकर निकल गया, मौज मस्ती लूटने। चलिए साहब चलिए। मेरा मतलब है, अब और देरी नहीं चल सकती प्लीज।”

मुझे लगा वह बार बार मुझसे उसी प्रकार पेश आ रहा है जैसे कोई किसी चरित्रहीन अफसर या नेता के बारे में सब कुछ जानते समझते हुए भी सब अपना काम निकालने के लिए उसके गुणगान गाये जा रहा हो।

बड़ी मुश्किल से मैं फिर से साइकिल धींचने लगा और पिछली तमाम परिस्थितियाँ या कहना चाहिए नियति की विडम्बनाओं के साथ मर विचार-विदु जुड़ने लगे।

मैंने किसी जमाने में (वरली कालेज के जमाने में) एक हरकुलिम की साइकिल अपने छोटे भाई ब्रजेश के साथ मिल कर खरीदी थी। पिता ऐसी स्थिति में नहीं थे कि हम दाना भाइयों को अलग अलग दो साइकिलें दिलवा सकते। हम दोनों का हर महीने जो जेब-खर्च मिलता था उसमें से कुछ रुपये बचा भी लेते थे। अब उही में से आधे-आधे रुपये मिला कर हमने एक मयुक्त साइकिल खरीदी थी। छोटा भाई स्कूल में पढ़ता था और मैं कालेज में। दोनों के बीच यह तय हुआ था कि एक दिन साइकिल बहल जाया करेगा और दूसरे रोज मैं।

लगभग एक नियम का पालन (थोड़े दाव पेंच या हरा फेरी के साथ जिनका जैसे बम चलता) हम दोनों भाइयों के बीच चलना रहा।

फिर मेरी नौकरी बवाड़ी में लग गयी और (नियमानुसार) जल्दी शादी भी हो गयी। साइकिल मेरे छोटे भाई ब्रजेश के ही पान रही। मेरे हिसाब में उसने साइकिल का उपयोग भी ज्यादा किया क्योंकि गर्द कासिं फेल होता रहा। साइकिल उमरी भी नाकरी लग गयी—साजियाबाद ही में जहाँ पिता जी का निवृत्ति के बाद नेटव्ट हुए थे।

एक ठीक ठीक शकन मूरत वाली नौकरी शुग नडकी माधुरी स उसकी शादी भी हो गयी । उन दाना के हा काय-मथल और बाजार, मवान क पाम ही थे । अत मास्किन वही पडी-पडी धूल और जग खाती रही ।

एक बार जय में गाजियाबाद आया ता ब्रजेश ने कहा—' भया क्या न यह माइकिल में रवाडी न जाऊँ । मेरा आफिम घर म काफी दूर पडता है । भाई न खुशी-खुशी मास्किन न जान की अनुमति दे दी । माइकिल पर मैं अपनी हैसियत में खूब पमा मच कर चयन लायक बनवाया । वह चरती मगर कुछ रोज़ ग़द चलन ने इकार कर दती । किसी डीठ बच्चे की तरह और-और पैमें की माँग करन लगती । मरी (गैर नौकरी शुदा) पत्नी चिन्लानी रहती—कि अपन खान का है नही । इस साइकिन को (पाल कर) और खिलाना शुरू कर दिया है ।

उधर परचूनी वाला दुकानदार और चिलनाय जाता था जिनके उधार का बजन मेरे मिर पर काफी भारी हा गया था । उम तलखी के आलम म अचानक किसी खाम दिन मयमे कारगर तरकीब यही मूझी कि इस साइकिल को बेच दिया जाय । जसे इमसे दुनिया के तमाम झण्टा से मुझे नजात मिलन वाली हा । सा यही किया । उस कालज के जमाने की साइकिन को थोडे से पैमा म बेच खाया । खाया तो खर क्या । जिस सीमा तक बन पडा, परचूनी वाल का उधार उतार दिया ।

जब कुछ समय बाद गाजियाबाद घर पर इम बात का रहस्योदघाटन हुआ कि साइकिल बेच ली गयी है तो ब्रजेश भाई ने तो कुछ नही कहा । वह मेरी खस्ता हालत का थोडी सहानुभूति से देखता था । मगर उसकी बीबी माधुरी बाता-वाता म मुनाती रहती—' भल ही साइकिल शादी से पहल ही चीज थी—मगर साची थी । विना हमारी रजामदगी क नही बेची जानी चाहिए थी । और अब कुछ नही तो जाघे पैसे हम भी मिलन चाहिए । जेठ जी निहायत कजूस ह ।'

एमी बातें जब तब मरी श्रीमती जी क काना से टकराती ता वह खासी गम हो उठा—' किसी तरह भी हो उनकी पूरी करा । चाहे किसी से भी उधार लो । पसे इनके माये मारो । हमेशा हम कजूस बहती है माधुरी रानी ।

मैं उसे दवे-दवे स्वर से समझाता कि "भाई ब्रजेश तो कुछ नहीं कहता। ज्यादातर औरतों की जादू ही बड़बड़ान की होती है। बजूम की परिभाषा दूसरी होती है—हान पर भी खच न करना। गरीब होना कोई अपराध नहीं होता।

पत्नी को यह शब्द गाली के समान लगता— 'वाहे के गरीब, तनम्बाह तो आपकी अपने भाई से ज्यादा है। फक यही है कि वे दोनों कमा रहे हूँ। मैं भी नौकरी करूँगी और पहला काम—उनका हिसाब चुकता कर दूँगी।"

मैं ठंडी मांस को बड़ी मुश्किल से दबाता।

इधर भाई ने तो और गानदार चमचमानी हुई नय मॉडन की साइकिल खरीद ली थी।

अब की मैं गाजियाबाद अकेला गया था। माता जी की तत्रियत खराब चल रही थी। पज निभाने को कुछ पसे भी जुटा ल गया। सारा दिन उनकी देखभाल करता और दवाइयाँ खिलाना और हाय पैर दबाता रहता।

उस शाम को भाई नौकरी स थोड़ा जल्दी घर आ गया था। माधुरी अभी नहीं लौटी थी।

मेरी अन्नव्यस्त हालत देखकर ब्रजेश ने मुझे माता जी के पान से उठाया। हाय मुह धुलवाया। मुह पर पाउडर क्रीम मलन को दी। अपन हाय से मिर पर तेल लगाकर कघा किया और कहा— अब मैं माता जी की देखभाल कर लूँगा। माधुरी भी आती ही होगी। भया तू थाडा बाजार बगैरह घूम कर फ्रेश हो आ।"

'साइकिल ले जाऊँ क्या।' मैंने साइकिल को ललचाती आखा स देखते हुए किन्ही सहमे हुए वच्चे की तरह पूछा मैं तो अपने पुराने मित्र बन्ना के यहाँ जाना चाहूँगा। बहुत दिन हो गय मिले।'

तो क्या पैदल जाओगे। बन्ना जी वाला इन्का तो पडता भी बहुत दूर है। रास्ता बहुत बीरान और ऊबड़-खावड़ है। जरा जल्दी लौटना। फिर माय ही रोटी घायेंगे।"

बड़ी ही मुलायमियत के साथ मैंने साइकिल को आँगन से गली मे

निकाला। चढा। गली में मुख्य माग। फिर एकाएक मैं पुरजाश में आ गया और साइकिल उड़ानी शुरू कर दी। लेकिन यह क्या? कुछ ही देर में साइकिल ने ही मुझे उड़ाना शुरू कर दिया। ओह इतनी तेज जाधा। बहुत ज़रूर मुझे बीकानेर भी ड्यूटी पर आना जाना पड़ता है। वहाँ का जाधिया मशहूर हैं। वहाँ भी ऐसी भयकर आंधी चलती कभी नहीं देखी, जो मुझे मेरी (मेरी नहीं भार्द की) साइकिल ममत उड़ा ले जाय। वहाँ में मैं वहाँ साइकिल कहा। मेरी आंखा में धूल ही धूल। जूता में ककर ही ककर। पूरा जिम्म दद से चटखन गया। फिर चेतना में दद की बेहिसाय परतें फैलती चली गयी। मैं काप उठा—आह साइकिल गायब। रास्ता में भटका हुआ मैं, पानाबदाश मा। वस भी गाजियाबाद के रास्ता में पूरी तरह वाकिफ नहीं हूँ। आज का ता आलम ही कुछ दूसरा था।

आँधी के कुछ बरसे पर मैं बदहवास मा साइकिल ढूँढ रहा था, कि मुझे यही भवभुवक जपन छोटे परिवार के साथ मिल गया। उसकी हालत अपनी जगह खस्ता थी। उस अधड तूफान में उसकी बीबी लहनुवान हो गयी थी। लडके की साँसें धूल रुकर के कारण दुप रही थी और गिरन पडन में साइकिल भी खराब हो चुकी थी।

वह मरी मदद चाहता था, परंतु मैं स्वयं घबराया हुआ था। उससे कहा— आप थोड़ा यही रुकिए, अगर मरी साइकिल जल्दी मिल गया तो मैं आपके साथ चल कर आपका पहुँचा दूंगा।

मैं इस वाक्य से उमम हीमला आया। अपन बच्चा का एक बिनार बठा कर भुवमे बोना— 'चलिए मैं भी आपके साथ चलता हूँ।'

कभी अलग जग तो कभी साथ साथ चलकर हम साइकिल तलाश करने लगे। सहमा एक झाड़ी में उलझी हुई एक साइकिल की आरहम दोना की नजर पडी।

मैंने जबकि वह उठाहाह से भर उठा— 'लीजिए मिल गयी आपका साइकिल।'

मैंने भगवान का शुक्र किया परंतु नज़रीक पहुँचन पर देखा यह भाद वालो साइकिल नहीं थी और नहीं उतनी नयी या सुन्दर। मगर

यह एक माइकिल थी, जो मुझे मेरी विडम्बनाओं से जितनी नीमा तक उबार सकती थी। मैं कुछ क्षण तक सोचा और बड़े जा-ने (इतने जोर की बतइ जरूरत नहीं थी) चिन्ता उठा—“हाँ-हाँ, यही है मेरी साइकिल।”

हम दोनों न मिन कर उम थाड़ी में स साइकिल को निकाल लिया। उम माइकिल के डण्डे पर लिपटा हुआ एक छाता भी बँधा हुआ था। इसे देखकर मेरी जवान का स्वाद अजीब तरह का कर्मला-कर्मला भा हो गया। मुझे ठीक मे आगा पीछा नहीं सूच रहा था। लहापाह की स्थिति में मैंने उन युवक का बड़े सकोच में धीरे में कहा—‘चलिए साहब इस माइकिल को अभी यही पर छोड़कर थोड़ा और आगे देख जते हैं। हो सकता है कुछ और माइकिलें भी इधर-उधर बिखरी मिल जायें।’

पहले वह युवक हँसा—“क्या यहाँ कोई जातूनगरी है जो मारे शहर की साइकिलें यही आकर पमर जायेंगी।” फिर उसने थोड़े मटन सहजे में कहा—“आपकी साइकिल मिन गयी। बस। यही तो है ना आपकी माइकिल ?

‘ग ता।’ मैंने जोर लगा कर यह दो शब्द मुह में निकाले।

‘ता फिर चलिय। पहले में ही बहुत दगे हां गयी हूँ। घर बाल चिन्ता कर रह हागे। मेर भतौजे की शादी है। अँधेरा हान को है। जब बस आप हमारी सहायता कीजिए।

मैं गहरी साँच में डूबा उनके साथ चपने लगा। उसने अपने छोटे नडके को अपनी माइकिल पर बठा लिया और अपनी घायल बीबी का मेरी साइकिल के कैरियर पर बठने का कहा।

कुछ आगे बडन पर बूदावाँदी हीन लगी। तभी उस नवयुवक ने छाता खोलने का प्रस्ताव रखा था। छाता खोल कर हम लोग कुछ दूर तक चलत रह एक-दूसरे का हाल बाल पूछत, दुख मुख बाटत हुए। मगर मैंने लक्ष्य किया कि बार-बार उमका ध्यान बातचीत में हट कर छान का सा चला जाता। और नाय ही शायद मेर हाथ बानी साइकिल की जोर भा।

अतत वह रह न सका और बड़े सबाब से यडवडान लगा—‘दकिए, अगर आप मेरा मतलब है नुरा न मानें तो यह छाता मिस राम्बुका का

सा लगता है।”

मैं उसका मतलब उससे मतलब में कही ज्यादा समझता गया था। यानी यह छाता जिम माइकिल ने बंधा था वह माइकिल अवश्य ही मिस राम्बुका के भाई की थी। इससे भी ज्यादा मैं अपनी मजबूरी और अपन ऊपर हुए नियति के प्रहार को ममन गया था, जिनमें प्रतिफल छिलता चला जा रहा था।

अब उसका घर आ गया था। घर से बाहर चौड़ी गली में बहुत रंगीन शामियाने लगे हुए थे। उसने मुझे अदर एव कुर्सी पर बठाया। मैं साइकिल को बाहर रखते वक़्त छात को उसी तरह लपट कर डण्डे से बांध दिया था।

नवयुवक मेरे लिए वाय-नाशता कहने के लिए घर से अदर चला गया था।

कुछ दूर तक मैं अपन आपको उन रंगीन शामियाना, झडिया और गुब्बारा में खोने की कोशिश करता रहा। मैं माचा—इससे पहल मैं अपन आपको इस नयी मिली नाइकिल में भी खोने की कोशिश की थी लेकिन ओह

इतन में कोई लडका मेरे सामने मिठाई और नमकीन की प्लेटें रख गया। एक महिला भी मेरे बायें, कुछ दूरी पर आकर बठ गयी। क्या पता मिस राम्बुका ! महमा वहा सब कुछ उलट पुलट हाने लगा। जस फिर से भयकर आंधी चलने लगी हा। अतहीन तूफान मेरे अदर उमड-घुमड आया।

मैं सब कुछ वही छोड छाड बिना नाइकिल उठाय—वहाँ से चल दिया, नीघा वस अडडे की ओर।

चौथे दिन मुझे रेवाडी में ब्रजेस की चिटठी मिली। निखा था—बत्ता जी के यहाँ भी पूछ आया। तुम वहाँ भी नहीं पहुँचे थे। अब माहल्ल का काइ नडका कह रहा है, उसने तुम्हें वस अडडे पर दया था—शावद तुम्हीं थे।

मुझे और माना जी को तुम्हारी फिशर सता रही ह और तुम्हारी छोटी भाभी को टाय—माइकिल' दाय जा रही है। तार में अपनी खेरियत की तला दो।

## मर्म

वह मुझे बिग करना चाहता है तो मैं बतरावर रास्ता बदल लेता हूँ ।

उमका इन प्रकार धीरे से मुक्कराना मुझे कभी भला नहीं लगता । यह मुक्कराहट मेरे लिए सदा अमहनीय रही है । दाएँ दार ता मैं न चापी यत्नपूर्वक न्यप्ट वाणी में बतारवती भी दी है 'मिन्टर बामो अपन काम स काम ग्यो, इस प्रकार यहाँ नाहक छडे रहकर समय नष्ट करन की अनुमति मैं नहीं दे सकता ।'

वह तुरन्त चला गया । पर मुझे दार-दार लगा—कम्बर मरी अवाज कही उच्यडा गयी थी । मैं पूर अफसोसना नीच से माय नहीं बह पाया था । और जाते जाते भी वह छोडा मुक्कराया था । उत बतर की यह मजाम ? मैं अफसर किस बात का ?

ओह यह ट्रेजिडी है ! मैंने बर दार वागिन भी है—किमी प्रकार उमका ट्रांसफर हो जाय । बडे अफसोस त भी मिता हूँ । उमके विरुद्ध एक गोमा तब निष्ठा पडी भी की है । उमके ट्रांसफर के पूर आजार भी बन है, किन्तु क्या ?—हर दार किमी-न किमी सहान, उमका ट्रांसफर बन जाता है और तब उमकी मुक्कराहट बड जाती है । मैं अफसर-ही अफसर पुट बन रह जाता हूँ । उमकी मुक्कराहट में नीतर गहर बचान जाती है ।

अफसे निष्ठा की अफस से मुन्धे गुहार रहा हूँ । मना बगल बन से प्रभोगन हो जायगा । उमका नहीं—मना ट्रांसफर हो गयी । मैं यत कर मुक्करा पाऊँगा । उमकी मुक्कराहट त बचान पा जाऊँगा ।



इस स्वामी म एक नुकम यह भी है—वह मदा जाफिमम टॉपलेट म जा घुमता है। 'तुम श्चर कैम ?' एक दिन मैंन ब्रडे न्वर म पूछा था।

उध—'कनासिंश्री खाली, नहीं था।' रशाग करता हुआ वह चला गया था। मुने महसूस—हुआ—मुह घुमात ही वह अवश्य मुत्कराया होगा।

टापलट म जाना मुये बहुत घिनौना घिनौना लगता है। उमन भी यहाँ कपडे ढीन किय हाग उसका एक भद्दा वाक्य—'नम्ब कीडे की तरह मस्तिष्क म लगातार रेगता ह—नम-नम का कुतरना है। दन मास पूव जब मैंन न्वामी का टासकर रोकन की अपील फारवड करन स इनकार कर दिया ग—वह यही भद्दा वाक्य बडपडाया था—'नाउ चाहन हुए भी भुला नही पाता। (वैन अब मैं जानन लगा हूँ—उमकी गानी गलौच की आदत नहीं हे। उम समय वह अवश्य जत्यधिक असतुलिन रहा हागा)— इस पर मैंन डाट मारी थी—तो वह मुम्कराता मा विगघॉन के पास चला गया था। मैं तुगे तरह महम गया था आर वही मुम्कराहट अब तक उसके चेहर पर विद्यमान ह। काश मैं उमको यहाँ ट्रामकर पर बुलवान की जिम न पकटता। क्या झपट मान न लिया है मैंन ! और अब वह वापिन नागपुर जाना नही चाहता।

उम राज वह कोई फाइन लवर कैबिन म जाया—उमनी मुन्गाहट देय पान म पूव मैंन जल्दी से कहा, 'चाही तो मैटिनी शा म ना मकन हो। अनएम्प्लाएमट शिभाप्रद पिक्चर है।'

देख चुका हूँ साहब, उसी प्रकार मुम्कराकर उमन अपना नीच का हाठ काटा।

मैं रुट गया। जल्दी से फादल उमस ने ली जात्रा इन यही रहन दो।

गाक दख चुका है—'नीवरी की कद्र दस कहा।'

—सा शाम मैं अपन विरोध कृपालु विगघॉस म उहा के बँगल पर दिना—'सर ! मास्टर स्वामी नारी ब्राच का स्पोइल कर रहा है

वही स्वामी तो नही जिम कम्पलेंट बसिस पर जापन ट्रामकर कराया

था ? बड़ा बखेड़ा मचा था ?”

‘हाँ वही, वही।’

“आप तो कहते थे, यहाँ लाकर उसे टाइट करेंगे।”

“वह वदमाश है। इस धार उसे किमी पनिशमेंट स्टेशन पर पोस्ट किया जाय, जहाँ पानी भी न मिले।”

‘ब्रूव ! आप भी क्या बच्चा की सी बातें करत ह ! उस समय मैंन, व्त आपका ‘प्रस्टीज ईशू’ ले उसकी अपीन पर ध्यान नहीं दिया, वरन शायद आप जानते ह उसके पीछे यूनियन का काफी होल्ड है।’

मैंन हथियार डाल दिये।

घर लौटते हुए मस्तिष्क को लगातार बुरेदता रहा—मैं उसका ‘इमोडियट वॉन हूँ—मेरे रिमाक्स वजन रखत है। पर मुझे अच्छी सेलरी मिलती है। गुण्डो द्वारा उन पर

‘पर उसमे वास्तविक बुराई क्या है।’ मैं नय सिरे से विचारन लगता हूँ। ऐसी कोई हरकत ? नहीं। बमे पूरा स्टाफ उसकी प्रशंसा करता है। हेच कनय उमे ‘अति निपुण’ मानता है। मैंन सुनी मुनाई गाना पर उसे नागपुर में उखेडा था। हाँ उसकी अक्ड की आन्त ह—किंतु वह इसे स्वाभिमान या जात्मविश्वास कहता है—डरे तो वह जिसन कोई पाप किया हो जिसका गिल्टी काश्स हो।’ यदि इस प्रकार ऊँचे स्वर से पेश नहीं आता, ता शायद मैंने ठंडे दिल में उसकी बात सुनी होती। बड़ा देवता समझता है अपने को ! बाकी सभी झूठे हैं ।

सँवर, वह मच्चाहो न हो, किंतु धीरे धीरे यह तो स्पष्ट हा गया है—वह मन्न नागपण झूठा है। उमी का वास्तव में ट्रांसफर का उम्बर पडना था। बडे तरीके से उमने अपने दु खो का रोना रा अपन का किस रूप में प्रदर्शित किया था—‘ माँ बीभार रहती है वाप पुराना रोगी है, पितामह चारपाई में उठ नहीं सकते मैं, अवेला ही ’ शायद उमी न नागपुर ब्राच के हैड क्लक में मिलकर, स्वामी के विरुद्ध झूठे आंगप गडे थ। पर इससे क्या ? बात तो स्वामी की है। लोग उस हँसमुख कहन है होगा। किन्तु मुझे तो उसकी मुत्कराहट एक स्पष्ट

शरारत लगती है। मुझे चिढ़ है, तो उमका क्या दोष ? उसकी मुस्कराहट ?

लम्बी प्रतीक्षा के बाद—नई सूचना ने आज के दिन का 'एक अच्छे दिन' म बदल दिया है। बार बार टेलीफोन की घटी बजती रही। दोपहर से ही मरे कैंबिन में साथिया का नाता जाना बढ गया था। सब मुझे 'क्लास बन के प्रमोशन के' निमित्त बधाई देने आत रह। कल मेरी फेयरवैल पार्टी का आयोजन रहगा।

रात काफी देर तक घर पहुँचता हूँ। बरामदे में एक महिला बठी है। नौकर मुझे बताता है यह पिछने दो घटा से प्रतीक्षा कर रही ह।

महिला अपना परिचय देन के बाद, प्रायनापूण स्वर म कहती है, 'छोटा लडका दिल्ली पढता है। दिल्ली में एक बनक की जगह बढी है। यदि रिकमेंड करें तो हमारा तबादला दिल्ली का करवा सकते ह।'।

हैं, सोचता हूँ—इस बवाल को फिर माय पानू ? कदापि नहीं।

मच कहती हूँ इस महँगाई में हमारा दो जगह का खच बच जायगा। 'लगता है कारणिक स्वर मेर चित्त पर प्रभाव डाले बिना नहीं रहगा। वह स्वय कहते हुए डरत हैं कही आप नाराज न हा। आप इतना अहसान अवश्य करें।'

करवा दूगा' जल्दी य वचन दे देता हूँ।

रात भर नीद नहीं आती। कभी लगता है अपशकुन हुआ है। खुशियो पर काली परछाई पडी है। यह जरूर चाल हो सकती है। मैं तो उसके लिए दिल्ली का ट्रासफर रिकमेंड कहुँ—वह अपील ठाक दे, फिर ? ता पहल उससे लिखवा लूगा, क्या ? मुझे जरूरत ही क्या है ! मुश्किल स उसकी मुस्कराहट से छुटकारा मिल रहा है। दिल्ली भी साथ ल जाऊँ ? मरा दिमाग अभी खराब नहीं हुआ है ! नहीं, मैं कदापि नहीं कहूँगा--भल ही वचन जाता ही

दूमरे दिन जाफिस पहुँचत ही स्वामी मुस्कराता हुआ सामन आ गया। माह्य प्रमोशन के लिए गुड विनोज। स्वर अहसास स दया प्रतीत हाता है, मुस्कराहट बदली-सी उत्साहबद्धक महमूस होती है। छत्र, कपट, शरारत—कुछ भी तो नहीं इसम

मैं उसका हाथ अपने हाथ में ले लता हूँ। “थैंक्यू थैंक्यू—दोस्त, तुम्हारे साथ कुछ ज्यादतियाँ हुई थी। मुझे खेद है। खर तुम्हारा काम हो जायेगा। तुम भी हमारे साथ दिल्ली चलोगे।”

“बहुत बहुत धन्यवाद माह्व।” एक एक शब्द पर ज़ार डालता है। लगता है एक-एक शब्द से खुशी का फौवारा फूट निकलेगा।

वह मुस्कगता हुआ अपने कमर की ओर बढ़ गया है।

## नये मोड़

आज मेर बहुत अनुरोध करने पर प्रशात मेरे यहाँ आया या ।

आज शाम अस्पताल की छुट्टी थी । आज की शाम प्रशात के साथ बितान की अच्छा मुवह स ही तीव्र हो उठी थी । वसे तो मैं एक मुद्दत मे एकाकी जीवन जीने की अभ्यस्त हा चुकी हूँ परंतु पिछले छ महीना मे— जब से प्रशात की नियुक्ति हमारे यहाँ हुई है—मैं बरबस उसकी बम्पनी चाहने लगी हूँ । उसके जीवन के विषय मे इधर उधर से जातकारी एक्त्र करन का प्रयत्न करन लगी हूँ ।

प्रशात मुझे क्या अच्छा लगता है ? यह बात मैं कई बार सोचती हूँ । से दकर मुझे उसकी विशेषता उसकी उदामी ही लगती है । वह हरदम शून्य मे चाकता प्रतीत होता है । एकदम खोया खोया सा । सबसे कटा हुआ । अलग-थलग । उसे ऐसी अलगाव की मन स्थिति न पाकर मुझे उससे जाने अनजाने सहानुभूति होने लगती है ।

मुन। है दो एक स उदास प्रकति वाले व्यक्ति, एक दूसर स मिल कर धानचीत करके अपने का काफी हद तक मुखी अनुभव करन लगत हैं । शायद उमी मुख की अनुभूति की ललक मेरे अंदर बार-बार जागत होती है । मैं न दस बारह बार स्टाफ कंटीन न या छुट्टी के बाद लॉन न प्रशात से बात की है । किंतु हर बार बात बहुत सक्षिप्त रही । वह मेरे साथ भी कभी खुल नहीं पाया । फिर भी यह सही है कि औरा की अपक्षा वह मुझसे कुछ अधिक बोल नता है । मुझे जादर देता है । शायद मरी

चरिष्ठता को नजर में रख कर।

मैंने जल्दी जल्दी चाय तैयार की। प्रशांत अपनी चिरपरिचित मुद्रा में चाय पीना रहा। चुपचाप। एक दम गुमगुम-मा उना हुआ। मरी वाता का जवाब वह एक एक शब्द में दे रहा था।

‘कम ही प्रशांत?’

‘ठीक।’

‘थोड़ी और चाय बनाऊँ?’

‘नहीं।’

‘तो कहीं बाहर घूम आएँ?’

‘चलिए।’

तब हम दाना घर से निकल कर खुली सड़क पर आ गये थे। हम साथ-साथ चलते रहे थे। चुपचाप। और मडक लगभग मुनमान हाती चली गयी थी। मौसम में खासा खुलापन था। कितनी अच्छी हवा चल रही है प्रशांत।” मैं उम चुपची ने बहुत ऊबल लगी थी। और बार बार उस मौन का भंग करने का प्रयत्न करने लगी थी।

मैं इस वाक्य का कुछ अनुकूल प्रभाव रहा। सहसा प्रशांत ने जैसे आह छोड़न हुए धीरे में कहा—“ठंड की समाप्ति के साथ जो हवा हर साल चलती है यह वही हवा है। इस हवा के साथ मुझे हमेशा लगाव रहा है। किंतु अब किसी भी चीज में पहले जैसा आकर्षण नहीं रहा।”

लगा प्रशांत फिर किसी गहरी सोच में डूब गया है। कुछ देर फिर खामोशी छायी रही। चलते चलते मेर मडिल में कोई क्वर फँस गया था। मैं रुकी और क्वर निकालते हुए प्रशांत से बोली—“उड़ती-उड़ती नी बात सुनी है। अगर कहो तो पूछें?”

‘पूछिए।’ अब की फिर प्रशांत ने मक्षिप्त उत्तर दिया और आममान की तरफ देखन लगा।

कोई मणाचिनी नाम की नडकी आपके शानिज में पडती थी। उनन आपके साथ अच्छा नहीं किया।”

हागा बाइ ऐसा मामना। समार में एमे मामना की कभी नहीं। भरमार है।’ प्रशांत ऐसे बोल रहा था जैसे इस घटना से उमका कभी

काई सराकर न रहा हो। या वह किन्हीं दूसरे दो प्राणियों के विषय में अपनी राय जाहिर कर रहा है।

‘तो किसी एक के पीछे तड़प-तड़प कर मरने या तिल तिल कर जलन से क्या फायदा?’ मैं जल्दी में बात की तरह तक पहुँचने के लिए उत्सुक हो उठी थी। थकावट प्रदर्शित करती हुई मैं नजदीक के एक छोटे पुल के चबूतरे पर बैठ गयी थी। प्रशांत ने भी मेरा अनुमरण किया और साथ आ बैठा।

मैंने अनुभव किया कि आज प्रशांत से कुछ बोलवाया जा सकता है। इसलिए उसे ज्यादा दूर चुप नहीं रहने देना चाहती थी—‘कुछ गलत तो नहीं कहा मैंने?’

थोड़ी देर की चुप्पी के बाद प्रशांत ने उत्तर दिया—‘आप एकदम ठीक कह रही हैं। किसी एक के पीछे कुर्बान हो जाना वास्तविक आदशवादी पेमियों के युग के लक्षण है। आज तो वह स्त्री और वाक्य को अधूरा छोड़कर फिर बोला— दुनिया बहुत समझी चीज़ है। अब तो मणालिनी वाली घटना का मात्र एक राक्षस व शिक्षाप्रद कहानी समझता हूँ।

मैं जल्दी तरह समझती थी कि जो कुछ प्रशांत कह रहा है, वह सच नहीं है। वह अभी तक पूरी तरह उस घटना के जाल में उलझा हुआ है। मात्र अपने आपको तमिली दल के लिए ऐसी बातें कर रहा है।

प्रशांत अगर मैं जोर देकर पूछू तो आप वही कहानी विस्तार से सुना देंगे?’

इससे क्या होगा? उमन जस निश्चय रोकने का प्रयत्न करते हुए कहा—‘क्या आप मेरा ट्रीटमेंट करने वाली हैं डॉक्टर?’

चलो ऐसा ही समझ लीजिए। मैं हँसते हुए उसका कंधा पकड़ लिया।

जब तो बहुत देर हो चुकी है फिर कभी सही प्रशांत ने फिर आकाश की ओर दृष्टि डाली— ठंड भी बट चली है। चलिए लौट चलें।”

वास्तव में ठंड बटन लगा था। हमारे पास स्विटर के अतिरिक्त कोई गम बपड़ा नहीं था। हम उठ खड़े हुए।

लौटत हुए हमारी चाल बहुत धीमी थी। अनजाने प्रशात का हाथ मेरे हाथ में आ गया। मेरे बार-बार जोर देने पर प्रशात ने बोलना शुरू किया तो धाराप्रवाह रूप में बस बोलता ही चला गया। जैसे वास्तव में कोई कहानी ही पढ़कर मुना रहा हो—

मणालिनी हमारे कॉलेज में नयी-नयी आयी थी। मेरी ओर से उसके गाय कोई ऊटपटांग हरकत का न होना, जहाँ एक आर सब छात्र छात्राया म चचा का विषय बन रहा था, वही दूसरी ओर मैं स्वयं इस पर कम अचम्भित नहीं था। लगा, मैं स्वयं अपने से अनजान बनने लगा हूँ।

यह मणालिनी ही थी जिसे देखकर मुझे जीवन में पहले पहल एक अलग तरह की अनुभूति हुई थी जिसकी स्वरूप व्याख्या मैं आज भी नहीं कर सकता। उसका प्रति दिली इज्जत जयवा उसके व्यक्तित्व से एकाएक प्रभावित हान जसी बात ही माटे तौर पर कही जा सकती है, जिससे मुझे उससे छेड़छाड़ करने से रोक दिया था। वरना नयी आयी लड़की का मैं 'स्वागत' न करूँ? यह एक अलग तरह की बात थी।

ऊषा और निशी, जो लड़कियाँ में मुझसे सबसे ज्यादा खुली हुई थी, इन दोनों ने तो स्पष्ट ही खिलखिलाते हुए मुझसे पूछ ही लिया— क्या, पसंद नहीं आयी यह मणालिनी? इतनी बुरी तो नहीं है।"

मैं एकाएक उन्हें कुछ न कह पाया। स्पष्टतः वे सीरियस मूड में नहीं थीं। वे हँसती हुई पडा की ओट में बढ गयी थी। मैं उन्हें क्या समझा सकता था मणालिनी के विषय में। मैं तो खुद किसी चीज का लेकर सीरियस नहीं हूँ पाता था। मगर मुझे पहली बार लगा कि आज मेरा 'गम्भीरता' से कुछ जुड़ाव हान लगा है। शायद मैं उनको मममाने के लिए कुछ ठीक तरह के वाक्य जुटा रहा था कि मणालिनी निश्चित रूप से एक अलग तरह की लड़की है। उसका व्यक्तित्व मेरे जीवन में आयी तमाम लड़कियाँ से एकदम बहुत ऊँचा है। विशाल है।

परन्तु मात्र किमी वाक्य का कह देना स जरूरी नहीं कि बात विलकुल फिट बैठ जाय। मैं स्वयं इन वाक्या से सतुष्ट नहीं था निशी आर ऊषा का तो क्या मैं चाहता रहा वादा मैं स्वयं को किमी ठोस और तक-सगत आधार पर उक्त बातें समझा सकूँ कि आखिर मणालिनी में वह क्या है,



निमित्त वह मेरी नजर में 'एक निर्हास्य, अलग तरह की लड़की' के रूप में आ खड़ी होती है। घर-बार, देवन में या रंग मंगल में भी वह जनाधारण नहीं थी? आवाज में भी विज्ञापन, मधुरता हा ऐसी बात भी नहीं थी। चाल डान डीन डाल, भी उमका पूणत माधारण था। बाहरी तौर पर देखा जाय तो वह बस एक साधारण लड़की थी। आम नौजवान लड़किया की तरह। एक जाकपक लड़की। फिर क्या चीज थी या क्या कारण था जा मैं बकलपन मणालिनी से बइतहा तरीक म प्रभावित हा गया था। बस निमी ठाम तक के अभाव म उससे जातारक व्यक्तित्व की सता का स्वीकार करना पडता है। हा पढाई म उसने आत ही धाक जमा दी थी। परंतु मेरी नजर में यह कोई महत्व की बात नहीं थी। मैं लायक और होशियार स्टूडेंट को मन और शरीर से रण की सना दिया करता था क्योंकि व मात्र इती पढाई के बलबूत पर अपन को चमकाने म दिन रात एक करत नजर आते थे। इसका कारण शायद यही था कि मैं कम-से-कम अपनी नजर म चडा रहना चाहता था। मैं हर क्लास म कम-म-कम दो बप जरूर लगान लगा था। पिता के पास कुछ अनाप शनाप पैसा आ जाता था। इसी के वन पर मैं हर जगह छाया रहता था।

यह मणालिनी ही थी जिसने पहले पहल मुझे मेरी हीनता का बोध करा लिया था।

कॉमन रूम म कुछ छात्र छात्राएँ बैठे गप शप कर रह थे कि एक लड़के ने अचानक मुझे बाहा म भरकर उठा लिया और मणालिनी के सामने ला खडा किया— यह है हमार कॉलेज के हीरो मि० प्रशांत हिप हिप हुरें

मेरा ध्यान शोर भरी आवाजा में हट कर मणालिनी की तरफ चला गया।

मणालिनी ने एक नजर उठाकर मुझे देखा जिसने मुझे माठी गुद गुदो से भर दिया। किंतु अगले ही क्षण कुछ उपेक्षा भाव में मणालिनी हँसी— हाँ यहा जाते ही इनकी बहुत प्रशंसा सुनी है। बालजवनक लिए क्या है। इनक निजी सना का निजी अखाडा।" कहत हुए उमन मुह दूसरी ओर फेर लिया।

उस दिन मुझे एक नया अनुभव हुआ था कि कोई किमी नो एक जण मनजरी से उठाकर अगले ही क्षण दस बुरी तरह से जमीन पर पटक मरना है कि वह कई-कई दिना तक किमी की मनजर मन उठ सके।

इन दो साधारण वाक्या से जान क्या सत्र के मन मौन रह गये थे। शायद मणालिनी के शब्दों की व्याख्या करन लगे थे कि क्या यह शब्द प्रशान की प्रशमा करने है या उमका मजाक उडात ह। मेरा सर आप म आप नीचा हा गया था। निश्चय ही मेरे व्यक्तित्व के खिलाफ कुछ कहने की किमी की मजान नही थी। जरूर कइया न यही माचा होगा कि अत्र प्रशान बन्ले पर उतर आयगा। मृणालिनी की खैर नही।

मगर मैं उस समय ही नही, मारा दिन चुप्पी साधे रहा। किमी क साथ हिना मिला नही।

बतना कहकर प्रशान थोडा रुका। मडक के किनारे दो बडे पत्थर रमे हुए थे। मैंने इधर सकेत किया। प्रशात और मैं जामन मामने बडे पत्थरा पर बैठ गय।

मुझे लगा जिम प्रकार यह विवरण सुतन म मेरी रुचि बढती जा रही है प्रशात भी इसे कहन स हल्कापन अनुभव करने लगा है।

आकाश पूरी तरह तारा से भर गया था। इस दौरान हमार लिए सर्दी का अस्तित्व ही जैसे समाप्त हो गया था। मेरी मौन उन्मुक्ता को प्रशात न समझा और आगे कहन लगा —

इसक बाद तो मैं तिन रात मृणालिनी के विषय म मोचन लगा था। लेकिन मेरी हरचद कीशिश उसस किनारा काटे रहन की रहती।

कुछ दिना बाद गट म घुसत ही वह सामने पड गयी। मैं सकुचित हो उठा। चाहा हाथ जोडकर अभिवादन करूं। हाथ उठे नही। एक अजीब-सी उर्रेड बन म साग शरीर शिथिल पड गया। मेरी म् हन्बडी मणालिना स छिपी न रही।

हैलो ' बडे सहज भाव से मुन्करा कर उसने पहन कर दी "कैसे हो प्रशात ?

ठीक है जी।" जैसे हर शब्द मेरे लबो म अटक कर सूख गया था।

किन्नी के प्रति आदर, निष्ठा या सद्बत्ति रखना आम लोग के लिए आम बात हो सकती है लेकिन मैं तो इन तमाम बातों का अपवाद था। किन्नी को भी क्षण भर में बेइच्छन कर देना, लडकियाँ की गिलवाड की चीज समझना मेरे चरित्र की उल्लेखनीय प्रवृत्ति थी। लेकिन मणालिनी को लेकर मैं स्वयं अपनी आदतों का अपवाद हो चला था।

जीवन के यथाथ पहल, मेरे सम्मुख अपनी सम्पूर्ण कटुता तथा नग्नता के साथ प्रकट होन लगे थे। मुझे 'हीरो' 'हीरो' कहने वाले छात्र छात्राएँ और 'पापुलर स्टूडेंट' कहने वाले लैक्चरर भी मेरी पीठ पीछे मुझे क्या कहत हंगे। सबकी नज़रों में मैं अबल नम्बर का आवारा और बदनाम लडका था। अपने पैसों के बल पर मैं भीड़ को अपनी ओर बुला पान में कामयाब हो जाता था। मब सोमाइस्टियों का सचिव बना रहता। और हर वष यूनियन का अध्यक्ष पद मुझे बड़े आराम से मिल जाता। कई लडकियाँ से इश्क के लम्बे चौड़े वायदे करना और तोड़ना मग मनीरजन था। कई लडकियाँ तो सब कुछ जानते-ममनते हुए भी मेरे पैसा से कुछ ऐश कर लेने में काई हज नहीं समझती थी। कुछ भोती भानी लडकियाँ का मेरी सोहबत के बड़े हानिकारक परिणाम भुगतने पड़े थे।

माता का सिलमिला लम्बा है। इतना लम्बा कि मुझे सब कुछ भूल जाना चाहिए था। लेकिन उम्र जिदगी की जरा-जरा सी घटना न चाहत हुए भी मेरी आँखों के सम्मुख हरदम साकार हुई रहती है।

एक दिन मैंने मणालिनी को बहुत उदास उदास और खोया खोया-सा पाया। इससे पहले वह हमेशा बड़ी स्माट और तेज कदमा से इधर उधर आती जाती नज़र आया करनी थी, जिसे नग्नता था इस लडकी में जान है। कुछ कर गुजरने की तमना हर समय साथ लिये फिरती है।

मणालिनी की उम्र दिन की मन स्थिति से मुझे दुःख-मा हुआ। खाली पीरियड में जाकर कारण पूछा।

"कारण जान कर आप क्या करेंगे। मैंने गुना है आप भी ऐसी कई हरकतें कर चुके हैं जिनसे कई लडकियाँ का जीवन बरबाद हो चुका है। आप कम से कुछ सहायता करेंगे मुझे ऐसी आशा नहीं।"

मैं एम उत्तर के लिए तैयार नहीं था। बुरा भी लगा। पर सबसे

बुरा यही लगा कि मणालिनी मुझको बुरा नडका समझती है।

मेरे मन की बात भ्रत मेर हाठा पर आ गई—'मृणालिनी जी आपकी नजर से गिरना मेरे लिए असह्य ह। एकदब पीडादायक। आप मुझे जो भी आदश देंगी, मैं हाजिर हूँ।'

वाग मे एक लडके से एक लडकी के प्रेम-पत्र बसूल करने के लिए मुझे पांच सौ रूपये खच करन पडे। चाहता तो उमे पिटवा कर भी यह काम करवा सकता था, परन्तु मुझे कई कारणों से यह रास्ता उचित न लगा। इसी प्रकार एक बार किसी लडकी का अवाशन करवाने के लिए भी मणालिनी ने मुझसे रूपयो की मदद ली थी।

इन सब कार्यों मे मणालिनी का मुझे साझीदार बनाने का उद्देश्य मुझे यही नजर आया कि उच्छृगल युवाआ द्वारा की गयी इस प्रकार की क्यादतिया के प्रति मैं सजग हो जाऊँ। वास्तव मे इन घटनाआ मे पैग होने वाग दुःपरिणामा को निकट मे दखन से मेरा आगे खुन गयी। मुझे स्वय तक मे घणा होन लगी। इस प्रकार वीर धीरे मेन इस तरह की गहूदा श्रवता मे अपने आपको अलग कर लिया।

इसका परिणाम यही हुआ कि म मणालिनी के अधिक निकट आना गया। वह मुझसे नम्री चौडी बातें तो नहा करती थी किन्तु जितनी देर भी बान करती एक सहज मु बान उमके चहर पर विराजमान रहती। मुझे लगता, वह समय देकर मुझे उपहृत करती ह। अब तो वह मेर चरित्र की भी प्रशमा करने लगी थी।

उम वय मैं फिर वी० एम सी० मे प्लब हो गया था। और यह मेरे जावन मे पहना वय था जब मुझे फेन होने का वास्तव मे बट्ट हुआ है।

मृणालिनी एम० एस०-सी० मे प्रवेश पा चुकी थी। मुझे गुरु-शुरू मे बहुत टर-सा बना रहा कि शायद मृणालिनी मुझमे बात न करे। हो सकता है गुलसे घणा भी करने ला।

मगर उमने ऐसा कुछ नही किया। बल्कि उसने मेरे प्रति, मेर भविष्य के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की। वससे मे और द्रबित हो गया। मणालिनी के प्रति मेरे मन मे अधिक आर पैदा हो गया।

हमारी मुलाकातें पहल की अपक्षा अधिक बढ़ गयी थी। कर्मी-कभीता हम जतन निकट बैठे होत माना सास मे मांस टकरा रही हा । वम यह अधिकतम सीमा थी और हमार समय की जग्नि-परीक्षा भी—जिमकी सफ्तना का श्रेय मृणालिनी को जाता ह । उन मुलाकाता का दखकर कुछ योग धीम म्बर म फिकर भी कसत । मगर इससे मृणालिनी जरा भी विचलित नही हाती ।

मुझे धीरे धीरे यकीन होने लगा कि मणालिनी मुख्य प्रेम करन लगी है । फिर भी दस विषय पर चचा चलात हुए डर लगता—जगर उसकी ओर स नकारात्मक ध्वनि सुनायी दे जाय तो मेरा क्या हान होगा । इससे ता यही स्थिति बहुत सतापजनक है । यही सोचकर चुप्री साध जाना । उस प्रकार स्थिति यथावत बनी हुई थी ।

एक बार बाता बाता म पढाइ की बात चली ता मणालिनी न गम्भीरतापूर्वक कहा— यदि इस माल भी तुम रह गय ता मैं तुमस बालना छोड दूगी ।’

इस एक वाक्य से मैं दम कद्र घबरा गया कि वस उसी दिन म खूब मेहनत से किताबा पर छाया रहन लगा । पुराने साबी मरे इस प्रकार के परिवर्तन एव जाचरण से आश्चर्य प्रकट करन और मुझस मीठे मीठे मजाक भी करते । मगर मैंन अनुभव किया कि मुझमे वास्तव म कोई दूसरा प्रशात जा समाया है जिमे अब दुनिया की किसी जालाचना प्रत्यालोचना की परवाह नही रही । यदि परवाह है तो वस केवल मणालिनी की । लगा, दिन प्रतिदिन मृणालिनी का जादू मेर सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर छाना जा रहा है ।

इससे जगले वप मैं अच्छे नम्बरा म परीक्षा म सफ्तन रहा । मणालिनी का व्यवहार मेरे प्रति पहल स अधिक सहिष्णुतापूर्ण बनता ग्रा रहा था । उमन मुझे बडी गमजोशी स बधाई दी थी ।

अब मेर मन का डर किमी कद्र कम हान लगा था ।

एक दिन मन को पक्का करके मैंन मणालिना क सम्मुख विवाह-प्रस्ताव रख दिया । मणालिनी पहले थोडा हँसी । फिर गम्भीरता से बोली— मोचो लोण क्या कहेंग । अब भी मुझस एव कनास पीछे हा ।’

मैं मकने में आ गया। मुझे ऐसे उत्तर की आशा नहीं थी। घोर निराशा में मुह लटका कर चलने लगा तो वह बोली—'चिंता क्या करत हो। इन सब बातों के लिए बहुत समय पड़ा है। पहले पढ़ाई तो पूरी कर लो। इधर मैं भी। फिर हम दोनों के बीच किसी प्रकार का जन्म नहीं रहा।'

मैं मुझे कुछ हौसला हुआ।

मैं और मन लगा कर पढ़ने लगा। मुझे अब मृणालिनी से बात करत हुए था सकोच होने लगा। किंतु वही मेरे इस सकोच का तोड़ती रहती। स्वयं आगे बढ़कर बातचीत शुरू करती। मेरा हाल पूछती। मेरी पढ़ाई की प्रगति जानती। कोई अडचन होती तो मेरी सहायता करती।

निश्चिन्त रूप में मैं इसके बाद कभी फोन नहीं हुआ बल्कि अच्छी दिव्यजन से पास होता रहा।

मृणालिनी अब इसी कॉलेज में रिसच कर रही थी।

मैंने अब फिर शादी की बात की तो उसने लगभग पहले में उत्तर दिया—'उतावनी किस बात की? मेरे बारे में भी तुम कुछ साचते हो या नहीं? जब तक तुम्हारे जीवन में स्थायित्व नहीं आ जाता, मैं तुम्हारे साथ चलने को कतई तैयार नहीं हो सकती। और मुझे भी निर्विघ्न अपनी रिसच पूरी कर लेने दो।' इन दिनों मैं मृणालिनी की सलाह या आदेश से मैट्रिक में पढ़ रहा था।

मुझे बहुत पुरा लगा। बड़ी अजीब लड़की है यह मृणालिनी। वैसे तो बड़ी सीधी-सीधी बातें करेगी। मगर जब विवाह की बात करो तो घुसक-घुसक उपदेश देने लगती है। आखिर वह चाहती क्या है? उसका मकसद मुझे बहुत बाद में मालूम हुआ था। ओह! प्रशांत लम्बी मांस लेकर धोड़ी देर के लिए चुप हो गया। फिर बोला—

मैं करीब पंद्रह दिन तक मृणालिनी से कितारा किय रहा। वह भी नहीं बानी।

अचानक एक दिन बाजार में मिल गयी। मेरे निकट आकर बानी—'नारायण लगते हो प्रशांत! मैंने कोई गलत बात तो नहीं कही थी।'

मैं आपकी किसी बात को गलत नहीं कह सकता, लेकिन आपका

“मुझे चिंता भी नहीं लगेगी, यह मेरा सौभाग्य है।” मेरा स्वर मुक्त था।  
 फिर व्यंग्य का मृणालिनी ने मन्ना। बहुत मधु स्वर में वाली—  
 प्रशांत, ने जान क्यों जिमन्नि म तुम्हारे सम्पर्क में आयी थी, उसी दिन  
 से तुम्हारे भविष्य को चिंता मुझे खाने लगी थी। मुझे विश्वास है भविष्य  
 इन बात का सिद्ध कर देगा।”

जैसा कि प्रायः हाना था उन दिन भी मैं मृणालिनी के सम्मुख  
 अवोध बालक बनकर उनकी मारगभिन्न सन्निपत वाता का मुनना रहा।

हम लोग न माथ-साथ चाय पी। जाघ-यौन घटा पाक में भी साथ  
 रहे। एक बार फिर उसने मुझे पन्नाई के प्रति अधिक सतक रहने की  
 हिदायत दी। और फिर हम बिदा हो गये।

मैंने मडिकल की सब क्लासें ढग न पास कर ली। और जब मुझमें  
 खासा जोश था—मृणालिनी का पा लन का। उस मृणालिनी का पा लन  
 का जो मेरे साथ एक विचित्र मा खल खलती चली आ रही थी। थोड़ी  
 निवट आकर आगे बढ़ जाती—मुझे तब दौड़ने के लिए अधिक प्रोत्साहित  
 करती हुई जैसे कहती—लो मुझे छोड़ो, छोड़ो। छोड़ो मुझे। बस जरा  
 और और आगे जाओ। जरा और मैं आगे बढ़ता तो वह छिटक  
 जाती। दूर।

हर वष यही खेल चलता रहा

इधर मेरी हास्पिटल में नियुक्ति हुई उधर मृणालिनी जबलपुर चली  
 गयी। ऐसी गयी कि फिर लौटकर ही नहीं आयी।—कहत-कहत प्रशांत  
 का स्वर एकदम बोझिल हो गया।

मैंने उसका हाथ पकड़ कर उठाया। फिर हम लोग चलने लगे। शहर  
 में लगने वाले पहले रेस्तराँ में हम लोग चाय के लिए कहकर एक केबिन  
 में जा बैठे।

फिर क्या हुआ प्रशांत ?”

उसी अलसाय स्वर में प्रशांत बोला— बस यही कहानी मैं  
 ममज्ञिए। होना क्या था। आप जानती हैं। इसीलिए उस शहर से  
 ट होकर मैंने यहाँ की ट्रांसफर माग ली थी। मैंने मृणालिनी को कई पत्र लिखे।  
 किसी का उत्तर नहीं आया। समय गुजरता गया। मृणालिनी का पता मरे

हुत अधूरा-सा था। निरंतर सदेह बना रहता कि क्या पता, मेरे पत्र उस तक पहुँचत भी हैं कि नहीं। इसी प्रकार छ मास गुजर गये।”

अब मैं स्वयं जबलपुर जाने की तैयारी करने की मोच रहा था। उन्ही दिना मेरा एक मित्र सतोप किसी कायबश जबलपुर जा रहा था। मैंने नी से प्रार्थना की कि वह इस पते पर मणालिनी से मिलने की चेष्टा करे। यदि वह वही है तो मैं जबलपुर जाऊँगा।

सतोप ने आकर जो कुछ मुझे बताया उसने मुझे एक्बारगी ताड कर रख दिया। मणालिनी उसी पते पर उभे मिली थी परंतु सतोप मेरे लिए बहुत बुरी खबर लाया था। मणालिनी ने जबलपुर में किमी से शादी कर ली थी। पुष्टि में मणालिनी का पत्र था।

मणालिनी ने लिखा था—“यह रिश्ता मेरे माता पिता ने बहुत पहले तय कर रखा था। और जब मैंने स्वयं भी लडके को देखा-परखा तो वह मेरे योग्य ठीक निकला। मेरे सामने अब कोई बारण नहीं था कि जपन माता पिता का वचन टूटने देती।

रही तुम्हारी बात। तुम्हारे साथ मुझे ‘प्यार’ नहीं था। कभी रहा ही नहीं। तुम्हारे साथ विवाह करने की आकांक्षा तो कभी मेरे मन में ही नहीं। सहानुभूति अवश्य हो गयी थी। जिस तरह तुम्हारा बुराव मरी ओर होता चला गया उससे मुझे प्रेरणा अवश्य मिली। उस प्रेरणा में अटूट विश्वास मिश्रित हो गया कि मैं या मेरे जैसी कोई लडकी ही तुम्हारा उद्धार सुधार कर सकती है। तुम्हें सदगुणों से अलक्षित कर सकती है। मैंने ऐसा कही पडा था—इसी से इस दुःख प्रयाग को कर गुजरने की प्रेरणा में मैं ओत-प्रोत हो गयी थी। मैंने यह सच किया जिसे त्रिप्रावित करने के लिए किसी स्त्री को सौ दफा सोचना पड सकता है। और अब तक भी इस प्रयोग की मफलता पर बार-बार पुलकित हो उठनी हूँ। कृपय का परित्याग कर तुम एक अच्छे नागरिक बन गये। बन। मरी यही तो मनाकामना थी। इसमें अधिक किमी उपलब्धि की तमना तुमका नेकर मैंने कभी नहीं की थी।

एक बार यह पत्र पडकर तुम मोच सकते हो कि मैंने तुम्हारे साथ दगा किया है। किंतु इस बात पर तुम्हें बहुत धय से विचार करने की



आवश्यकता होगी। जिस तरह तुम मुझे खुश और सुखी देखना चाहत थ ठीक यही मैं भी चाहती थी तुम्हारे लिए। जिम प्रकार मैं तुम्ह तुम्हारे वतमान म देखकर सतुष्ट हूँ—वैम ही मेर वतमान और मेरे स्वतंत्र चित्तन क प्रति तुम्ह याय दष्टि अपनान का अनुरोध करती हूँ। जीवन-साथी के स्तर पर जुड़ना कोई आवश्यक शत नहीं होती। रही तुम्ह ठेस लगन की बात जिस रूप म तुम मुझे देखते रह—यह स्वाभाविक ही है। लेकिन मुझे इमका कोई दुख नहीं। तुमन कई-कई लडकिया की कलकित कर उनके मन को दुपाया। उनका भविष्य उजाडा—उस मवके एवज म यह सजा कोई खास सजा नहीं। इमे तुम्ह सहृदयतापूर्वक महना चाहिए।

‘कुछ देर के मौन के बाद प्रशांत पुन बोला— ‘अब तो समय गुजरने के साथ मुह से अनायास यह शब्द भी निकलने लगत हैं—मणालिनी, तुम वास्तव म कितनी महान हो। तुमने बहुत बडा रिस्क लेकर बहुत ऊँचा काम कर दिखाया। तुम्हारा परीक्षण सफल रहा।’

प्रशांत न कहानी समाप्त की तो जैसे पूरा वातावरण खामोशी की अतन गहराइया में भर गया। स्वयं मैंन अपन आपको किसी बडे शूय म टंगा पाया। कितनी ही दर में एकत्रम से गुमनुम बनी रहो थी। लगा जम अब प्रशांत न अपना सारा मौन मुझे आग दिया है। मणालिनी मणालिनी। मैं वम कल्पना म एक चेहर को देखे जा रही थी, जो मणालिनी का था। एक विशिष्ट चेहरा।

हमने एक एक प्याला काफी और मँगाई और चुपचाप बैठे पीने रहे। अपने-अपने रास्ता की चयन म पूव हमने मुस्कराकर एक दूसरे का अभिवादन किया।

उम त्तिन के बाद प्रशांत धीरे धीरे मुझसे खुनने लगा। हम दाना हमशा खुशी मुस्कराहट में एक दूसरे का स्वागत करते और अपनी-अपनी ड्यूटी पर व्यस्त हो जात। प्रशांत को थोडा खुश देखकर मुझे सुख मिलता। प्रशांत का मही ट्रीटमेंट दन म मैं किसी सोमा तक सफल हूँ।

कोड तीन महीन गुजर गयो कि अचानक जल्दी की बजह स हम दोनों दरवाजे के नजदीक कारिलोन म टकरा गये।

“मारी,” कहकर मैं थोड़ा पीछे हट गयी।

प्रशांत मुस्कराया। मेरे कान में फुमफुमाता हुआ तेनी ने निकल गया—“आप तो मणालिनी की तरह नहीं करेंगी ना।”

‘ओह!’ उसके जाते ही मेरा मस्तिष्क चकरा गया ‘तो बात यहाँ तक आ पहुँची है। मैं तो ऐसा कुछ नहीं मोचा था।’

मैं अनमने ढग से अपनी ड्यूटी करती रही। रह रहकर प्रशांत का वही वाक्य, ‘आप तो मणालिनी की तरह नहीं करेंगी। मेरे चारा चार जैसे गूजता रहा। एक क्षण यह वाक्य मुझे मधुर झंकार करना सा सुनायी पड़ता तो दूसरे ही क्षण इसके एक-एक शब्द से नितरणा होन जाती। परंतु यह शब्द अस्पताल से घर और घर से अस्पताल तक मेरा पीछा नहीं छोड़ते। मैं लगातार प्रशांत से किनारा काटती रहती।

फिर एक दिन वह मेरे निकट आकर खड़ा हो गया और धीरे से बोला—“आप बुरा मान गयी। क्षमा कर दीजिए। इतना कहकर वह चला गया। स्वर बहुत बोलित था और निराशासूक्त।

उसी रात बहुत देर तक बैठकर मैंने प्रशांत को पत्र लिखा— बड़ी अजीब बात है मुझे भी मणालिनी ही की तरह आपसे महानुभूति थी। परंतु मैंने अब निश्चय कर लिया है कि मैं मणालिनी नहीं बनूंगी।

होनाकि आपसे मेल जोत बढ़ात वकत मरे अंदर ऐसी काई बात नहीं थी। चार वष पूर्व जब मैं विधवा हुई थी तब न अब तक इस तरह की चाह की कभी कल्पना भी नहीं की थी। यह भी कल्पना नहीं की थी कि इस जिंदगी को नये सिरे से जिया जा सकता है। अब भी मानस-पटल पर छाये सस्कार मेरे आडे आ रहे हैं। लेकिन प्रशांत! तुम्हारे सम्पर्क में पूर्ण रूप से आने के लिए इस सीमा को लाघना ही होगा।

यह बात मुझे खुद को भी नहीं जँच रही कि दूसरे को मैं जीने का नया ढग दिखाऊँ और खुद दूसरे ही ढग से जीऊँ।



